Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BHAGRATHI

1971-1972 G. K. V

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

maj Foundation Che

nain. Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113470

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

Book Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शहीद श्रद्धांजलि विशेषाङ्क

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

भागीरथी

१९७१-७२

३१ अगस्त १९४६ — १४ दिसम्बर १९७१

अमर शहीद ज्ञान प्रकाश बहुखण्डी

जियो तो इस तरह जियो कि जिन्दगी निखर उठे,
मरो तो इस तरह मरो कि मौत भी सँवर उठे।
'अज्ञात'

पन्ना लाल भल्ला इन्टर कालिज, हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धा-सुमन

यही वीर जीवित रहते हैं जो कुछ कष्ट उठाते हैं,
बलि प्रदान करने के कारण, बलिवेदी पर चढ़ जाते हैं,
प्राण त्यागते हँसते हँसते, मोह न मन में लाते हैं,
उपजाने को निर्भय नेता, बीज रूप गल जाते हैं,
उन वीरों की बलिवेदी पर, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।

—(श्री हरिशंकर शर्मा)

शहीद देवेन्द्र प्रसाद शर्मा
जन्म, ३ जोलाई ४१ — १० सितम्बर ६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113470
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113470

अन्तिम प्रणाम

हिंसा का वह गरल कि जिससे—
झुलस रही मानव की आत्मा,

तुम शिव बनकर उसे पी गये—तुम हे निस्पृह हे निष्काम !
रघुपति — राघव राजा राम — पतित — पावन सीताराम !

धीर—वीर गम्भीर व्रती—तुम,
परम पुरुष तुम महायती तुम,

काल मोह से मुक्त हो चुके, हे विश्वात्मा, हे अभिराम !
रघुपति—राघव राजा राम—पतित—पावन सीताराम !

तुम मानवता के सेनानी,
तुम हे ज्ञानी तुम हे ध्यानी !

तुम असीम में व्याप्त हो गये करने को अनन्त विश्राम !
रघुपति—राघव राजा राम—पतित—पतित—पावन सीताराम !

पतित राष्ट्र के अकलुष बापू
रंगे तुम्हारे उष्ण रक्त से

आज राष्ट्र के इन हाथों का तुमको अन्तिम बार प्रणाम !
रघुपति — राघव राजा राम — पतित — पावन सीताराम !

३१-१-४७ —श्री भगवती चरण वर्मा
('हिन्दुस्तान' से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीद श्री जगदीश शर्मा

एक भूला-बिसरा व्यक्तित्व

सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में राष्ट्र ने, महात्मा गांधी के नेतृत्व में, स्वतन्त्र होने के लिये एक करवट ली थी। विदेशी सरकार के दमन चक्र में असंख्य देशवासियों ने भयंकर यातनायें सहीं। कितने हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर भूल गये और मृत्यु की वेदी पर बलिदान हो गये, यह एक विस्मृत अध्याय है।

सहारनपुर जिले के खजूरी ग्राम निवासी श्री जगदीश शर्मा पालीवाल धर्मशाला में रहते हुये सन् १९४२ में ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालिज हरिद्वार के द्वितीय वर्ष के छात्र थे। विद्यार्थियों ने श्री गंगा जी के तट पर 'सुभाषघाट' स्थित खम्भे पर तिरंगा-ध्वज फहराने की योजना में १४ अगस्त ४२ को एक जलूस निकाला, जलूस में ऋषिकुल कालिज के भी काफी छात्र थे। रेलवे स्टेशन के निकट पुलिस ने जलूस को आगे बढ़ने से रोका। इस प्रयत्न में पुलिस को गोली चलानी पड़ी और पुलिस की गोली से श्री जगदीश शर्मा 'शहीद' हो गये।

'भागीरथी' की ओर से, तीस वर्ष बाद, आज उस विस्मृत शहीद के प्रति ससम्मान् श्रद्धांजलि अर्पित है।

'शहीद जगदीश शर्मा' के विषय में, प्रयत्न करने पर भी, लेखक को अधिक जानकारी प्राप्त न हो सकी। प्रयत्न कियें जायेंगे कि हरिद्वार में भी 'शहीद स्मारक' का निर्माण हो।

—सम्पादक

'जौहर' से साभार

(श्री लक्ष्मी नारायण पांडे)

फूंक दो उस राष्ट्र को जहां स्वाभिमान पर मिटने वाले पुरुष नहीं, आग लगा दो उस देश में जहां पातिव्रत की रक्षा के लिये धधकती आग में अपने को झोंक देने वाली स्त्रियाँ नहीं और पीस दो उस समाज को जो अपना अधिकार दूसरों को सौंप कर बँधे हुये कुत्ते की तरह याचक नेत्रों से उसकी ओर देखता है।………मानव कुत्ता, बिल्ली नहीं है कि डंडों की चोट खाकर भूल जाय, चूँ तक न करें—……………—मानव तूफान है जिसके उठने पर समग्र सृष्टि हिल उठती है।

—रानी पद्मिनी के उद्गार

……… शूर जीवन को तृणतुल्य समझता है। हथियारों के संघर्ष में, तलवारों की चकाचौंध में और लड़ते हुये वीरों के अव्यक्त कोलाहल में स्वाभिमान की रक्षा को रौंदते हुये सपूत चलते हैं, कपूत नहीं। अपने पैरों की धमक से पृथ्वी को कंपाते हुये भाले, बरछीं की तीव्र नोकों से सीने अड़ा कर रण यात्रा, पुरुष करते हैं, कापुरुष नहीं————।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के लम्बे कालांश में, भारत–चीन युद्ध, सन् १९६५ तथा १९७१ के पाक–भारत सैनिक-संघर्ष तथा सीमा-सुरक्षा-कार्य में उन सभी ज्ञात तथा अज्ञात हुतात्माओं के प्रति

सुमनाँजलियाँ – श्रद्धाँजलियाँ

जिन्होंने भारतमाता के श्री चरणों में निज प्राण–सुमन अर्पित कर दिये

शहीद महाराजा नन्दकुमार
,, राजा कुँवरसिंह
,, महारानी लक्ष्मीबाई
,, तांत्या टोपे
,, खुदीराम बोस
,, कन्हाई लाल दत्त
,, मदनलाल ढींगरा
,, मास्टर अमीरचन्द
,, सूफी अम्बाप्रसाद
,, भाई बालमुकुन्द
,, सत्येन्द्र कुमार बोस

शहीद करतारसिंह
,, यतीन्द्रनाथ मुकर्जी
,, विष्णु गणेश पिंगले
,, सोहनलाल पाठक
,, कुँवर प्रतापसिंह
,, भाई भागसिंह
,, भाई वतनसिंह
,, बलवन्तसिंह
,, हरिनाम सिंह
,, वीर बन्तासिंह
,, डाक्टर मथुरासिंह

शहीद बन्तासिंह धामिया
,, तरुण दलीपसिंह
,, नलिनी बागची
,, गोपी मोहन साहा
,, गेंदालाल दीक्षित
,, रामप्रसाद बिस्मिल
,, अशफाक उल्ला खाँ
,, वीर रोशनसिंह
,, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी
,, सरदार भगतसिंह
,, चन्द्रशेखर आजाद

× × × ×

संकलन कर्त्ता—निशान सिंह, कक्षा १२३,

मिट गया तुम्हारा स्वरूप,
कुछ भी न रहा तव चिन्ह शेष,
तुम तो इतने निस्पृह निकले,
छोड़ा न रंच भी नाम लेश ?
अपना सब कुछ तुम होम चले,
यश, कीर्ति, नाम, सब हुये लुप्त,
पर, चमके तुम जग नयनों में—
जागृति–धुनि-कण बन, अरे गुप्त,
देखो कृतज्ञ इतिहास आज,
लाया है संस्मरण–फूल,
कर रहा समुद्र वह संशोधित,
अपने विवरण की क्षणिक भूल,
मानवता का या प्रगति चक्र
तुम बिन कब घूमा एक याम ?
मेरे साथी, अज्ञात नाम,
तुमको मेरे शत शत प्रणाम।

थे तुम्हीं न जिसने जीवन में,
कंटकित मार्ग का क्लेश चुना ?
थे तुम्हीं बढ़े लेने उत्सुक,
इस महानिष्क्रमण का प्रसाद,
तुमको न चलित कर सका कभी,
विद्वानों का व्यवहार वाद,
पथकी कंटक–कीर्णता अमित,
बोलो, तुमको कब डरा सकी ?
बीहड़ अनन्तता निज मग की,
बोलो, तुमको कब हरा सकी ?
थक कर, उकता कर, कातर हो ?
तुम कब चिल्लाये अरे राम ?
तुम तो बढ़ते ही गये वीर,
तुमको मेरे साथी प्रणाम,
तुमको मेरे शत शत प्रणाम,

—(श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की रचना 'मेरे साथी, अज्ञात नाम' से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती इंदिरा गांधी

अनुपम सूझ-बूझ, शौर्य और साहस की प्रतीक—

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी

(संकलन—अतर सिंह, कक्षा ११ बी$_2$)

"बाँगला देश में महान् उथल-पथल होने के छः दिन बाद ३१ मार्च को......अपना वक्तव्य समाप्त करते हुये मैंने इस सदन का यह गहरा विश्वास व्यक्त किया था कि पूर्व बँगाल की साढ़े सात करोड़ जनता का यह ज्वार विजय होकर रहेगा। हमने यह आश्वासन भी दिया था कि उनके संघर्ष और बलिदान को भारतवासियों की पूर्ण सहानुभूति और सहायता मिलेगी। उस दिन इस सदन में और इस देश में हमने जो सामूहिक वचन उन्हें दिया था, वह आज पूर्ण हो गया है। स्वभाविक है कि भारत के लोग बेहद खुश हों......मैं उस खुशी और आनन्द में शरीक हूँ। मगर जैसा कि गीता ने कहा है, हर्ष और शोक से हमारी समचिन्तता नहीं बिगड़नी चाहिये, हमारा भविष्य-दर्शन धुंधला नहीं पड़ना चाहिये। यह विजय केवल सेना की विजय नहीं है. यह विचारों की विजय है। भारत व्यापक दृष्टि का, सबके विचारों के प्रति सहिष्णुता का हिमायती है। हम प्रजातन्त्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के हिमायती हैं। केवल इनका समन्वय ही पूर्ण स्वातंत्र्य की राह खोलता है, कमजोर वर्गों को सरक्षण और विविध व्यक्तियों में विकास का अवसर देता है। हम अपने आदर्शों की पुनः दीक्षा लेते हैं और मैं आशा करती हूँ कि पाकिस्तान की जनता ऐसी राह चुनेगी, जो उसकी परिस्थितियों और आवश्यकता के अनुरूप है।"

—इन्दिरा गांधी (१७ दिसम्बर को लोक सभा में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनको विजय श्री ने वरा—

श्री जगजीवन राम

(कु० देवकी रानी कक्षा ११ बी,)

श्री जगजीवन राम के नाम के साथ सफलता का घनिष्ट सम्बन्ध है। जीवन में जो कुछ किया विजय श्री ने जयमाला डाल दी। कर्मयोगी जैसा कुछ जीवन इनका रहा है। जब से बाबूजी राजनीति के क्षेत्र में आये प्रत्येक कार्य और संघर्ष में आगे उभर कर आये हैं।

५ अप्रैल सन् १९०८ में इनका जन्म आरा (बिहार) में हुआ। बनारस और कलकत्ता में शिक्षा प्राप्त की। आरम्भ से ही इनका ध्येय हरिजनों की दशा में सुधार लाना रहा। बिहार हरिजन सेवक संघ के सचिव के रूप में कार्य किया। १९३७ में ये बिहार एसेम्बली के लिये निर्वाचित हुये और संसदीय सचिव के रूप में कार्य किया। १९३९ में बिहार प्रदेश कांग्रेस के सचिव बनाये गये। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में जेल गये। सन् १९४६ में ये बिहार एसेम्बली के लिये फिर चुने गये और उसी वर्ष श्री जवाहर लाल नेहरू के मन्त्री मण्डल में श्रममन्त्री के रूप में कार्य किया।

सन् १९५२ के आम चुनाव के उपरान्त इन्हें सन्चार मन्त्री बनाया गया। इनके कार्य-काल में विमान, परिवहन सेवा का राष्ट्रीयकरण हुआ। दिसम्बर १९६३ में जब श्री लालबहादुर शास्त्री ने रेलवे तथा परिवहन मन्त्री पद से त्याग पत्र दे दिया था, तो समस्त दायित्व श्री जगजीवन राम के ऊपर पड़ा।

श्री कामराज योजना के अन्तर्गत कुछ दिन तक सक्रिय राजनीति से अलग रहने के उपरान्त श्रममन्त्री बने। रक्षा मन्त्री बनने के पूर्व बाबू जी खाद्य तथा कृषि मन्त्री रहे। कांग्रेस विभाजन के पश्चात्, निर्जीव कांग्रेस में प्राण प्रतिष्ठा करने के लिये सन् १९६९ में इन्हें कांग्रेस अध्यक्ष बनाया गया।

रक्षामन्त्री के रूप में, पाक-भारत युद्ध में अपूर्व सफलता प्राप्त करने पर इन पर राष्ट्र सदा ही अभिमान करता रहेगा। आत्म विश्वास तो इनमें जैसे कूट-कूट कर भरा है। पाक-भारत युद्ध के पूर्व इन्होंने एक सभा में कहा था, "यदि युद्ध हुआ तो लड़ाई पाकिस्तानी सीमा के उस पार होगी।" इस वाक्य से देश में खलबली मच गई थी। जो वे कहते हैं, उसे पूरा करके दिखा देते हैं। ये अपने अधिकारियों और कर्मचारियों पर सदा विश्वास करते हैं, उन्हें अपना कार्य करने की स्वतन्त्रता देते हैं।

अनेक गुणों से सम्पन्न रक्षामन्त्री जी के अधिकाधिक उज्जवल एवम् उन्नतर भविष्य की कामना करते हुये, प्रभु से इनके दीर्घ जीवन की प्रार्थना करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे राष्ट्रीय-गान

प्रस्तुत कर्त्ता—हरीश चन्द्र भागवानी, कक्षा १० सी.

(बंकिम चन्द्र चटर्जी)

वन्दे मातरम् ।
सुजलाम्, सुफलाम् मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलाम्, मातरम् । वन्दे मातरम् ।
शुभ्रज्योत्सनाम्, पुलकित यामनीम् ।
फुल्ल कुसुमित, द्रुमदल शोभिनीम् ।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषणीम् ।
सुखदाम्, वरदाम्, मातरम् । वन्दे मातरम् ।

(गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर)

जनगणमन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता ।
पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल बंग,
विन्ध्य, हिमालय, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तंरग,
तव शुभनामे जागे, तब आशिष माँगे, गाहे तव जय गाथा,
जन-गण-मंगल दायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे० ।

मुक्त बाँगला देश का राष्ट्रीय-गान

(गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर)

प्रधान मन्त्री-शेख मुजीब

आमार सोनार बांगला, आमे तोमाय भालोवासि
चिर दिन तोमार आकाश, तोमार वातास
आमार प्राण बाजाय वांशी
ओ मा फागुने तोर आमेर बने घ्राणे पागल करे,
मोरी हाय हाय रे··········
ओमा अघ्राणे तोर भरा खेते की देखे मधूर हांसी,
की शोभा की छाया गो की स्नेह की माया गो,
की आँचल विछयेछ बटेर मुलें नदीर कुले, कुले,
माँ तोर मुखेर बानी आमार काणे लागे सुधार मोतो,
मोरी हाय, हाय रे·······
मां तोर बदन खानि मौलिन होले आमि नयन जले भासि ।

(बांगला देश मिशन, न. दिल्ली, श्री अब्दुल रशीद चौधरी के सौजन्य से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि बंकिम चन्द्र चटर्जी

('वन्दे मातरम्' के अमर रचनाकार)

कु० मीना चतुर्वेदी १० सी

जन्म तिथि, २७ जून. सन् १८३८ । जन्म स्थान, गतीगोविन्द के अमर गायक 'जयदेव' तथा महाकवि चंडीदास के जन्म स्थान के निकट, काँटलपाड़ा (जिला, चौबीस परगना)

प्रारम्भिक शिक्षा, मेदिनीपुर । प्रखर-बुद्धि । गुरुजन, चमत्कृत । सन् १८४४ में मेदिनीपुर के अंग्रेजी स्कूल में प्रविष्ट । ताश खेलने का शौक । सन् १८४६ में प्रथम विवाह । स्वंय ११ वर्ष के और पत्नी ५ वर्ष की । १६ वर्ष की आयु में प्रथम पत्नी का स्वर्गवास । सम्बन्धियों के आग्रह पर, प्रथम पत्नी की सहोदरा से विवाह । प्रेसीडेन्सी कालिज तथा हुगली कालिज से शिक्षा प्राप्त । परीक्षाफल, सर्वोच्च । स्मरणशक्ति, प्रखर । प्रकृति प्रेमी ।

१५,१६ वर्ष की आयु में 'ललिता' और 'कपाल कुंडला' पुस्तकें लिखीं । सन् १८५७ में पिता का स्वर्गवास । सन् १८५८ में बी० ए० । २३ अगस्त ५० को डिप्टी मैजिस्ट्रेट बने । सन् १८६६ में 'दुर्गेश नन्दिनी,' १८६६ में मृणालिनी' लिखी । सन् १८७० में राजशाही डिवीजन के कमिश्नर के पर्सनल असिसटेन्ट का पद प्राप्त । सन् १८७२ में 'बंग दर्शन' पत्र निकाला । सन् १८८३ में 'विषवृक्ष' 'कृष्णकान्त का विल' पुस्तकें प्रकाशित । इसी वर्ष हृदय में धर्म-भावना उत्पन्न । सन् १८९१ में सेवा मुक्त । वृद्धावस्था में बहुमूत्र रोग । सन् १८९६ में, केवल ५५ वर्ष की अवस्था में विराट से मिलन । इनकी भव्य शवयात्रा से ही सर्वप्रथम बंगाल में जातीय उन्मेष उत्पन्न हुआ ।

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर

(जनगण-मन-अधिनायक तथा 'सोनार बांगला' के अमर रचनाकार)

जन्म, ६ मई, सन् १८६१ । पूज्य पिता, महामना देवेन्द्र नाथ ठाकुर । कवीन्द्र रवीन्द्र बचपन से ही स्वतंत्र विचारों के । बचपन से ही मौलिकता । शिक्षा, इंगलैन्ड के ब्राइटन स्कूल, लन्दन के यूनिवर्सिटी कालिज में । अत्यन्त प्रतिभाशाली, किन्तु देश ने इनका मूल्यांकन तभी किया जब कि इन्हें 'गीतांजलि' पर एक लाख रुपये का 'नोबेल-पुरस्कार' दिया गया । सन् १९०२ से १९०७ तक विपत्तियों के पहाड़ टूटे जीवन संगिनी-श्रीमती मृणालिनी, पिता श्री देवेन्द्र नाथ ठाकुर तथा ज्येष्ट पुत्र को कराल-काल लील गया । कठिनाइयों और वेदनाओं से अधिकाधिक निखरे । चित्रा, चित्रांगदा, बलिदान, नौका डूबी, गीतांजलि, गोरा आदि ग्रन्थ लिखे ।

वे केवल एक कवि ही नहीं थे, वे एक कुशल क्रान्तिकारी विचारक, एक मधुर गायक, भावुक नर्तक और चित्रकार, समाज-सुधारक एवम् सच्चे मानवता-वादी महापुरुष थे । महात्मागांधी ने उन्हें 'गुरुदेव' के नाम से सम्बोधित किया था । वे राजनैतिक जाग्रति के भी प्रतीक थे । विश्व बन्धुत्व के लिये श्री ठाकुर जीवन पर्यन्त कार्य करते रहे । बोलपुर में कवीन्द्र रवीन्द्र द्वारा स्थापित विश्व विख्यात 'शांतिनिकेतन' है, जहाँ भारतीय आदर्शों के अनुसार शिक्षा दी जाती है। सन् १९१२ में श्री रवीन्द्र इंगलैंड गये । सन् १९१३ में अमरीका गये । ब्रिटिश सरकार ने इन्हें 'सर' की उपाधि से अलंकृत किया । सन् १९२० से १९३० के बीच इन्हें अनेक बार विदेशों में आमंत्रित किया गया । 'महात्मा' नाम से सर्वप्रथम इन्होंने ही गांधीजी को सम्बोधित किया था । समस्त संसार में प्रतिभा का प्रकाश बखेर कर सन् १९४१ में सदा के लिये अनन्त में अन्तर्धान हो गये । बांगला देश की क्रान्ति और मुक्ति के पीछे महर्षि बंकिम चन्द्र चटर्जी और गुरुदेव की सांस्कृतिक देन का आधार रहा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभार प्रदर्शन

अध्यक्ष महोदय— (प्रबन्धक, पी० बी० म्यु० इन्टर कालिज, हरिद्वार)

प्रधाना चार्य, पी० बी० म्यु इन्टर कालिज का समस्त अध्यापक परिवार,

छात्र-छात्रायें, अभिभावकगण तथा प्रबुद्ध नागरिक

बम्बई के दानवीर

सेठ श्री मेघराज लाल चन्द जौंकानी

के प्रति आभार के हार्दिक उद्‌गार प्रकट करते हुये उनके यशस्वी तथा दीर्घ जीवन की प्रभु से प्रार्थना करते हैं

जो

शिक्षा प्रेम के अन्तर्गत सदय होकर इसी कालिज के प्राँगण में

विशाल शिक्षालय तथा साइकिल स्टैन्ड का निर्माण करा रहे हैं।

प्रधानाचार्य
सोहन लाल गुप्ता

नगर पालिका अध्यक्ष
पारस कुमार जैन

अधिशासी अधिकारी
ऋषि कुमार गुप्ता

'भागीरथी' में प्रकाशनार्थ सेठ जी के फोटो को प्राप्त करने के लिये अनेक प्रयत्न किये गये। 'आत्म-प्रचार' के लिये यह सब कुछ नहीं किया जा रहा है—सेठ जी का सदा यही विनम्र उत्तर होता। सेठ जी के इस उदात्त व्यक्तित्व के प्रति 'नत-मस्तक' होने के अतिरिक्त हमारे पास और क्या है ?

— सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीद श्रद्धाँजलि विशेषाङ्क

भागीरथी

१९७१—७२

संरक्षक :

श्री सोहनलाल गुप्ता (एम०एस०सी०, एम०ए०, एल०एल०बी०, एल०टी० (प्रधानाचार्य)

प्रधान सम्पादक :

भूराज सिंह 'शून्य' बी०ए०, संगीत विशारद

भू० पूर्व सम्पादक— 'नाद' भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय, लखनऊ
" " " —'गाँधी ग्राम पत्रिका' गा० ग्रा० प्र०, लखनऊ

सहायक-सम्पादक :

हेम चन्द्र उप्रेती, एम०ए०, बी०टी० साहित्यरत्न,
राजा राम शर्मा, ए० ए०, आचार्य, साहित्यरत्न,

परामर्शदाता :

श्री दामोदर पन्त एम० ए०, एल०टी०
श्री रवि प्रकाश कुलं, एम०ए०, एल ०टी०
श्री बाल कृष्ण गुप्ता, एम०ए०, एल०टी०

छात्र-सम्पादक :

त्रिभुवन कुमार गर्ग,	कक्षा १२ बी,
राजीव कुमार	कक्षा ११ बी,
अनिल शर्मा	कक्षा ११ ए,

पन्ना लाल भल्ला म्युनिसिपल इन्टर कालिज, हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगलाशीष तथा शुभ सन्देश

राष्ट्रपति सचिवालय

राष्ट्रपति भवन, न० दिल्ली—४ २१ जनवरी, ७२

प्रिय महोदय,

राष्ट्रपति जी के नाम भेजे दिनांक १४ जनवरी, १९७२ के आपके पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'भागीरथी' के 'शहीद श्रद्धांजलि अंक' के प्रकाशन का आयोजन किया जा रहा है। शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

खेमराज गुप्ता

(राष्ट्रपति के अपर निजी सचिव)

भारत के उपराष्ट्रपति के सचिव

नई-दिल्ली

१०-२-१९७२

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनांक १ फरवरी १९७२ का उपराष्ट्रपति जी के नाम प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

उप-राष्ट्रपति जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप 'भागीरथी' पत्रिका का 'शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक' निकट भविष्य में प्रकाशित करने जा रहे हैं। उपराष्ट्रपति जी आपके इस अंक की सफलता के लिये अपनी हार्दिक शुभकामनायें भेजते हैं।

आपका

(वि० फड़के)

प्रधान मंत्री सचिवालय

न० दिल्ली

१२-२-१९७२

प्रिय महोदय,

आपका १४ जनवरी ७२ का लिखा पत्र प्राप्त हुआ। आपके कालिज की पत्रिका 'भागीरथी' के 'शहीद श्रद्धांजलि अंक' प्रकाशित करने की योजना पर प्रसन्नता हुई। इस पुनीत कार्य की सफलता के लिये मैं शुभकामनायें भेजती हूँ।

इंदिरा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५५७/डी०एम/७२

रक्षा मन्त्री, भारत

दिनांक : ३१ मार्च, १९७२

महोदय,

पी०बी० म्युनिसिपल इन्टर कालिज, हरिद्वार की पत्रिका 'भागीरथी' का 'शहीद श्रद्धांजलि' विशेषांक प्रकाशित होने जा रहा है, यह ज्ञात हुआ।

भारत विजय और परिणाम स्वरूप बँगला देश का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदय एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। इस युद्ध में भारतीय सेना के वीर-गति प्राप्त जवानों के कारनामों ने देश का मस्तक ऊँचा किया है। आशा है, विशेषाँक में तत्सम्बन्धी प्रेरक सामग्री प्रकाशित होगी। 'विशेषाँक' उपयोगी सिद्ध हो।

जगजीवन राम

वायु सेना मुख्यालय,

प्रेषक : एयर चीफ मार्शल पी०सी० लाल

नई-दिल्ली ११

डी०एफ०सी०

१५-२-७२

प्रिय महोदय,

पाकिस्तान के साथ हमारे हाल के युद्ध के फलस्वरूप बाँगला देश नाम के नए राष्ट्र का उदय हुआ है। थल सेना, नौ सेना और वायु सेना ने एक होकर और कन्धे से कन्धा मिला कर इसे सम्भव बनाया है। इस अवधि में, राष्ट्र की निष्ठा और देश के सभी भागों से प्राप्त समर्थन से हमारी सशस्त्र सेनाओं को बड़ा बल मिला है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस एतिहासिक अवसर की स्मृति में पन्नालाल भल्ला इन्टर कालिज, हरिद्वार अपनी पत्रिका 'भागीरथी' का 'शहीद श्रद्धाँजजि अंक' प्रकाशित करने जा रहा है। मैं इसकी सफलता के लिये अपनी शुभ कामनायें भेजता हूँ।

पी० सी० लाल

एयर चीफ मार्शल

कमान्डर आर०एस० शर्मा

नौ सेना मुख्यालय

सचिव

नई-दिल्ली

चीफ आफ दी नेवल स्टाफ

१५-२-७२

प्रिय श्री शून्य जी,

युद्ध में हमारी विजय तथा बांगला देश की मुक्ति के अवसर पर आपने शुभ कामनाओं तथा शुभाकाँक्षाओं का जो प्रेरक सन्देश भेजा है, इस विषय में मुझे नौसेना अध्यक्ष, एडमिरल श्री एस०एम नन्दा जी ने आपके प्रति आभार प्रकट करने का आदेश दिया है। वर्तमान सघर्ष में नौ सेना द्वारा प्राप्त उपलब्धियों के विषय में आपने जो हार्दिक मधुर भावनायें प्रकट की हैं, उनकी भी वे प्रशसा करते हैं।

युद्ध में शहीद हुये वीर जवानों की स्मृति में 'भागीरथी' का जो आप शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक निकालने जा रहे हैं, इसकी सफलता के लिये एडमिरल नन्दा जी अपनी शुभ कामनायें भेजते हैं।

भवदीय,

(अंग्रेजी से अनुवाद)

आर०एस० शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थल सेना मुख्यालय

नई-दिल्ली
१७-२-७२

प्रिय महोदय,

सत्य और न्याय के हित में लड़े गये इस युद्ध में, हमारे वीर जवानों ने प्राणों का मोह त्याग कर, जिस शौर्यपूर्ण बलिदान का प्रदर्शन किया, वह इतिहास में अमर रहेगा। इस विजय को प्राप्त करने का श्रेय थल, जल तथा वायु सेना के अपूर्व रण कौशल तथा पारस्परिक सहयोग को है।

मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देने वाले अमर शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये 'भागीरथी' का जो विशेषांक आप प्रकाशित करने जा रहे हैं, उसके लिये बधाई तथा शुभकामनायें। जयहिन्द।

जनरल मानेकशा

बाँगला गण राज्य मिशन

नई-दिल्ली
११-२-७२

मान्यवर

आपके पत्र दिनांक २-२-७२ के लिये धन्यवाद। आप अपनी कालिज पत्रिका 'भागीरथी' का विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं, जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

पिछले नौ महीनों से पाकिस्तानी सेना ने बांगला देश में जो भयंकर अत्याचार किया है, विश्व के इतिहास में यह घटना अद्वितीय है। इस अत्याचार के बावजूद भी बाँगला देश में आजादी की नई किरण फैल गई, अन्याय के ऊपर न्याय-धर्म ने विजय प्राप्त कर ली। आप इस संघर्ष के सही रूप को चित्रण करने के साथ युद्ध में शहीद हुये वीर जवानों की स्मृति में विशेषांक निकालना चाहते हैं, इसके लिये आप बधाई के पात्र हैं। इसकी सफलता के लिये मैं शुभकामनायें भेजता हूँ।

जय बंगला, जय हिन्द।

भवदीय

हुमायूँ रशीद चौधरी

ॐ

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय

जिला सहारनपुर, उ०प्र०
२६-२-७२

श्रीयुत शून्यजी,

सप्रेम नमस्ते।

आप 'भागीरथी' का 'शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक निकाल रहे हैं, यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। राष्ट्र की रक्षा के लिये प्राण देने वाले वीर जवानों का जितना भी यशोगान किया जाय, थोड़ा है। हमारे वीरों ने भारत-पाक संघर्ष में जिस शौर्य एवं राष्ट्र भक्ति का प्रमाण दिया है, वह मानव जाति के इतिहास में सदा अमर रहेगा। उन्होंने जहाँ उत्पीड़ित जनता का उद्धार किया है, साथ ही भारत की शक्तिशाली एवं सम्मानित राष्ट्रों की पंक्ति में अग्रिम स्थान दिया है। इस युद्ध की विविध उपलब्धियाँ सचमुच विलक्षण है।

भवदीय

रघुवीर सिंह शास्त्री,
उप कुलपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उदयाचल' राजेन्द्र नगर
पटना—१६
१३—३—७२

प्रिय 'शून्य' जी,

पत्र के लिये धन्यवाद। 'भागीरथी' का 'शहीद श्रद्धांजलि ग्रंक' प्रकाशित कर रहे हैं, जानकर प्रसन्नता हुई। कलम आज, उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखायें,
उगल रहीं, लू-लपट दिशायें,
जिनके सिंहनाद से सहमी—
धरती रही अभी तक डोल।
कलम आज उनकी जय बोल।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

आलोक भारती

(राष्ट्रीय व्यक्तित्व का शिल्पी साप्ताहिक)

फोन : ७२६७०
के—१५ ग्रीन पार्क
नई-दिल्ली—१६

प्रिय 'शून्य' जी नमस्कार। विलम्ब के लिये क्षमा करें। २०-३-७२

'भागीरथी' के 'शहीद श्रद्धांजलि-ग्रंक' के लिये मेरी शुभ-कामनायें स्वीकार करें।

देश की सुलझी समस्या,

यह शहीदों की तपस्या। अपनी पंक्तियाँ स्मरण आ रहीं हैं इस समय। उनके प्रति चार पंक्तियाँ और भी लें—

मरे हैं वे नहीं जो मर गये हैं देश के रण में,
विजय का ताज पहना है, जिन्होंने मृत्यु के क्षण में,
अमर वे हो गये इतने, जियेंगे रात दिन मन में,
कि लेंगे जन्म लाखों वीर उनकी याद में, प्रण में।

सोहन लाल द्विवेदी

नव भारत टाइम्स,

७, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई-दिल्ली—१

प्रिय 'शून्य' जी, २१-३-७२

आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पी० बी० म्यु० कालिज की पत्रिका का 'शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक' प्रकाशित होने जा रहा है। जो राष्ट्र समाज अपने शहीदों को याद करता है, उनकी स्मृति में सभाओं का आयोजन करता है या पत्र, पत्रिकाओं द्वारा उनके कीर्तिगान कर कृतज्ञता प्रकट करता है, वह राष्ट्र कभी पराभव का शिकार नहीं हो सकता।

यह प्रसन्नता का विषय है कि पत्रिका में स्थानीय सेनानी शहीदों का विशेष उल्लेख होगा, इससे भावी पीढ़ी बहुत कुछ सीख सकेगी।

पत्रिका सज-धज से निकले और अपने उद्देश्य में सफल हो, इसकी कामना करता हूँ।

अक्षय कुमार जैन
सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरंजीत,
चीफ प्रोड्यूसर (नाटक)
कार्यालय डाइरेक्टर जनरल

आल इंडिया रेडियो

ब्राडकास्टिंग हाऊस
पार्लमेन्ट स्ट्रीट
नई-दिल्ली-१

स० २७/१६/७१-पी ६-राज

दिनांक—१४-३-१९७२

प्रियवर शून्य जी,

आपका पत्र, क्रमांक भा०श० अंक-७५/७२, दिनांक ५-३-१९७२, मुझे कल सायंकल मिला। इससे पहिले मुझे आपका कोई पत्र नहीं मिला था। पद्‌मश्री अलंकरण के लिये आपने मुझे जो भावभीनी बधाई-सन्देश भेजा है, उसके लिये मैं हृदय से आभारी हूँ। मेरे इस राष्ट्रीय सम्मान में मेरे सभी साहित्यकार-मित्र भागीदार हैं।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'भागीरथी' का शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। गत भारत पाकिस्तान युद्ध में जिन सैनिक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति देकर सन्सार में भारत माँ का मस्तक ऊँचा किया है, वे सर्वथा वन्दनीय हैं, पूज्यनीय है। वे तो अमर हैं ही, उनके कारण भारत की गौरव-गरिमा भी अमर हो गई है। उन शहीदों ने अपने खून से भारत का ऐसा नया इतिहास लिखा है जिस पर हर भारतवासी गौरव कर सकता है, संसार में सिर ऊँचा करके खड़ा हो सकता है।

श्रद्धांजलि के रूप में मैं अपने उन अमर जवानों की पुण्य स्मृति में निम्नलिखित पंक्तियां अर्पित करता हूँ:—

भारत माता के चेहरे पर सत्य-विजय-उल्लास,
लिखा जवानों ने भारत का, आज नया इतिहास।

आपका—
चिरंजीत

पारस कुमार जैन,
अध्यक्ष

नगर पालिका समिति, हरिद्वार
दिनांक : २०-३-७२

प्रिय 'शून्य' जी,

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पी० बी० म्यु० इन्टर कालिज पत्रिका 'भागीरथी' का आप 'शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक' निकाल रहे हैं। यह समयानुकूल बात रही। पाक-भारत के संघर्ष में हमारी विजय का मुख्य आधार हमारी तीनों सेनाओं के वीर जवानों में देश पर मर मिटने की प्रबल आकांक्षा है। देश की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर करने वाले वीर 'शहीदों' के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने तथा उनकी स्मृति को ताजा बनाये रखने के लिये जो कुछ भी किया जाये, वह कम ही है।

'शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक' का महत्व और भी इसलिये है कि देश पर मर मिटने वाले दोनों शहीद, श्री देवेन्द्र शर्मा तथा ज्ञान प्रकाश बहुखंडी छटी कक्षा से १२ वीं कक्षा तक इसी कालिज के छात्र रहे हैं।

'शहीदों' को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये आपके कार्य की सफलता की कामना करता हुआ आपको बधाई देता हूँ। शहीदों की स्मृति को जाग्रत रखने तथा शहीदों के परिवारों के हित में हम सभी को प्रयत्न करने हैं।

पारस कुमार जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेन्द्र चन्द्र रस्तौगी,

रेजीडेन्ट मैजिस्ट्रेट
हरिद्वार, दिनांक: २८-३-७२

प्रिय 'शून्य' जी,

मुझे जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष आपकी कालिज पत्रिका 'भागीरथी' का वार्षिक अंक 'शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक' के रूप में विद्यार्थियों के प्रयास से प्रकाशित हो रहा है।

देश की आजादी को अक्षुण्ण रखने के लिये हरिद्वार के जिन दो वीर सेनानियों ने अपने जीवन की आहुति दी, वे आपके कालिज के ही छात्र रह चुके हैं, इससे इस विशेषाक की महत्ता और भी अधिक बढ़ जाती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शहीद देवेन्द्र प्रसाद शर्मा एवम् स्वर्गीय ले० ज्ञान प्रकाश बहुखण्डी का बलिदान कालिज के विद्यार्थियों को आगे वाले संघर्षों के लिये प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करेगा और आगे आने वाली पीढ़ियाँ, देश की एकता, अखण्डता एवम् सम्मान की रक्षा के लिये हमारे शहीद जवानों से प्रेरणा लेगी।

यह कहना भी युक्ति सगत होगा कि हमें इन वीर जवानों के परिवार एवम् आश्रितों के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करना भी नहीं भूलना चाहिये। आप सब का प्रयास प्रशसनीय है और मुझे विश्वास है कि यह 'विशेषांक' विद्यार्थियों का उचित दिशा में मार्ग-दर्शन करेगा।

सुरेन्द्र चन्द्र रस्तौगी

सन्देश

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि पी०बी०म्यु० इन्टर कालिज हरिद्वार इस वर्ष अपने विद्यालय की पत्रिका 'भागीरथी' का शहीद श्रद्धांजली विशेषांक का प्रकाशन कर रहा है। मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि इस अंक से छात्रों में देशभक्ति, देशसेवा एवं राष्ट्रीयता की भावना जागृत होगी और इससे छात्रों का बौद्धिक व नैतिक विकास भी होगा। सम्पादक मंडल का इस प्रकार का प्रयास प्रशंसनीय है।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

मेष संक्रान्ति २०२९
१३ अप्रैल, १९७२।

सुरेन्द्र सिंह चौहान
जिला विद्यालय निरीक्षक
सहारनपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का दृष्टिकोण—

शिक्षण संस्थायें तथा शिक्षा पद्धति

किसी भी व्यक्ति की भांति किसी भी देश का अपना विशिष्ट स्वरूप, स्वभाव और कर्तव्य आधार होते हैं, कोई गन्तव्य दिशा होती है। भारत का स्वरूप आध्यात्मिक रहा है। जीवन सम्बन्धी जिस अनुभूत पद्धति का आविष्कार यहाँ हुआ, वह अनुपम है। संस्कृति रूपी नवनीत को हमारे देश ने भौगोलिक, सामाजिक और राजनैतिक, जीवन के सभी अंगों के दीर्घकालिक, और अनवरत चिन्तन-मन्थन से उपलब्ध किया है।

जीवन के चिन्तन, विचार, कर्म और व्यवहार की पुष्ट अभिव्यक्ति ही 'संस्कृति' है। आध्यात्मिक, मानसिक तथा वैचारिक परिमार्जन-'संस्कृति'। भौतिक तथा शरीर-सम्बन्धी नियमों तथा सुख-सुविधाओं की उन्नति-सभ्यता है। संस्कृति की वाहिनी सुशिक्षा है। सुशिक्षा की आधार शिक्षण-संस्थायें तथा शिक्षण पद्धति है, शिक्षक तथा विद्यार्थी हैं। समाज रूपी एंजिन को गतिमय करने के लिये शिक्षा रूपी वाष्प है और संचालित कर वांछित दिशा में इसे ले जाने वाला शिक्षक रूपी ड्राइवर है। प्राचीन गुरुजनों को वांछित दिशा में समाज को गतिवान् बनाने की क्षमता थी। वे न केवल विद्यार्थी समाज के वरन् समूचे समाज के गुरु होते थे।

ऐतिहासिक कारणों और कालचक्र के प्रभाव से अध्यापक की पुष्ट क्षमता छिन गई, कहलें कि दिशा-निर्देशक कर्तव्य च्युत हो गया, कहलें-घोड़ा सवार हो गया और सवार घोड़ा। काल यात्रा में, इसी से देश दुर्बल हुआ, विदेशियों से लम्बे काल तक, पदाक्रान्त हुआ और वर्तमान समय में दशा यह हुई कि सरकार, समाज और विद्यार्थी वर्ग की कृपा-कोर का निरीह, दयनीय और मूक प्राणी बन गया अध्यापक। समाज तो क्या, उसके अपने विद्यार्थी ही उसके नियंत्रण से निकल गये। बढ़ती हुई मँहगाई के युग में दस दस रूपयों के लिये वह प्रशासन के अधिकारियों के आगे मिमियाता है, मजदूरों की तरह सड़कों पर चालू नारे लगाता है और परीक्षा की बलिवेदी पर अपने ही छात्र के तेज चाकू से अथवा पिस्तौल से आहत होकर श्मशान् की यात्रा कर जाता है।

आह, अरे ! बेचारे शिक्षक तेरी यही कहानी,
तेरे शिष्यों से नष्ट हुई है तेरी दुखद जवानी।

किन्तु दूसरों को दोषी सिद्ध करने से रोग का निदान नहीं होगा, नहीं होगा।

शिक्षा तथा परीक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन

दिन, रात यह घृणित नाटक हो रहा है। इसकी लपेट में समूचा समाज और प्रशासन आ चुका है। शिक्षा जगत का लगभग सब समय, श्रम तथा धन राष्ट्र को वांछित दिशा-बोध देनें में असफल है। शिक्षा के ध्वस्त भवन को सब टुकर टुकर देख रहे हैं, डा० राजेन्द्र प्रसाद से लेकर लगभग सभी नेता शिक्षण पद्धति को अनुपयोगी सिद्ध करके इसमें आमूल-चूल परिवर्तन की पुकार करते रहे हैं। शिक्षा-सुधार के लिये अनेक कमीशन बने, सम्मेलन हुये और बस—.........। प्रधान मन्त्री और शिक्षा मन्त्री की ओर से दूषित पद्धति के परिवर्तन के लिये वक्तव्य आते रहते हैं।

प्रश्न है, इस कार्य को करे कौन ? क्या सरकार ? शिक्षा जगत के उच्च-अधिकारी ? क्या अध्यापक ? या कि हमारी उपेक्षा से इसका समाधान विद्यार्थियों के हाथ में ही चला जाना है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक मूल्य, अध्यापक और परिणाम—

क्रान्ति, तूफान अथवा समाज में बदलते मूल्यों के वेग को रोकना सरल कार्य नहीं है। यांत्रिक युग में भोग, सुख-सुविधा प्राप्ति की होड़ हैं। संस्कृति का स्थान सभ्यता ने ले लिया है। अनुचित साधनों द्वारा संकलित धन के आधार पर शान-शौकत बघारने वाले व्यक्ति का समाज में कहीं अधिक सम्मान है, उचित साधना द्वारा उपार्जित योग्यता अथवा पांडित्य की अपेक्षा। समस्त जनता और कोरे उपदेश देने वाले नेता तो आकण्ठ भोगवाद में डूब जायें और अध्यापक कोरे आदर्श के सहारे, अभावों के पाटों में पिसकर, अपनी फटीचर साइकिल के साथ सम्पूर्ण मनोयोग से अपने कर्त्तव्य करता रहे। मेरे वे छात्र जो अध्ययन काल में मेरा सम्मान करते थे, अब जीवन की दौड़ में, स्कूटर या अन्य साधन प्राप्त करने पर राह में मिलते हैं तो मुझसे नमस्कार प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं। प्रजातांत्रिक युग में एक अध्यापक और एक चपरासी को समान वेतन देने का राज्य-उद्धेश्य है तो वह समाज को योग्य और चरित्रवान विद्यार्थी कैसे दे? जैसे कि कह दिया जाता है, अध्यापक के नाम पर राज्य कोष रिक्त रहता हैं, तो प्रशासन अथवा समाज उन्हें फिर से सम्मान की मदिरा पिलाकर उन्हें जीवन की बिकट और निपट परिस्थियों के प्रति विमुख कर सकता है। धन की कमी है तो उन्हे कम किराये के मकान दिये जा सकते हैं, जीवन उपयोगी सामग्री कम कीमत पर उपलब्ध कराई जा सकती है, उनके आश्रितों को सभी प्रकार की निःशुल्क शिक्षा दिलाई जा सकती है, परिवार को नि:शुल्क इलाज तथा यात्रा की सुविधायें प्रदान की जा सकती हैं। गर्मियों की लम्बी छुट्टियों में भ्रमणार्थ नि:शुल्क यात्रा-पास दिये जा सकते हैं।

समस्त सम्मान तथा सुविधायें प्राप्त करने का अधिकारी विधायक तो है, अध्यापक नहीं ...। इसलिये विद्यार्थी-समाज में आज अनुशासन विहीनता है, तोड़ फोड़ और अव्यवस्था है। फलस्वरूप समूचे राष्ट्रीय ढांचे के चरमरा जानेकी आशंका उत्पन्न हो गई हैं।

दूषित परीक्षा पद्धति

परीक्षा का लक्ष्य केवल एक कक्षा से अगली कक्षा में पहुँचना अथवा प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेना मात्र ही रह गया है। विद्यार्थी अपने समय को लक्ष्यहीन घूमने, व्यर्थ की बातें करने, सोने, सिनेमा देखने, हड़ताल करने अथवा किसी मांसल काया के पीछे फिरने में नष्ट कर देते हैं। और गये भी तो कक्षा के बाहर के जगत से लगाव के कारण चित्त प्रवृत्तियां इतनी बिखरी रहेंगी कि कक्षा में अध्यापक द्वारा समझाये गये पाठ की पकड़ असम्भव रहेगी। परीक्षा निकट होने पर पाठ्य सामग्री की अपेक्षा परीक्षक महोदय की जानकारी और किसी भी प्रकार उनसे अनुचित रुप में अंक प्राप्त करने पर मनोयोग रहेगा। सम्भावित प्रश्नपत्रों (गेस पेपर्स) के आधार पर उत्तीर्ण होने का प्रयत्न होगा। और अब तो चित्र का भंयकर रुप यह हो गया है कि विद्यार्थी सम्बन्धित विषय की समूची पुस्तक और एक छुरा जेब में रख कर परीक्षा-भवन में जायेगा। निरीक्षक की मौत आ गई हो तो वह विद्यार्थी के अनुचित रूप में नकल करने को टोके अन्यथा एक मूक नपुंसक और कायर दर्शक बन कर टुकर टुकर देखता रहे, भले ही बाहर वह आत्मतुष्टि के लिये अपने को 'राष्ट्र-निर्माता' घोषित करता फिरे। अपनी कर्त्तव्य-बुद्धि की फटकार पर कितने ही बेचारे निरीह निरीक्षक प्रत्येक वर्ष विद्यार्थियों के हाथों मुक्ति प्राप्त कर जाते हैं। छात्रों की देखा देखी छात्राओं में भी नकल करने की प्रथा ने प्रचार पा लिया है।

विद्यार्थी मन लगा कर पढ़ेंगे नहीं, समुचित वेतन प्राप्त न करने के कारण अध्यापक का शिक्षणकार्य भी टालू-पद्धति का होगा, परीक्षाओं की विकृत प्रणाली का क्रम भी चलता रहेगा, विद्यार्थियों का प्रतिशत परीक्षा-फल भी अच्छा दिखाना होगा, विद्यार्थियों में केवल कागजी प्रमाणपत्र की प्राप्ति का नशा भी बनाये रखना होगा, और उन्हें नकल करने से भी रोकना होगा—कितनी अन बूझ और जटिल पहेलो है न?

विद्यार्थी लेखकों से

यदि तुम चाहते हो कि पत्र-पत्रिकाओं में जो कुछ तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखो, छप जाये, तो खूब पढ़ो। ध्यान रहे, पढ़ने की सामग्री का चयन विवेक द्वारा हो। मनन करो, अनुभव करो ......लिखो। किसी रचनाकार से ठीक करवाओ। लिखते रहो, लिखते रहो, कुछ छपे तभी लिखा जाये, यह विचार दोषपूर्ण है। पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजोगे, वह नहीं छपेगा। निराश होने की आवश्यकता नहीं है। तब तक लिख-लिख-कर भेजते रहो, जब तक कि तुम्हारी रचना किसी अच्छी पत्रिका में न छप जाये।

यह विशेषाङ्क

शिक्षण संस्थाओं में वर्ष में एक बार पत्रिका प्रकाशित करने को पुरानी परम्परा है। होता यह है कि छात्र, छात्रायें पुराने समाचार पत्रों, पुरानी मैगजीनों से लेख कविता आदि उड़ा कर, या अपने सम्बन्धियों से रचनायें लिखवाकर अपने नाम से छपवा देते हैं। अपनी रद्दी से रद्दी रचना को छपाने का कितना तीव्र आग्रह और उसे पत्रिका-पत्रों में छपा हुआ देखने का कितना अकथनीय गर्व छात्रों को होना है, यह स्वाभाविक है। छात्र, छात्राओं के प्रकाशन प्रेम के कारण पत्रिकायें 'भानमती का पिटारा' मात्र बन कर रह जाती है।

प्रकाशित होकर जब इस पत्रिका को विद्यार्थियों के हाथ में पहुँच जाना चाहिये था, तब इसका प्रकाशन भार मुझ पर आया, अध्ययन में व्यस्त श्रीड़बराल ने इसके सम्पादन तथा प्रकाशन का भार मुझ जैसे बहुधंधी व्यक्ति पर सहसा डाल दिया, समय का अभाव होते हुये भी मैं अस्वीकार न कर सका। शहीद ज्ञान प्रकाश बहुखंडी का जिस दिन हरिद्वार में अस्थिकलश आया, तभी 'भागीरथी' में प्रकाशनार्थ लेखों की फाइल मुझे प्राप्त हुई थी। 'भागीरथी' के जिस रूप तथा कलेवर की कल्पना ने मेरे मस्तिष्क क्षेत्र में जन्म लिया, उसका नामकरण मैंने 'शहीद अंक, विजयांक' और फिर 'शहीद श्रद्धांजलि विशेषांक' के रूप में किया। मित्रों ने इसे सामयिक बता कर इसे सहारा......, मनोपटल पर क्रमश: इसका एक स्पष्ट चित्र उभर आया, और इसे साकार रूप देने में जुट गया मैं। नाम के अनुरूप लेखों की विषय सूची तय्यार की। स्पष्ट है छात्र, छात्राओं द्वारा प्रकाशन हेतु दी गई सामग्री बहुतांश में अनुपयोगी थी। साथी-मित्रों को लिखने के लिये छांट कर विषय दे दिये गये थे......अन्तत: विजयी वही रहे, क्योंकि महीनों तक, मेरा "दैनिक" अनुरोध उन्हें कुछ लिख डालने की प्रेरणा नहीं दे सका। न जाने क्यों 'शहीद' शब्द मुझे शहद सा मीठा लगता है, इसमें मुझे करुणा की अपेक्षा शौर्य के दर्शन होते हैं। जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य मार्ग पर चलते हुये, सुख-दुख की चिन्ता के बिना, प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु को स्वीकार करता है उसे मैं 'शहीद' कहना चाहता हूं। इस विशेषाङ्क के माध्यम से मैं शहीद देवेन्द्र तथा ज्ञान प्रकाश के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ, स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर मर मिटने वाले प्रमुख शहीदों भगतसिंह चन्द्र शेखर महात्मा गांधी आदि के प्रति और राष्ट्र तथा मानवता की सेवा में शहीद हुये उन असंख्य वीरों के प्रति श्रद्धा-सुमन समर्पित करना चाहता हूँ जिनके नाम-पते विस्मृत के गर्त में छिप गये, परीक्षाकाल में निरीक्षण कार्य करते उद्दण्ड और खूनी छात्रों के हाथों जिन कर्त्तव्यशील अध्यापकों की क्रूर हत्यायें करदी गई. उन सभी 'शहीदों' के प्रति श्रद्धांजलियाँ समर्पित हैं। त्याग तथा बलिदान की भावना के प्रति सरकार तथा समाज में आदर जाग्रत हो, ऐश्वर्य और विलास की अपेक्षा विद्वत्ता और सरलता को मान दें, तभी हम अपनी संस्कृति के कुछ दर्शन कर सकेंगे। शृङ्गार की अपेक्षा विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना का संचार करना भी इस विशेषाङ्क का उद्देश्य है।

कुछ विचार, कुछ सुझाव

राष्ट्र के स्वरूप के अनुकूल शिक्षा का एक राष्ट्रव्यापी उद्देश्य घोषित किया जाना चाहिये। पुस्तकीय ज्ञान को रटने की अपेक्षा उसके अनुसार जीवन को ढालने की पद्धति का शिक्षा में प्रवेश होना चाहिये। रूढ़ शिक्षा के स्थान पर गतिशील प्रणाली स्थापित हो। शिक्षा तथा परीक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। सरकार द्वारा शिक्षा जगत के प्रति उपेक्षाभाव दूर हो। योग्यता के साथ चरित्र का भी महत्व बढ़े। शिक्षण प्रणाली में कुछ ऐसा समाविष्ट होना चाहिये जिससे विद्यार्थियों की बिखरी हुई प्रवृत्तियों को केन्द्रित किया जा सके। अध्यापकों के चयन में, उनमें 'गुरुत्व' भावना निहित होनी चाहिये। गुरु-शिष्य के सम्बन्ध में वांछित-सुधार आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना की रूपरेखा और कठिनाइयाँ

इस विशेषाङ्क में. नियोजित लेख-सूची के अनुसार प्राप्त सामग्री में से केवल आधी ही दी जा रही है. स्थानाभाव के कारण । सामग्री-प्रकाशन में कंजूसी बरतने पर भी साधारण पत्रिकाओं से इसका कलेवर ड्योढ़ा हो गया है । संस्था के जन्मकाल से वर्तमान, सभी प्रधानाचार्यों का सचित्र विवरण देने की इच्छा थी । इस संस्था के उन भूतपूर्व छात्रों के विषय में भी जानकारी देने की इच्छा थी. जो आज देश भर में फैले हुये समाज और देश का नाम ऊँचा कर रहे हैं, किन्तु व्यवधान के कारण इन्हें छोड़ देना पड़ा है । नियम-बन्धन तथा धनाभाव के कारण किसी और मुद्रणालय में "भागीरथी" नहीं जा सकी ।

सामग्री के संकलन सम्पादन में श्री दामोदर पन्त, श्री रविप्रकाश कुर्ल एवम् सह सम्पादक श्री हेमचन्द्र उप्रेती श्री राजाराम शर्मा से प्राप्त हुये सहयोग के प्रति आभार प्रकट करना कर्त्तव्य है । प्रधानाचार्य महोदय. श्री सोहन लाल गुप्ता जी की प्रेरणा के बिना तो 'भागीरथी' का प्रकाशन ही असम्भव हो जाता ।

अविस्मरणीय घटनायें

युद्ध में पाकिस्तान खंडित हो गया । देश की स्वतन्त्रता के समय नेताओं से जो भूलें हुई थी. किसी अंश में इनका प्रायश्चित देश ने किया, असंख्य शरणार्थियों के लिये तथा युद्ध में किये गये आर्थिक भार को उठाकर, बांगला देश की मुक्ति के लिये अपने सहस्त्रों जवानों की बलि देकर । इसके लिये दुर्गा की प्रतीक-प्रधान मन्त्री, श्रीमती इंदिरा-गांधी, रक्षा मन्त्री श्री जगजीवन राम, तीनों सेनाध्यक्ष एवम् तीनों सेनाओं के वीर जवानों को विजय-श्रेय जाता है । रूस, ब्रिटेन तथा फ्रान्स आदि मित्र देशों की अकल्पनीय सहायता और उनके सहयोग के प्रति हम सब कृतज्ञ हैं ।

चम्बल के बीहड़ों में विद्रोही-डाँकुओं के आतंक से मध्य प्रदेश की सरकार और जनता परेशान थी । लगभग सभी चोटी के डाकुओं ने श्रीजय प्रकाश बाबू की प्रेरणा से, महात्मा गांधी की प्रतिमा की उपस्थिति में. जो आत्म-समर्पण किया. अहिंसा की विजय के साथ, विश्व की यह अद्वितीय और अनुपम घटना है । देश में नैतिक उत्थान की दिशा में यह श्री गणेश है । आशा है. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष में, समाज को दूषित करने वाले सभी चोर-डाकू, हम सब भी, उपरोक्त घटना से प्रभावित होकर अपना नैतिक सुधार आरम्भ कर देंगे ।

इस पत्रिका के प्रकाशन में जिनका. किसी भी रूप में. सहयोग प्राप्त हुआ है. उनके प्रति तो मैं आभारी हूँ ही, जिनसे सहयोग चाहा. माँगा और नहीं मिला उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ. क्यों कि इस दशा में अधिक कार्य करने से, अधिक अनुभव प्राप्त करने के लाभ से मैं लाभान्वित हुआ हूँ । यहाँ मैं कु० कृष्णा आचार्य, कक्षा १२ बी एवम् अनिल कुमार कक्षा ११ ए. को चर्चा करना भी आवश्यक समझता हूँ, क्यों कि इन दोनों ने अपने मधुर कंठ द्वारा संस्था का नाम उज्ज्वल किया ।

'भागीरथी' उन समस्त राज्य नेताओं, सेना अधिकारियों तथा अन्य अनुकरणीय महानुभावों की भी ऋणी है जिन्होंने अपने बहूमूल्य 'शुभाशीष' भेजकर उत्साहित और अनुप्राणित किया । राष्ट्रकवि श्री 'दिनकर' श्री सोहनलाल द्विवेदी एवम् श्री 'चिरजीत' आदि कवियों के प्रति आभार प्रकट करने के लिये मुझे भाषा-अभिव्यक्ति की अपूर्णता का भाव खटक रहा है ।

सत्यमेव जयते ।

पुनश्च,

भूल सुधार : प्रूफ पढ़ने की असावधानी से मुद्रण की अनेक त्रुटियों की सम्भावना है । विष्णु भारद्वाज के चित्र में, 'उपाध्यक्ष' के स्थान पर 'अध्यक्ष' छात्र कल्याण समिति छप गया है । कृपया सुधार करने का कष्ट करें । त्रुटियों के लिये किन शब्दों में क्षमा माँगी जाये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या ?			किसका ?	कहाँ ?
१.	शहीदों के प्रति श्रद्धांजजि	(कविता)	'शून्य'	१
२.	भागीरथी का भव्य भाव	(लेख)	— — ... ... —	२
३.	भागीरथी, अर्थ, भाव और चिन्तन	(लेख)	... — — ... —	३
४.	शहीद देवेन्द्र प्रसाद शर्मा	(जीवनी)	... ... —	४
५.	शहीद ज्ञान प्रकाश बहुखंडी	(,,)	— ... — — ...	६
६.	बढ़े चलो	(कविता)	प्रदीप कुमार दुबे, कक्षा १२ बी	८
७.	भारती वन्दना	कविता	श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	९
८.	श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	जीवनी	— — ... — —	९
९.	हमें ये सपने पूरे करने है	उद्गार	संकलित	१०
१०.	तिरंगे की कहानी	लेख	प्रदीप कुमार शर्मा, कक्षा १२ बी	१२
११.	स्वा. विवेकानन्द और आज की शिक्षा	,,	राजीव कुमार, कक्षा ११ बी	१४
१२.	जीवन ज्योति–जले	कविता	'पथिक'	१५
१३.	विजय	कविता	कु. पुष्पा पालीवाल, कक्षा ११ ए	१६
१४.	युद्ध काल में छात्रों का योगदान	निबन्ध	राजेन्द्र नाथ कौशिक, कक्षा १२ बी	१७
१५.	बांगला देश के प्रधान–मन्त्री	जीवनी	— — — — ...	१९
१६.	वीर सेनानियों के अलंकरण	लेख	कु० पवन रेखा पुंज, कक्षा ११ बी	२०
१७.	गोस्वामी जी की भक्ति-भावना	निबन्ध	राकेश कुमार, कक्षा १२ बी	२२
१८.	भारत में प्रजातन्त्रीय समाजवाद	,,	श्री बृजनन्दन शर्मा, एम.०.,एल.टी.	२६
१९.	रण–यात्रा	कविता	श्री श्याम नारायण पांडेय	२९
२०.	नीति–निपुण चाणक्य	संकलित–लेख	श्री शिव प्रसाद अग्रवाल, एम.काम	३०
२१	विद्यार्थी, अध्यापक और माँ–बाप	लेख	श्री सोहन लाल गुप्ता, एम.ए, एल.टी.	३३
२२.	जिन्दगी क्या है ?	उद्गार	कु० सरला, कक्षा ९ ए	३६
२३.	बहार आ सकी नहीं	कविता	श्री हरि	३७
२४.	पाकिस्तान के साथ युद्ध में भारत की उपलब्धियाँ	निबन्ध	श्री कान्ता राम वर्मा, एम.ए., एल.टी.	३८
२५.	मेरी चाह	कविता	अशोक केशवानी, कक्षा १२ सी	४१
२६.	राष्ट्रोत्थान में कवियों का योगदान	लेख	कु० गायत्री तोमर, कक्षा १० ए	४२
२७.	कसम तुम्हें भगवान की	कविता	कमल कुमार पाहवा, कक्षा ११ सी	४५
२८.	भारतीय सेना की शौर्यगाथा	निबन्ध	श्री विष्णु स्वरूप त्रिपाठी, साहित्यरत्न	४६
२९.	भारत पाक क्षतियाँ	विवरण	— ... — — —	४८
३०.	परीक्षा में विद्यार्थी क्यों फेल होते हैं	,,	कु० रश्मि, बी.एस.सी.	४९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	क्या ?		किसका ?	कहाँ ?
३१.	कला और सदाचार	निबन्ध	श्री हेमचन्द्र उप्रेती, एम.ए., एल.टी.	५०
३२.	विभिन्न राष्ट्रों के स्वतन्त्रता-दिवस	विवरण	कु० कल्पना डबराल, कक्षा १० ए	५२
३३.	वतन के नौजवानों	कविता	अनिल कु० शर्मा, कक्षा ११ ए	५३
३४.	कालिज में N.C.C. का इतिहास	विवरण	श्री महेश प्रशाद शर्मा, एम.ए., एल.टी.,	५४
३५.	वीर-बालक	गीत-नाट्य	श्री श्रीविलास डबराल, एम. ए.,	५६
३६.	प्रेम की निर्मल धारा	लेख	कु० निर्मल अग्रवाल, ११ ए	५८
३७.	वापसी	कहानी	कु० अजिन्द्र भान, ११ बी	६०
३८.	बापू की विनोद प्रियता	उद्धारण	कु० कुमुद सिंघल, १० ए	६१
३९.	जनरल मानेकशा	जीवनी	... — — — ...	६२
४०.	एडमिरल एस. एम. नन्दा	,,	... ... —	६३
४१.	एयर मार्शल श्री पी. सी. लाल	,,	— — ... ... —	६४
४२.	जब मौत की आँखों में भी आंसू थे	,,	गोवर्धन प्रशाद शाह, कक्षा ११ सी	६५
४३.	राष्ट्र ध्वज का सम्मान	लेख	चमन प्रकाश, कक्षा १२ बी	६६
४४.	स्व. सरदार राम रक्खा	जीवन-वृत्त	... — — —	६८
४५.	श्री हीरा वल्लभ त्रिपाठी	,, ,,	... —	६९
४६.	स्व. पन्नालाल भल्ला	,, ,,	— — ... —	७०
४७.	श्री हरिदत्त जी बहुगुणा	,, ,,	— — — —	७१
४८.	श्री आनन्द प्रकाश शर्मा	,, ,,	... ... — ...	७२
४९.	श्री पारस कुमार जैन	,, ,,	... — — ...	७३
५०.	स्व. रामेश्वर दयाल निगम	श्रद्धांजलि	— —	७५
५१.	,, रामदत्त उप्रेती	,,	— —	७७
५२.	,, जगनन्दन शास्त्री	,,	— — — ...	७८
५३.	,, रघुवीर सिंह विश्नोई	,,	— ... — ...	७९
५४.	,, लक्ष्मी नारायण शर्मा	,,	— ... ... —	८०
५५.	,, गोविन्द सिंह रावत	,,	... ... —	८१
५६.	,, लक्ष्मी नारायण महेन्द्रू	,,	— — — —	८३
५७.	,, कालूराम	,,	... ... — ...	८४
५८.	,, मुहम्मद उमर	,,	— ... — —	८५
५९.	,, श्याम स्वरूप वर्मा	,,	—	८६
६०.	शोक-श्रद्धांजलियां	,,	... — — ...	८७
६१.	प्रगति के चरण-चिन्ह	विवरण	— — — —	८८
६२	पं. किशोरी दास वाजपेयी	जीवन-वृत्त	— — ... —	७२ क
६३	श्री सुरेन्द्र चन्द्र रस्तोगी	,, ,,	... — — —	७२ ख
६४.	श्री ऋषि कुमार गुप्ता	,, ,,	— — — —	७२ ख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या ?		कहाँ ?	किसका ?
६५. कालिज प्रबन्धक समिति	विवरण	... ...	७२ ग
६६. स्व० शिव प्रसाद झा	श्रद्धांजलि	... ...	७२ घ
६७. प्रथम श्रेणी प्राप्त छात्र-सूची	विवरण	... ...	९१
६८. श्री जय करणदास,	जीवन-वृत्त	... ...	९३
श्री शिव भगवान दीक्षित	,, ,,		
६९. श्री दया शंकर, श्रीरूपराम शर्मा	,, ,,	... ...	९४
७०. श्री राम बिहारी लाल जोहरी	,, ,,	... ...	९५
७१. श्री प्यारे लाल मधुबन	,, ,,	... ...	९६
७२. बल जीत सिंह	,, ,,	... ...	९७
७३. श्री कृष्ण लाल गोविल	,, ,,	... ...	९८
७४. श्री राजाराम वर्मा	,, ,,	... ...	९९
७५. श्री गजराज सिंह श्रावत	,, ,,	... ...	१००
७६. अध्यापक-परिवार	विवरण	... ...	१०१
७७. कार्यालय तथा कर्मचारी परिवार	,,	... ...	१०३
७८. सोनार बांगला देश	लेख	त्रिभुवन कु० गर्ग, कक्षा १२ बी	१०४
७९. इन्टर मीडियेट अनुक्रमांक सूची	विवरण	... ...	१०६
८०. हाई स्कूल अनुक्रमांक सूची	,,	... ...	११०
८१. भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता	लेख	कृष्णा कुमार साहनी, कक्षा ११ बी	११४
८२. हमारा कालिज	विवरण	... ...	११५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दना

हंस वाहिनी वीणा वादिनि,
बुद्धि विमल, दो शुचितर अन्तर ।
जन-जन-जीवन का चिर-मरुथल,
बने शस्य, श्यामल मृदु उर्वर ।।

तर्क और श्रद्धा प्राणों में,
पलें परस्पर ले विश्वास,
बन जाये अन्तर का पतझर,
मधु ऋतु का मंगल मधु-मास,

हिम सा वैर मनुज-उर-गिरि से-
बहे अवनि पर बन नव-निर्झर ॥

बुद्धि, हृदय हों एक ताल में,
जड़ता में जीवन भर जाये,
कटुता, कलुष-पंक के उर से,
जीवन का शतदल मुस्काये,

विश्व - भग्न - वीणा पर गूंजे,
रागों की सरगम, अभिनव स्वर ।।

यंत्र, मंत्र, विज्ञान, कलायें,
सहयोगी सी मिलों मीत बन,
आत्म - तत्व से सिंचित, पूरित,
भौतिकता का हो जर्जर - तन,

विकृति विश्व की तजे वक्रता,
बने कलुष शिव, सत्यम्, सुन्दर ।।

(शब्द तथा स्वरकार 'शून्य')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के प्रति

श्री श्रीविलास डबराल, एम०ए, प्रवक्ता (हिन्दी)

पत्र पुष्प अक्षत चन्दन ले थाली में,
आज सभी हम आये तेरे पूजन को।
आज साधना सिद्धि बन गयी जीवन की।
पतझर की दासी, रानी है मधुवन की।
कारा के बन्धन से आयी आजादी,
मुसकाई कलियाँ सपनों के उपवन की॥
आम्र कुंज से तेरे बन्दनवार बने।
कली कली लो चली तुम्हारे बन्दन को॥
भारत अपनी काया है तुम हो वाणी,
तुम ही तो भावों की जानी-पहचानी।
भाव हृदय की वीणा पर झंकृत होते,
आत्मा की हो तुम्हीं गायिका कल्याणी॥
तेरे स्वर में मुखर हो रहे गीत यहाँ,
मिली तुम्हारी प्रीत भ्रमर के गुंजन को।
भाग रहा है रजनी का अंधियारा रे,
दिखने लगा हमें कूल किनारा रे।
वृक्षों पर विहगों का कलरव जाग गया,
प्राची ने निज घूंघट श्याम उतारा रे।
झीलों ने निज भाव-कमल बिखराये हैं,
खिली सुबह की किरण तुम्हारे अर्चन को।
चलो, बज रहे शंख मृदंगों के स्वर में,
सभी ढल रहे आज भक्ति के निर्झर में।
यहाँ नहीं हैं राग-द्वेष की चर्चाएँ,
भक्ति भाव से आये माँ के मन्दिर में।
यह अनन्त आकाश और युग-कल्प चला,
हिन्दी भाषा तेरे ही भुज बन्धन को॥

पन्ना लाल भल्ला म्युनिसिपिल इन्टर कालिज, हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पन्ना लाल भल्ला म्युनिसिपिल इन्टर कालिज, हरिद्वार ।

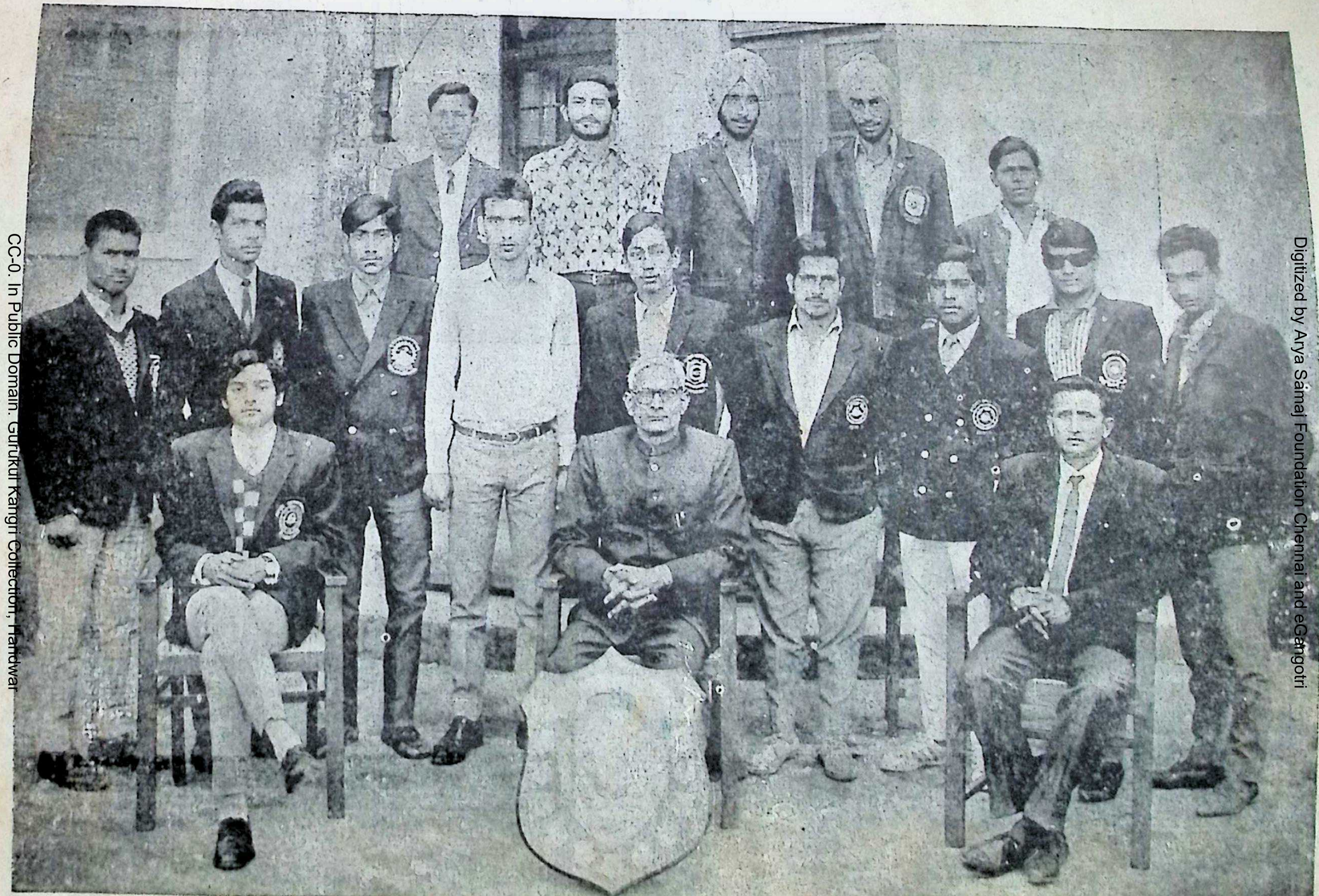

प्रधानाचार्य महोदय एवम् क्रीडा–अध्यक्ष के साथ
भिन्न-भिन्न जिला व मण्डल की प्रतियोगिता में चुने गये खिलाड़ी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० किशोरी दास वाजपेयी

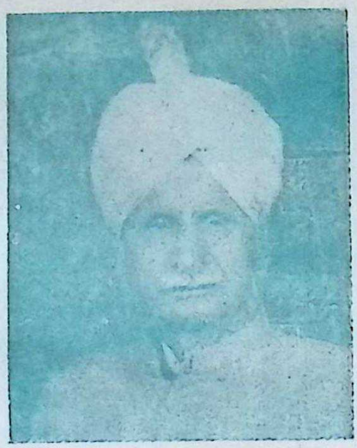

श्री जयकरण दास

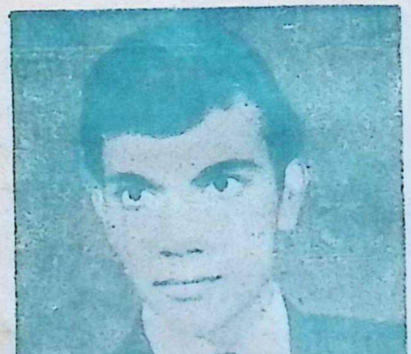

चमन प्रकाश, कक्षा १२ बी
अध्यक्ष, छात्र कल्याण समिति

विष्णु भारद्वाज, कक्षा १२ सी
अध्यक्ष, छात्र कल्याण समिति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीदों के प्रति

श्रद्धांजलि

वीर जवानों तुम्हें देश के शत शत बार प्रणाम ।
सीमाओं के सजग प्रहरियों, बारम्बार प्रणाम ॥

आज राष्ट्र का मस्तक नत है देख तुम्हारी कुर्बानी ।
खूब दिखाई रण में तुमने हिम्मत अपनी मर्दानी ॥

सुयश तुम्हारा आज गूंजता सकल नगर और ग्राम ।
वीर जवानों तुम्हें देश के शत शत बार प्रणाम ॥

सीमा की रक्षा कर तुमने जीवन अपना धन्य किया ।
जिसका जीवन 'माँ' पर अर्पित सच्चा जीवन वही जिया ॥

याहिया की सेना, टैंकों को तुमने चकना चूर किया ।
वर्ष हजारों तक लड़ने का भुट्टों का भ्रम दूर किया ॥

मुक्त बाँगला देश कराया, जीत लिया संग्राम ॥
वीर जवानों तुम्हें देश के शत शत बार प्रणाम ॥

शब्दकार "शून्य"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागीरथी का भव्य भाव

रवेः कवेः किं समरस्य सारं,
कृषिर्भयं किं किमदन्ति भृङ्गाः।
सदाभयं ब्रह्म पद च केषां,
भागीरथी तीर समाश्रितानाम् ॥

उपरोक्त श्लोक की तीन पंक्तियों में क्रमशः सात प्रश्न हैं। सूर्य का सार क्या है? युद्ध का सार क्या है? खेती को किसका भय है? भौंरे क्या खाते है? सदा भय किसको रहता है? ब्रह्मपद किसके लिये है? इसमें प्रथम छः प्रश्नों के उत्तर अन्तिम चौथी पंक्ति के अक्षर या अक्षर समूह क्रम से देते हैं और अतिम प्रश्न का उत्तर पूरी अन्तिम पक्ति देती है। चौथी पक्ति का इस प्रकार अक्षर विच्छेद हुआ – भा+गी+रथ+इति+रसम+आश्रितानाम् ये छः उत्तर हैं, अर्थात् सूर्य का सार भा अर्थात् प्रकाश है। कवि का सार गिरा (वाणी) है। युद्ध का सार रथ है। कृषि को इति का भय रहता है। भौंरे रस चूसते है। आश्रितों को भय रहता है। सातवाँ उत्तर 'भागीरथी' के तीर (तट) पर रहने वाले ब्रह्मपद के भागी होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागीरथी, अर्थ, भाव और चिन्तन

भागीरथी पुण्य नाम माता गंगा का है। श्रीगंगा को हमने माँ के पवित्र नाम से सम्बोधित किया है। हमारी संस्कृति के स्वरूप को निर्मित करने में गंगा माँ का बहुत बड़ा सहयोग है। राजा भागीरथ वे जो कभी निर्माण अधिकारी रहे होंगे, गंगा जी के प्रवाह का निर्माण किया। गो-मुख से गंगा माँ के प्रवाह को पहाड़ों को खोद कर मैदान में लाना कोई सरल कार्य नहीं था। इसलिये 'भागीरथी' के अर्थ विराट्, विशाल तथा कठिन आदि हो गये हैं।

हमारी कॉलिज पत्रिका का नाम 'भागीरथी' है। पत्रिका का नाम 'भागीरथी' केवल इसलिये नहीं है कि यह 'भागीरथी' के तट पर स्थित है, वरन् इसलिये भी कि इस पवित्र नाम में वे सभी भाव और गुण हैं जिनकी प्राप्ति के लिये हमारी संस्था की आकांक्षा रही है।

'भागीरथी का प्रथम अक्षर 'भा' प्रकाश और ज्ञान का द्योतक है, जिससे अन्धकार और अज्ञान दूर हटता है। किसी शैक्षणिक संस्था का उद्देश्य भी विद्यार्थियों को ज्ञान, विज्ञान की शिक्षा द्वारा विचारवान् और विवेकशील बनाना है। दूसरे अक्षर 'गी' का अर्थ वाणी है, सौन्दर्यपूर्ण अभि व्यक्ति, जिज्ञासा तथा ज्ञान की देवी है। इसी प्रकार शिक्षा संस्था को ऐसे प्रभावशाली वक्ताओं का निर्माण करना होता है जिन्हें समाज में अपने मंगलमय विचारों को प्रचारित करना है। 'रथी' शब्द का अर्थ उच्च स्तर के योद्धा से है, जिन्हें संसार के 'कर्म क्षेत्र' में सफलता पूर्वक विजय-वरण करनी है। 'भागीरथी' में गुरुतम, सतत, सद् प्रयत्न तथा सघर्ष करने का भाव निहित है। इसी प्रकार शिक्षार्थियों को सतत उद्यम तथा क्रिया शील बनना है। 'भागीरथी' का जल अनुपम और अद्वितीय रूप में पवित्र और कल्याणप्रद है। इसी प्रकार किसी संस्था के सरि-दूकूल में सतत प्रशि-क्षित के प्रवाह में दीक्षित होने वाले छात्र चरित्रवान् सुघढ़ तथा विनयी बनकर समाज में प्रतिष्ठित हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीद देवेन्द्र प्रसाद शर्मा

एक स्मृति, एक श्रद्धांजलि

शहीदों ने जिस प्रकार अपने शोणित से 'माँ' वसुन्धरा का तिलक कर अपने 'फूलों' से अभिषेक किया है, आज लेखनी भी शोणित प्रवाह के आधार पर प्राप्त विजय के वीर बहादुरों के प्रति श्रद्धाँजलि अर्पित कर कृतकृत्य होना चाहती है।

हमारी माँ वसुन्धरा 'वीर प्रसू' है। जब कभी भी देश पर आतातायियों ने कुदृष्टि डाली है, वीर बहादुरों ने सदा ही वैरी का मानमर्दन किया है। पाक-भारत के सन् १९६५ के युद्ध में देश की सुरक्षा और मानमर्यादा के हित में बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने वाले अमर जवानों में हरिद्वार के से०ले० शहीद देवेन्द्र प्रसाद शर्मा का नाम भी सदा अमर रहेगा।

देवेन्द्र के स्वर्गीय पूज्य पिता श्री बद्रीप्रसाद जी हरिद्वार नगर पालिका में कर्मचारी थे। वे स्वयं एक सच्चे, ईमानदार, परिश्रमी और कर्त्तव्यशील व्यक्ति थे। मात्र भूमि के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आत्म-गौरव के विश्वासी पिता के घर में २ जौलाई १९४१ को, एक पुत्ररत्न ने जन्म लिया। आल्हाद और नाच-गानों के वातावरण में ज्योतिषाचार्य ने इस शिशु को 'देवेन्द्र' का नाम प्रदान किया और पाठशाला में पिता ने इस का नाम देवेन्द्र प्रसाद लिखाया।

छटी कक्षा से १२ वीं कक्षा तक शिक्षा देवेन्द्र ने पी०बीं० म्यु० इण्टर कॉलिज में प्राप्त की। देवेन्द्र एक परिश्रमी विनयी और अनुशासन प्रिय विद्यार्थी के रूप में रहे। कक्षा में जो कार्य घर करने के लिये दिया जाता उसे नियमित तथा व्यवस्थित रूप में करते। साँस्कृतिक गतिविधियों के सम्बन्ध में मुझ से निकटता होने पर मुझे उनमें अद्वितीय गुणों के दर्शन हुये। अत्यन्त विनम्र स्वभाव लिये वे प्रखर स्मरण शक्ति वाले छात्र थे। 'बलिदानी' और शौर्य गाथाओं से पूर्ण नाटकों में उनकी अभिरुचि थी।

इन्टर मीडियेट के उपरान्त देवेन्द्र अपने भ्राता श्रीराजेन्द्र प्रसाद शर्मा के पास मुजफ्फरनगर अध्ययन के लिये चले गये। वहाँ के सनातनधर्म कॉलिज से बी०काम० परीक्षा उत्तीर्ण करके वे अजमेर चले गये। वहाँ के मेयो कॉलिज में इनके ज्येष्ठ भ्राता प्राध्यापक बन कर आये। अजमेर के गवर्नमेन्ट कॉलिज से देवेन्द्र ने एम० काम० किया। फिर कानून की प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९६२ में उन्हें एमरजेन्सी कमीशन मिल गया और देहरादून के सैनिक संस्थान में प्रशिक्षण हेतु चले गये। २७ सितम्बर, १९६३ को सातवें बी० एन० ग्रेनेडियर्स में उनकी नियुक्ति हुई और उन्हें काश्मीर भेज दिया गया। वहाँ से उनकी बटालियन स्थानान्तरित होकर ४ अगस्त सन् ६५ में अम्बाला आई।

भारत का उत्कर्ष अमरीका, चीन आदि को अप्रिय था। भारत विरूद्ध युद्ध के लिये पाकिस्तान की भूमि को अमरीकी हथियारों से पाट दिया गया। फिर क्या था, रणभेरी के स्वर गूंज उठे, सेनाओं को युद्ध के आदेश दे दिये गये। माता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता का आशीर्वाद प्राप्त करने एक दिन के अवकाश पर देवेन्द्र हरिद्वार आये। अगले दिन जब मसूरी एक्सप्रेस से हरिद्वार स्टेशन छोड़ा तो उनके अन्तर में देश के लिये उठे ज्वार को कौन जानता था——।

× × ×

परिवार में देवेन्द्र के विवाह की जब बात चली थी तो इन्होंने कहा था, "मेरा विवाह मृत्यु रानी से होगा, यह शरीर देश का है, देश को ही अर्पित होगा।"

दिसम्बर १९६४ में वे काश्मीर के उड़ी क्षेत्र में तैनात थे। वहाँ उन्होंने एक पाकिस्तानी दस्ते को घेर लिया था। ६ घटे के नोटिस पर, ५ सितम्बर को खेमकरण मोर्चे पर पहुंचे। ७, ८ और ९ सितम्बर को असल उत्तर में घमासान युद्ध हुआ। १० सितम्बर को युद्ध में अधिकाधिक वेग आया। बीच में मेजर मेहरचन्द, उनकी दाहिनी ओर देवेन्द्र और बांयी ओर ले० अमरीक सिंह थे। देवेन्द्र ने अपनी टोली को लेकर दुश्मन की सेना पर दबाव डाला। पाकिस्तानी सेना भाग खड़ी हुई। उसका पीछा करते हुये देवेन्द्र लगभग ७०० गज़ आगे बढ़े कि टैंक के एक भारी गोले ने उनकी बलिदानी इच्छा पूरी करदी। चौथे ग्रेनेडियर्स के हवलदार अब्दुल हमीद ने दुश्मन की सेना का सामना करते हुये जिस स्थल पर प्राणों की बलि दी उससे केवल १०० गज के फासले पर देवेन्द्र ने अपना चिर-पोषित सपना साकार किया।

देवेन्द्र ने युद्ध में विजय प्राप्ति पर हरिद्वार में अपने भव्य स्वागत का जो सपना संजोया था, वह उस दिन पूरा हुआ, हां कुछ बदले रूप में। जिस दिन फूलमालाओं से लदे सैनिक ट्रक में शहीद देवेन्द्र के अस्थिकलश को, माँ भागीरथी की मोक्षदायनी गोद में अर्पित करने के लिये पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ ले जाया गया था। जलूस में जैसे समूची पंचपुरी उमड़ पड़ी थी। समूचा नगर जैसे विषादपूर्ण गौरव में डूब गया था।

देवेन्द्र शर्मा के बलिदान स्थल पर ६ फीट लम्बा, साढ़े तीन फीट चौड़ा सफेद पत्थर का स्मृति चबूतरा निर्मित करा दिया गया है। शोका कुल परिवार को तत्कालीन सेनाध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री, प्रतिरक्षा मन्त्री श्री चव्हाण, प्रान्त की तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्रीमति कृपलानी आदि नेताओं के संवेदना तथा सहानुभूतिपूर्ण पत्र प्राप्त हुये। समस्त आश्वासनों से मर्माहत माता-पिता के अभाव की क्या पूर्ति हो सकी? क्या हरिद्वार नगर निवासियों, प्रशासन तथा स्थानीय संस्थाओं ने देवेन्द्र की स्मृति को जाग्रत रखने अथवा दुखी परिवार के दुख-कष्ट को कम करने के लिये कुछ ठोस कार्य किया?

मेरा यह भारत ऋषियों की पुण्य भूमि है
आध्यात्मिकता की संस्कृति इसकी थाती है,
हिम-गिरि इसके आदर्शों की ऊंचाई है,
तो गंगा इसके भावों की पावनता है।

कमलेश—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीद ज्ञान प्रकाश बहुखंडी :

एक परिचय, एक याद

भारत पाक १९७१ के युद्ध में शहीद ज्ञानप्रकाश बहुखडी का नाम मात्रभूमि के लिये किये गये बलिदानों के इतिहास में सदा देदीप्यमान रहेगा। ऐसे वीर का जन्म ग्राम गेहुलाड, जिला गढ़वाल निवासी स्व० दीनदयाल शास्त्री के यहाँ ३१ अगस्त सन् १९४६ को हुआ था। श्री शास्त्री जी सस्कृत के उद्‌भट विद्वान् थे। चंडीगढ़ की ऐंग्लो-वैदिक शिक्षण सस्था ने आपकी विद्वता के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये आपको स्वर्ण-पदक से विभूषित किया था। सन् १९६५ में आपके स्वर्गवासी होने पर ज्ञान प्र..ाश के ताऊ जी, श्री राम प्रसाद जी बहुखडी पर ज्ञान के लालन-पालन और दीक्षा का दायित्व आ गया। श्री रामेश्वर प्रसाद जी बहुखडी एक प्रसिद्ध सस्कृत के विद्वान्, यशस्वी ज्योतिषाचार्य तथा एक आदर्श पुरुष हैं। ज्ञान प्रकाश की छटी कक्षा से इण्टरमिडियेट तक, शिक्षा हरिद्वार के पी०बी० म्यु० इण्टर कॉलिज में सम्पन्न हुई। ज्ञान प्रारम्भ से ही एक होनहार, परिश्रमी, मिलनसार, विनयी और राष्ट्रीय भावना से युक्त साहसिक नवयुवक के रूप में अपने परिवार और गुरुजनों के समक्ष आये। तत्पश्चात् स्थानीय एस०एम०जे०एन० डिग्री कॉलिज से बी० ए० किया। अपनी लोक प्रियता के कारण डिग्री कॉलिज छात्र-संघ के ये अध्यक्ष पद पर चुने गये। सन् १९६९ में ज्ञान को शार्ट कमीशन प्राप्त हो गया और ट्रेनिग के लिए मद्रास भेज दिये गये। १ अप्रैल सन् १९७० को यह ट्रेनिग पूरी हुई और इन्हें से०ले० के पद पर जयपुर भेज दिया गया।

१० सितम्बर सन् १९७१ को नसीराबाद में इनको सर्वोत्तम कैडेट होने के कारण भारतीय थल सेनाध्यक्ष जनरल मानेकशा ने १४ ग्रेनेडियर्स का रेजीमेन्टल ध्वज प्रदान किया। इसका सचित्र विवरण भारत के प्रमुख समाचार-पत्रों ने उसी दिन प्रकाशित किया। ४ जौलाई को ज्ञान को राजौरी में नियुक्त किया गया।

छम्ब क्षेत्र पर पाकिस्तान से भीषण युद्ध चल रहा था। इस स्थान पर आक्रमण करने का इन्हें आदेश हुआ। १३ दिसम्बर सन् १९७१ को रात्रि के १२ बजे अपने सी०ओ० का आदेश प्राप्त कर मातृभूमि का यह नौ जवान उचित आक्रमण के लिये आगे बढ़ गया यें और इनके साथी पाकिस्तानी सेना का संहार करते हुये, उनके आक्रमणों को विफल करते हुये आगे बढ़ते गये। खतरे से बचाने के लिय इनके एक साथी ने इन्हें पीछे सुरक्षित स्थान पर जाने को कहा। इस पर ज्ञान का उत्तर आया "मेरी चिन्ता मत करो और दुश्मन को पीछे धकेलते ही जाओ।"

इस वीर जवान को शत्रु की ६ गोलियाँ लगीं और मातृभूमि को मुस्कराते हुये प्रणाम करके १४ दिसम्बर को प्रातः मातृभूमि के पूजा मन्दिर में अपने जीवन के सुरभित और टटके सुमन को अर्पित कर दिया।

१६ दिसम्बर को कर्नल नौटियाल के पत्र से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार को ज्ञान के शहीद होने का गौरव और शोक मिश्रित दुखद समाचार प्राप्त हुआ तो समूचा नगर मातम में आकंठ निमग्न हो गया। १६ दिसम्बर को सम्पूर्ण पंचपुरी में पूर्ण हड़ताल रही और शोकाकुल परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करने वालों का ताँता लगा रहा। नगर जैसे अश्रु-प्रवाह में डूब गया।

उसी दिन सन्ध्या ४ बजे से, श्रवणज्ञान मन्दिर से एक शोक जलूस नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ, माँ भागीरथी के तट पर, 'सुभाष-घाट' पहुंचा। नगर के प्रेरक तथा लोकप्रिय न्यायाधीश श्रीसुरेशचंद रस्तौगीजी की अध्यक्षता में एक विराट शोक सभा शहीद ज्ञान प्रकाश को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिये हुई। नगर के सभी वर्ग के प्रतिनिधियों – शिक्षण संस्थाओं के आचार्यों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, राजनैतिक पार्टियों के नेताओं तथा ज्ञान के संगी–साथियों ने भावभीनी और सजल श्रद्धाँजलि अर्पित की। वातावरण ऐसा करुण कि अनेक वक्ता अवरुद्धकंठ से कुछ कह ही न पाये। नगर पालिका अध्यक्ष, श्री पारसकुमार जैन ने साथियों से परामर्श करने पर 'सुधामेडीकल हाल' से बाजार तक के मार्ग का नाम 'शहीद ज्ञान प्रकाश बहुखडी मार्ग, रखने की घोषणा की। इसी प्रकार १८ दिसम्बर ७१ को पी० बी० म्यु० इण्टर कॉलिज में समस्त अध्यापकों, कर्मचारियों तथा छात्र-छात्राओं की विशाल सभा में श्री शून्य' द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारत हुआ, जिसमें स्थानीय शहीदों के परिवारों को ठोस आर्थिक सहायतार्थ 'शहीद कोष' की स्थापना किये जाने, सभागार में शहीदों के चित्रों को टाँगने तथा कॉलिज के मुख्यद्वार का नाम 'शहीद द्वार' रखे जाने, तथा द्वार पर शहीद देवेन्द्रशर्मा तथा बहुखंडी की प्रशस्ति अंकित किये जाने की बातें थीं।

२६ दिसम्बर ७१ को हरिद्वार में शहीद बहुखडी का अस्थिकलश विशिष्ट सैनिक द्वारा लाया गया। फूलों, तथा तिरंगे झन्डों से सुसज्जित सैनिक ट्रक, सम्पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ, एक जलूस में ज्ञान के अवशेषों को लेकर जब हरिद्वार रेलवे स्टेशन से, प्रमुख मार्ग पर होता हुआ, माँ भागीरथी के पावन तट की ओर अग्रसर हुआ तो लगा कि नगर में आँसुओं का ज्वार उमड़ पड़ा है। दोनों शहीदों की अमरता के नारों से नगर गूंज उठा। 'हर की पौड़ियों' पर ब्रह्मकुण्ड में अवशेषों के प्रवाह के पूर्व नगर के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों ने अस्थिकलश पर श्रद्धा-सुमन समर्पित किये। शहीद ज्ञान के युद्ध मोर्चे के सहयोगी ले० नायक नौबतसिंह ने माइक पर ज्ञान के वीर गति प्राप्त करने और उसके पूर्व उनके साहस और शौर्य की आंखों देखी गाथा, अवरूद्ध कंठ और अश्रु पूर्ण नेत्रों के साथ सुनाई। नायक नौबत सिंह ने अपने ज्ञान साहब के जीवन को सफल और धन्य बताया, अपने विषय में उन्होंने असन्तोष प्रकट किया कि क्यों नहीं उन्हें भी 'शहीद' होने का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ।

पृथ्वी पर कोई देश भी,
इसके नहीं समान है,
इस दिव्य देश में जन्म का,
हमें बहुत अभिमान है।
—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़े चलो

बढ़े चलो जवान,
बढ़े चलो जवान।
झुके नहीं कदम कहीं,
झुके नहीं कमान॥

प्रवेश कर सके न शत्रु मातृभूमि में,
प्रवेश कर सके न शत्रु जन्मभूमि में।
प्रवेश कर सके न शत्रु पुण्य भूमि में,

कि घेर लो धरा, समुद्र,
दिशा, औं आसमान॥

तुम्हारी वीरता निहार शत्रु त्रस्त है,
तुम्हारी शूरता निहार शत्रु अस्त है,
दुश्मनों के व्यूह समस्त ध्वस्त हैं.

उड़ रहा तुम्हारी जीत का,
विश्व में निशान।
झुके नहीं कमान॥

शिवा, प्रताप की रही यही परम्परा,
कि शत्रु को परास्त कर, विजय वरा,
समक्ष काल के न नौजवाँ कभी डरा,

उठे समस्त देश आज,
एक शक्ति के समान।
झुके नहीं कमान॥

न राष्ट्र को महानता झुके कभी कहीं,
न राष्ट्र की अखंडता झुके कभो कहीं,
न राष्ट्र की स्वतन्त्रता झुके कभी कहीं,

झुके न शीश देश का,
सुखी रहे किसान।
झुके नहीं कमान॥

(प्रदीप कुमार दुबे, कक्षा १२ बी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारती वन्दना

(रचियता : श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')

भारति, जय विजय करे,
कनक-शस्य-कमल धरे ।।
लंका पदतल - शतदल,
गर्जितोर्भि सागर - जल,
धोता शुचि चरण - युगल,
स्तवन कर बहु अर्थ भरे ।। भारति०

तरु तृण वन लता वसन,
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिजल कण,
धवलन्धार हार गले ।। भारति०
मुकुट शुभ्र हिम तुषार,
प्राण - प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशायें अपार,
शतमुख - शतख-मुखरे, ।। भारति०

श्री सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला'

१. जन्म सवत् १९५३, सन् १८९६ ई०
२. जन्म स्थान मेदिनीपुर (बंगाल)
३. पिता का नाम पं० रामसहाय त्रिपाठी
४. जन्म भूमि गढ़कोला ग्राम (जिला उन्नाव)
५. पं० रामसहाय जी पर महिषादल राज्य के राजा की विशेष कृपा। निराला जी की शिक्षा हाई स्कूल तक राज्य की ओर से। काव्य रुचि बचपन से ही। आरम्भ में बंगला में रचना करते थे। दर्शन की ओर झुकाव, संस्कृत अध्ययन। फिर हिन्दी में कविता करने लगे। कलकत्ते में रहकर स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों का अध्ययन, इनका प्रभाव इन पर पड़ा। कलकत्ते से निकलने वाले 'मतवाला' के संपादकीय विभाग में कुछ दिन काम किया। रचनायें, अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास काव्यग्रन्थ। अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती, उपन्यास। रवीन्द्र कविता कानन, हिन्दी बंगाली शिक्षक, ध्रुव प्रह्लाद, राणा प्रताप आदि पुस्तकों की रचना की। शंकुतला नाम की पुस्तक अभी अप्रकाशित है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानन्द जी के साहित्य पर एक बड़ा ग्रन्थ लिखा है। लखनऊ से प्रकाशित 'सुधा' के सम्पादकीय विभाग में भी कार्य किया। निराला जी युगप्रवर्तक कवि कहे जाते हैं। इन्होने हिन्दी में निराले ढंग की कविता लिखी, इसलिये निराला नाम सार्थक है। इनका काव्यकाल संवत् १९७२ से आरम्भ होता है। निराला जी की कविताओं में संगीत विद्यमान् है। कल्पना, भाव, अनुभूति इनकी रचनाओ की विशेषता है। वेदान्त तथा दर्शन के विचारो से इनका काव्य ओत-प्रोत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें ये स्वप्न पूरे करने हैं

मैं अपने आप को एक ऐसे भारत के निर्माण में लगा दूंगा जिसमें गरीब से गरीब लोग भी यह अनुभव कर सकें कि देश उनका है और जिसकी स्थापना में उनका सक्रिय सहयोग रहा हो—एक ऐसा भारत जिसमें ऊंच और नीच का भेदभाव नहीं होगा, एक ऐसा भारत जिसमें सभी जातियां प्रेम से हिल मिल कर रहेंगे। ऐसे भारत में न स्पृश्यता के लिये स्थान हो गा और न मादक पदार्थों के लिये। स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त होंगे…। यह है मेरे सपनों का भारत ! --मोहन दास गाँधी

× × ×

ढाँचा तो बन गया है पर उसमें माँस पेशियाँ बठानी है। और यह कार्य तो तभी पूरा होगा जब हम गरीबी, रोग और अज्ञान की समस्या को सुलझा चुकेंगे। समय से पहिले न तो हमें हर्षोन्मत होना चाहिये और न इन समस्याओं को सुलझाने के लिये हमें जिन अनेक और वास्तविक कठिनाइयों को जीतना पड़ेगा, उनसे भयभीत और निराश न होना चाहिये।

—डा० राजेन्द्र प्रसाद

× × ×

पुर्ननिर्माण के सम्बन्ध में हमारी मुख्य समस्या यह होगी कि किस प्रकार हम देश से गरीबी को दूर करें। इसके लिये हमें अपनी भूमि प्रणाली में क्रान्तिकारी सुधार करने होंगे जिनमें जमीदारी उन्मूलन भी शामिल है। इसके लिये कृषि ऋण समाप्त करने होंगे और ग्रामीण जनता के लिये सस्ते ऋण की व्यवस्था करनी होगी। उत्पादक तथा उपभोक्ता दोनो के लाभ के लिये सहकारी आन्दोलन व्यापक करना होगा। भूमि का उत्पादन बढ़ाने के लिये कृषि को वैज्ञानिक आधार पर व्यवस्थित करना होगा।

आर्थिक समस्या को सुलझाने के लिये कृषि सम्बन्धी सुधार ही पर्याप्त न होंगे। राज्य के स्वामित्व तथा नियत्रण के आधीन औद्योगिक विकास के लिये एक ठोस योजना बनाना आवश्यक होगा। पुरानी औद्योगिक प्रणाली के स्थान पर, जो विदेशों में विशाल पैमाने पर उत्पादन तथा देश में विदेशी शासन के कारण नष्ट भृष्ट हो गई है, नई प्रणाली स्थापित करनी होगी।

—सुभाष चन्द्र बोस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम एक ऐसा स्वराज्य चाहते हैं जिसमें सूखी रोटी न मिलने के कारण सैकड़ों मनुष्य मरते न हों। पसीना बहाकर पैदा किया हुआ अनाज किसानों के बच्चों के मुंह में से छीन कर विदेश में न ले जाता हो, जिसमें लोगों को कपड़े के लिये पराये मुल्कों पर आधार न रखना पड़ता हो। थोड़े से विदेशियों की सुविधा के खातिर राजकाज विदेशी भाषा में न चलता हो। हमारे विचारों और शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा न हो। राज्य का शासन जमीन और आसमान के बीच पृथ्वीतल से सात हजार फुट की ऊंचाई से न होता हो और महान् देश भक्तों की स्वतन्त्रता तो खतरे में हो किन्तु शराबियों की आजादी की रक्षा करने की खास तौर पर चिन्ता रखी जाती हो। ऐसी स्थिति स्वराज्य में नहीं हो सकती।

—बल्लभ भाई पटेल

× × ×

स्वाधीनता के जन्म के पहिले हमने सभी तरह की तकलीफें उठाई और हमारे मन में उनकी याद अब भी भारी है। उनमें से कुछ तकलीफें तो अब भी सहनी पड़ रही हैं। फिर भी जो बीतना था बीत चुका। अब भविष्य हमें पुकार रहा है।

वह भविष्य चुपचाप बैठ कर आराम करने का नहीं, बल्कि लगातार परिश्रम करने का है ताकि हम उन वायदों को, उन प्रतिज्ञाओं को, जो हमने समय-समय पर की हैं, और एक नई प्रतिज्ञा को, जिसे हम अब करने जा रहे है, पूरा कर सकें। भारत की सेवा का अर्थ है मुसीबत में पड़े हुये करोडों लोगों की सेवा। इसका मतलब है गरीबी, अज्ञान, बीमारी और आगे बढ़ने के मौकों के फर्क को मिटाना। हमारे युग का जो सबसे महान् पुरुष था उसकी यही महत्वकांक्षा थी कि हर ओर से हर आँसू पोंछा जाय। हो सकता है यह काम हमारी पहुँच के बाहर हो, लेकिन जब तक आंसू और मुसीबतें हैं तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा।

और इसलिये हमें मेहनत करनी है, काम करना है, और सख्त काम करना है ताकि हम इस स्वप्न को वास्तविक रूप दे सकें।

—जवाहर लाल नेहरू

मानवता उट्ठेगी यारो,
इसमें शक शुबहा नहीं जरा,
हैं उधर जालिमों की तोपें,
तो सीना इधर खूब उभरा।

—(बालकृष्ण शर्मा 'नवीन')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तिरंगे की कहानी"

द्वारा—प्रदीप कुमार शर्मा I. XII B₂

हमारे तिरंगे को भी अपना स्वरूप स्थिर करने में बहुतेरे संघर्षों का सामना करना पड़ा है। सन् १९०७ पहला वर्ष था जब स्वतन्त्रता प्रेमी देशभक्तों ने कलकत्ते में अपनी एक सभा में एक झण्डा फहराया था। इस झण्डे में तीन रंग थे—हरा, पीला और लाल सबसे ऊपर हरा रंग था, बीच में पीला और नीचे लाल। हरे रंग की पट्टी में अष्ट कमल भी अंकित था, बीच वाली पट्टी में नीले रंग से 'वन्दे-मातरम्' लिखा हुआ था। नीचे वाली पट्टी में दाहिनी ओर चन्द्रमा तथा तारा एवं बांये हिस्से में सूर्य का चिह्न अंकित था। पर तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने उस झण्डे के फहराने वालों को देश निकाला दे दिया।

यह देशभक्त विदेश तो भेजे गये, किन्तु वहां भी अपने संग्राम को जारी ही रखा। वहाँ इन लोगों ने पहले झण्डे में कुछ परिवर्तन कर एक नये झण्डे का निर्माण किया। इस नये झण्डे की निचली दोनों पट्टियां तो ज्यों की त्यों रहीं, लेकिन ऊपर वाली पट्टी में अष्ट कमल के स्थान पर एक ही कमल रखा गया। तथा शेष सात कमलों के स्थान पर सात तारे जड़ दिये गये। इस झण्डे को मादाम कमा (Madame-Coma) ने तैयार किया था। जर्मनी में रहकर इन्होंने कितनी जगह सभा करके इसे फहराया।

प्रश्न उठता है कि सदेश में रहने वाले देश-भक्त गण भी तो फहराने के लिए किसी न किसी झण्डे का व्यवहार अवश्य करते होंगे? भारतवर्ष में उन दिनों होम रूल आन्दोलन जोरों पर था। इस आन्दोलन के नेता लोकमान्य तिलक थे। उन्होंने एक झण्डे का निर्माण किया था। जिसमें ५ लाल और ५ हरे रंग की पट्टियां थीं। यह पट्टियाँ एक पर एक रखी गईं थीं जैसे लाल फिर हरा, फिर लाल इसी तरह। झण्डे के ऊपर किनारे पर बांयी ओर यूनियन जैक अंकित था। और दाहिनी ओर चन्द्रमा और तारा तथा बीच में सात और तारे जड़ दिये गये थे। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि यूनियन जैक तो इग्लैंड का झण्डा है फिर उसे अपने झण्डे में कैसे स्थान मिल गया? लेकिन बात कुछ ऐसी ही थी जिस से इन देशभक्तों ने उसे अपने झण्डे में स्थान दे दिया था। असल बात यह थी कि अंग्रेजों से समझौता करने हेतु यूनियन जैक को भारतीय झण्डे में स्थान देना आवश्यक था। इस शर्त के बाद ही अंग्रेजों ने हमें कुछ सुविधाऐं प्रदान करने की स्वीकृति दी थी, किन्तु इस झण्डे को जनता की मान्यता नहीं मिल सकी। फलतः यह झण्डा अधिक दिनों तक नहीं टिका।

इसके बाद राष्ट्रपिता गाँधी जी के पसन्द का एक झण्डा आया। उसमें भी तीन पट्टियाँ थीं। ऊपर वाली उजली, बीच वाली हरी, और नीचे वाली लाल रंग की। बीच वाली पट्टी में चर्खे को भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान दिया था। पर कांग्रेस द्वारा इसे मान्यता नहीं मिल सकी। क्योंकि इसे महात्मा गांधी पसन्द कर चुके थे इसीलिए इसे सर्वत्र फैराया जाने लगा और इसी प्रकार दस साल बीत गये।

दस साल के बाद सन् १९३१ ई० में एक आदर्श ध्वज-निर्माण के लिए एक समिति की स्थापना की गई। इस समिति के निर्णय के अनुसार एक बिल्कुल सादा झण्डा तैयार किया गया जिस में केवल एक रंग था। झण्डे के बायें किनारे पर लाल भूरे रंग का चर्खा भी अंकित था। इस झण्डे को कांग्रेस की बैठक में प्रतुत किया गया। इसे भी कुछ कारणवश अस्वीकार कर दिया गया।

फिर एक नवीन झण्डा तैयार किया गया और झट इसे काग्रस की बैठक में पास कर दिया गया। यह झण्डा कोई और नहीं वरन् यही तिरंगा था, ऊपर केसरिया, बीच में उजले और नीचे हरे रंग वाला। उजली पट्टी में चर्खे को स्थान दिया गया था। इस झण्डे में रखी गई प्राय: सभी बातें किसी न किसी उद्देश्य की प्रतीक थीं। जैसे रंगों को ही लीजिए। केसरिया यदि उत्साह और त्याग का प्रतीक है तो उजला शान्ति एवं सत्य पर दृढ़ रहने का बोधक, उसी प्रकार हरा रंग समृद्धि, उर्वरत्व एव प्रसन्नता को घोषित करता है और चर्खा प्रगति तथा जीवन का द्योतक है।

इस प्रकार सन् १९३१ ई० में चर्खे वाला तिरंगा तैयार हुआ। इस झण्डे को सब ने स्वीकार किया। १९३१ के बाद वाला स्वतन्त्रता संग्राम भी इस झण्डे के नीचे लड़ा गया। इस की प्रतिष्ठा की रक्षा हेतु लोग जिये तथा मरें। इस झण्डे को लहराता देख कर लोगों के सीने तन जाते थे। वस्तुत: यह तिरंगा सर्वजन प्रिय हो उठा। किन्तु अभी भी इस में एक कमी रह गई थी और उसको स्वर्गीय नेहरू ने दूर किया। २२ जुजाई १९६७ में उन्होंने चक्र वाला झंडा प्रस्तुत किया।

अपने इस झंडे को प्रस्तुत करते हुए कहा था, "यदि हम लोगों के झंडे में एक तरफ चर्खा रहता है तो दूसरी ओर उस का तकुआ। दूसरी ओर से देखने पर यह पलट जाता है। झंडे के एक तरफ के चिह्न से दूसरी तरफ के चिह्न का मेल बैठना जरूरी है। लेकिन जिस चिह्न से लोगों का हृदय जुड़ा हुआ है उसे हटाया भी नहीं जा सकता। अत: चर्खे का स्थान झंडे में जरूर रहेगा लेकिन उसका पहिया रहेगा और यह पहिया भी कुछ विशेष प्रकार का होगा। जिस पहिये को हम अपने झंडे में स्थान देना चाह रहे हैं वह अशोक स्तम्भ में वर्तमान है। इसे हम पहिया कहें या चक्र। यह हमारी प्राचीन संस्कृति का चिह्न है।"

डाक्टर राधाकृष्ण ने भी नेहरू जी के इस प्रस्ताव का समर्थन किया और कहा कि यह चक्र गति का द्योतक है। जहाँ गति नहीं, वहाँ जीवन कहाँ ? यह चक्र शान्ति के साथ सुधार लाने की बात भी कहता है। चर्खे में भी यही बात है। अत: उन्होंने जनता से अपील की, कि वे इस चक्र को मान लें।

इस प्रकार तिरंगा झंडा तैयार हुआ सर्वत्र फहराया जाने लगा। आज भी हम यही झंडा फहराते हैं और सदा फहराते रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी विवेकानन्द और आज की शिक्षा

लेखक:—राजीव कुमार XI B_2

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः ।।
अभ्युत्थान, हि धर्मस्य, तदात्मान सृज्याम्यहम् ।।

युगों पूर्व कुरूक्षेत्र-युद्ध क्षेत्र में मोह ग्रस्त, अर्जुन को महायोगी पुरुष श्रीकृष्ण द्वारा सुनायी गयी, यह पवित्र गीता की वाणी एक बार पुनः सत्य सिद्ध हुयी । पदाक्रान्त, पराधीन भारत माता........ चारों ओर निराशा और अज्ञान का घोर अन्धकार छाया था । विदेशी सभ्यता का राहु भारतीय संस्कृति को ग्रसित कर रहा था । आहत, पीड़ित, बन्दिनी भारत माता वन्धनों में पड़ी सिसक रही थी । तब एक भारतीय सन्यासी माँ शक्ति की आराधना कर उसे जागृत कर रहा था । यह थे अष्ट सिद्धि व नव निद्धि की प्राप्त स्वामी रामकृष्ण परमहंस ।

एक दिन माँ काली के मन्दिर में परम सिद्ध स्वामी रामकृष्ण परमहंस युवक नरेन्द्र को अपने सम्मुख देख प्रलाप कर उठे ......मिल गया, जिसकी तलाश मुझे थी, वह मिल गया .... .. । रामकृष्ण से महागुरु और नरेन्द्र जैसा शिष्य यह अभूतपूर्व मिलन था । गुरुदेव के चरणों में समर्पित यह विलक्षण प्रतिभाशाली शिष्य स्वामी विवेकानन्द के नाम से जगत विख्यात हुआ ।

स्वामी रामकृष्ण परमहस के निर्वाण के पश्चात गुरुदेव की चिता की राख की शपथ लेकर स्वामी विवेकानंद ने गुरुदेव के संकल्प को पूरा करने का व्रत लिया । कठोर साधना और तपश्चर्या द्वारा आत्म-शक्ति और ज्ञान को विकसित कर स्वामी विवेकानन्द ने समाज में एक भीषण क्रान्ति का सूत्रपात किया ।

उन्होंने सारे भारत का भ्रमण किया । अपनी प्यारी मातृभूमि और देश-वासियों की दुर्दशा देख उनका हृदय पीड़ा से कराह उठा । एक संकल्प, एक विचार उनके मस्तिष्क में कौंध गया । उन्होंने विदेश यात्रा में शिकागो के विश्वधर्म सम्मेलन में अपने प्रवचन द्वारा भारतीय संस्कृति की धाक जमा दी । उन्होंने पश्चिमी देशों का दौरा कर भारतीय संस्कृति की मान्यता विदेशों में स्थापित की । भारत लौटने पर उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ ।

भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा के गौरव के पुर्नस्थापन के लिये उन्होंने घोर प्रयत्न किये । अपने प्रवचनों के द्वारा उन्होंने भारतीयों को सावधान किया और कहा—

प्यारे भारत वासियों ।

हमारी दुर्दशा का मूल कारण यह नकारात्मक शिक्षा प्रणाली है । वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल क्लर्क पैदा करने की मशीनरी मात्र है । यदि केवल यह इसी प्रकार की होती तो भी मैं ईश्वर को धन्यवाद देता । किन्तु इस दूषित शिक्षा प्रणाली द्वारा शिक्षित भारतीय युवक अपने पिता, अपने पूर्वजों, अपने इतिहास एवं अपनी संस्कृति से घृणा करना सीखता है । यहाँ तक कि पवित्र वेदों, पवित्र गीता को थोथा एवं झूठा समझने लगता है । अपने अतीत, अपनी संस्कृति पर गौरव करने के बदले वह उनसे घृणा करने लगता है । और विदेशियों की नकल करने में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरव का अनुभव करता है। पचास वर्षों की इस दूषित शिक्षा प्रणाली का दुष्प्रभाव स्पष्ट लक्षित है कि एक भी यथार्थ व्यक्तित्व के निर्माण में यह पद्धति असफल रही है।

ऐसी शिक्षा का महत्त्व ही क्या जो हमें केवल परतन्त्र बनने का मार्ग ही दिखाती है, जो हमारे गौरव, स्वावलम्बन एवं आत्मविश्वास का हनन करती है। जो हमारे वस्तुतः उन्नति का मार्ग अवरुद्ध करती है। जिसे पाकर हम स्वतन्त्र रूप से कुछ भी करने में असमर्थ रहते हैं। जिसे पाकर हमें नौकरियों के लिये दर दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। जो शिक्षा ....हमें चरित्र बल ......आत्म-विश्वास ..... संघर्ष-शक्ति और सिंह का सा साहस करने में असमर्थ है तो वह शिक्षा व्यर्थ है।

अब प्रश्न उठता है कि सच्ची शिक्षा क्या ?

सच्ची शिक्षा वह प्रशिक्षण है. जिसके द्वारा विचार धारा एव भावाभिव्यक्ति को नियोजित, नियमित एवं कल्याणकारी बनाया जा सके।

सच्ची शिक्षा वह है, जो मानव बुद्धि-ज्ञान एवं दृष्टिकोण को विकसित कर व्यापक बना सके और व्यक्ति में सत्य प्रियता एवं कार्य दक्षता उत्पन्न कर सके।

सच्ची शिक्षा का लक्ष्य यथार्थ मानव का निर्माण होता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल मानव-मस्तिष्क को सूचनाओं एवं जानकारियों का कोष ही बनना नहीं है। मनुष्य क्रियात्मक रूप से उनका जीवन में सदुपयोग करता है। जो शिक्षा व्यवहारिक पहलू से शून्य है, व्यर्थ है। शिक्षा का उद्देश्य मानव का पूर्ण विकास होना चाहिए। आज की शिक्षा उद्देय हीन है, बी० ए०, एम० ए० की उपाधियाँ प्राप्त करने के पश्चात भी युवक स्वतन्त्र रूप से अपनी आजीविका नहीं कमा सकता। ऐसी अर्थहीन शिक्षा से क्या लाभ ? देश, काल एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमें अपनी शिक्षा पद्धति में कुछ महत्त्व पूर्ण परिवर्तन करने होंगे। वह शिक्षा जो समय के अनुकूल नहीं है, व्यर्थ है। देश के कर्णधारों का ध्यान जितना शीघ्र इस ओर जाये, उतना ही देश के लिए हितकर है।

—जीवन–ज्योति–जले—

असन्तुष्ट जन–मन की अभिलाषा का पुष्प खिले,
श्रम का हो सम्मान, धरा की उपज कृषक ही ले !
जीवन-ज्योति जले !

मुक्तराष्ट्र के शिशु को नूतन वातावरण मिले,
जले कुटिल वैषम्य, अनैतिकता का भवन हिले,
जीवन-ज्योति जले !

युग-युग से सोई भारत की संस्कृति करवट ले,
विश्रृंखलित, दलित मानव-स्वर एक साथ निकले,
जीवन-ज्योति जले।

गंगाराम 'पथिक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय

कु० पुष्पा पालीवाल, कक्षा ११ ए

(१)

आज शत्रु की हुई पराजय,
आज हमारी हुई विजय है,
हम अजेय हैं, हम अजेय हैं,
पाकिस्तानी बंग विलय है।

(२)

आज अधर्म धर्म से हारा,
अथवा पाप पुण्य से हारा,
देखो, मानवता के हत्यारों ने,
उत्तर पाया खूब करारा।

(३)

किया शत्रु ने आत्म समर्पण,
यहिया खां ने सब कुछ खोया,
देखो आज अरोड़ा सम्मुख,
दुष्ट नियाजी जी भर रोया।

(४)

देखो आज युधिष्ठिर जीता.
कलियुग का दुर्योधन हारा,
अथवा कहिये श्री राम ने,
पाकिस्तानी 'रावण' मारा।

(५)

वैरी अचरज मान रहा है,
प्रतिशोध को ठान रहा है।
'बदला लूंगा' कहते भुट्टो,
पर दिल दहशत मान रहा है॥

(६)

'दुर्गा देवी' ने सचमुच ही,
असुरों का अब दमन किया है,
अपना खप्पर ऊपर तक भर,
अरि के दल का दलन किया है।

(७)

आज विजय का पर्व सुहाना,
हम सबको अब विजय गर्व है,
वाणी करती नव-अभिनन्दन,
नये वर्ष का नया पर्व है।

(८)

प्रभु ने इच्छा पूरी कर दी,
विजय-दिवस हमको दिखलाया,
दर्प दलन दुश्मन का करके,
बंग देश को मुक्त कराया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"युद्ध काल में छात्रों का योगदान"

राजेन्द्र नाथ कौशिक, १२ $ब_2$

किसी देश के ऊपर जब युद्ध के बादल मंडराये हुए हों अथवा युद्ध अनिवार्य हो गया हो या युद्ध एक उग्र रूप धारण कर गया हो, तो उस समय उस देश के नागरिकों का एक कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अनुशासनबद्ध होकर देश की रक्षा में तन-मन-धन से जुट जायें। कोई भी देश, जाति अथवा राष्ट्र बिना अनुशासन के जीवित नहीं रह सकता। जिस देश में अनुशासन, शील, सौजन्य और निर्भीकता पल्लवित और पुष्पित होती रहती हो तो उस देश के ऊपर कोई भी देश कुदृष्टिपात नहीं कर सकता है।

जिस समय युद्ध हो रहा हो तो उस देश के आधार–स्तम्भ छात्र समुदाय का एक विशिष्ट कर्त्तव्य हो जाता है, कि वे अपनी शिक्षा के साथ-साथ समाज के प्रत्येक वर्ग को अनुशासन में रखने का प्रयत्न करें। युद्ध काल में छात्र किसी भी प्रकार का आन्दोलन न करें, और देश के पंच मार्गियों से सावधान रहते हुए उन्हें नष्ट करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करें।

"राष्ट्र जागरयामो वयम्"—अर्थात् हम सदा देश के लिये जागरूक रहें। इस सिद्धान्त का निरन्तर पालन करते चलें। छात्रों का यह भी कर्त्तव्य हो जाता है, कि वे देश के मर्म स्थानों, रेलवे स्टेशन, फैक्ट्रियों, हवाई अड्डों और विशिष्ठ राष्ट्रीय सस्थानों की रक्षा का भार स्वयं वहन करें। इसके साथ-साथ स्नेह और दृढ़ता का आश्रय लेते हुए जाति और धार्मिक विषमता को समाप्त करने का प्रयत्न करें। हवाई आक्रमणों से जनता को सुरक्षित रखने के जो प्रयास राष्ट्र के द्वारा प्रस्तुत किये गये हों, उनमें पूर्ण रूप से सहयोग दें। जो लोग देश के प्रति कृतघ्नता का प्रदर्शन करते हों उनको समझाकर अच्छे मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना चाहिये।

किसी देश के छात्र उस देश के भावी कर्णधार होते हैं। उनका कर्त्तव्य हो जाता है कि वे देश के प्रत्येक उत्तरदायित्त्व को वहन करने के लिये तैयार रहें और गीता के द्वारा प्रस्तावित निष्काम कर्मयोग का आश्रय लेकर देश के उत्थान में अग्रसर हों। आवश्यकता पड़ने पर हथियार लेकर रणक्षेत्र में लड़ने के लिये भी वे तैयार रहें।

इस प्रकार जिस देश के छात्र देश प्रेम से ओत प्रोत हों, और ज्ञान-विज्ञान से जिनकी बुद्धि सुगन्धित हो गई हो, वे राष्ट्र के सच्चे प्रहरी कहलाते हैं। वे देश की रीढ़ होते हैं। चलकर ये ही राष्ट्र की सरकार का निर्माण करते हैं। इसलिये छात्रों का राष्ट्र-रक्षा में महत्त्व है।

इस प्रकार छात्र इस विश्व में उस फूल के समान हैं, जो अभी पूरा विकसित नहीं हुआ है। परन्तु कुछ काल के पश्चात् यही सुगन्ध प्रदान करता हुआ राष्ट्र का सिर मौर बनता है। इसलिये यदि छात्र शिक्षण संस्थाओं से भी वंचित हो जाता है तो भी उसे राष्ट्र की सुरक्षा में अग्रसर रहना चाहिये जिससे देश का बुद्धिजीवी वर्ग अपने को सुरक्षित अनुभव करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रों में यदि अनुशासन हीनता बढ़ती जाये तो वही आगे चलकर राष्ट्रों को नष्ट भ्रष्ट कर सकती है। जहाँ हम छात्रों की अनुशासन प्रियता क बारे में बात करते हैं, वहां हमारा यह भी कर्त्तव्य हो जाता है कि छात्रों की जीवन पद्धति को सतत् शुद्ध रखने के लिये भी प्रयत्न किया जाये नहीं तो राष्ट्र की रीढ़ टूट जायेगी और राष्ट्र कुछ काल पश्चात् दासता की बेड़ियों में जकड़ जायेगा।

उपरोक्त भावनायें छात्र के अन्दर कूट-कूट कर भरी जानी चाहियें। देश की सुरक्षा छात्र समुदाय पर आधारित है। इसलिये छात्रों के चरित्र को सुधारना आवश्यक है। युद्धकाल में छात्रों को आपसी फूट समाप्त कर देनी चाहिये और अपनी एकता व संगठन का प्रदर्शन करना चाहिये। यदि हमारे राष्ट्र पर कोई भी संकट उत्पन्न होता है, तो हम पूर्ण शक्ति से उस संकट का सामना कर उसे समाप्त कर देंगे। संकट के समय छात्र समुदाय को पूर्णतया राष्ट्र की सुरक्षा का प्रयत्न करना चाहिये।

पश्चिम पाकिस्तान द्वारा पूर्वी बंगाल के शोषण के आंकड़े

विषमता का विषय	बंगला देश	पश्चिम पाकिस्तान
जनसख्या	७ करोड़ १० लाख	६ करोड़ ८ लाख
राजस्व खाते व्यय	१,५०० करोड़ रु०	५,००० करोड़ रु०
विकास खाते व्यय	३,००० करोड़ रु०	६,००० करोड़ रु०
विदेशी सहायता	२० प्रतिशत	८० प्रतिशत
विदेशी माल का आयात	२५ प्रतिशत	७५ प्रतिशत
केन्द्रीय सरकार की नौकरी	१०० में १५ व्यक्ति	१०० में ८५ व्यक्ति
सेना में नौकरी	१०० में १० व्यक्ति	१०० में ९० व्यक्ति
प्रति मन चावल	५० रु०	२५ रु०
प्रति मन आटा	३० रु०	१५ रु०
प्रति सेर सरसों का तेल	५ रु०	२-५० रु०

उपर्युक्त आँकड़ों से ज्ञात होता है कि किस प्रकार पाकिस्तान ने बंगला देश का शोषण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगला देश के प्रधान मंत्री—

श्री शेख मुजीबुर्रहमान्

मुक्ति प्राप्त करने के लिये सम्भवतः किसी भी देश ने इतना रक्त नहीं बहाया होगा जितना कि बंगला देश ने। किसी देश के प्रधान मन्त्री ने इतने कष्ट न उठाये होंगे, जितने कि शेख मुजीबुर्रहमान ने। स्वतन्त्रता प्रेमी सभी मानव इस लौह-पुरुष के सन्मुख नतमस्तक हैं।

इनका जन्म फरीदपुर ग्राम में १६१६ ई० में हुआ था। कलकत्ते के इस्लामिया कॉलिज से इन्होंने १६४७ ई० में बी० ए० पास किया। सन् १६४८ में ढाका विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। भाषा आन्दोलन का सफल संचालन किया, जिसके फलस्वरूप बंगला भाषा ने राज्य की भाषाओं में प्रमुख स्थान प्राप्त किया।

१६४५ में अवामी लीग की स्थापना में महत्त्व-पूर्ण कार्य किया। १६५२ ई० में अवामीलीग के जनरल सेक्रेटरी चुने गये। पूर्वी पाकिस्तान में सन् १६५४ में हुये प्रान्तीय चुनावों में सफलता प्राप्त करने पर संयुक्त सरकार में मन्त्रीपद पर इनकी नियुक्ति हुई। मन्त्रि-मण्डल भंग होने पर इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जनरल अयूब जब पाकिस्तान के तानाशाह बन गये, तो इन्हें फिर, कारागार में डाल दिया गया।

सन् १६६६ में अवामीलीग के अध्यक्ष बने और पूर्वी पाकिस्तान के शासन के लिये ६ सूत्री कार्य-क्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। 'अगरतल्ला-कांसप्रेसी केस' से सम्बन्धित करके फिर इन्हें जेल में डाल दिया। जनता के भीषण आन्दोलन ने इन्हें सन् १६६६ में जेल से मुक्त कराया।

१६७० ई० में जो आम चुनाव हुये उसमें राष्ट्रीय एसेम्बली के लिये शेख ने दो स्थानों से चुनाव जीता। एक स्थान से तो शेख बिना विरोध के ही चुनाव जीत गये। इस चुनाव में अवामीलीग को बहुत सीट प्राप्त हुईं।

अवामीलीग की इस भारी विजय पर याह्या शासन बौखला गया और शेख को नीचा दिखाने के लिये याह्या ने भुट्टो को साधन बना कर बेचारे सरल स्वभाव वाले शेख को राजनैतिक षडयन्त्र में उलझाकर, उनसे वार्ता का ढोंग रच कर याह्या खां ने इन्हें फिर कैद कर लिया, और पूर्वी पाक में नर-संहार आरम्भ कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर सेनानियों के ये गौरव पूर्ण अलंकरण

कु० पवन रेखा पुंज, कक्षा ११ बी,

अभी पीछे हुये भारत पाक युद्ध में हमारी सशस्त्र सेना के तीन अगों ने चौदह दिन के अल्प काल में जन-धन की कम से कम क्षति के साथ जिस प्रकार दुश्मन को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया वह विश्व में अद्वितीय घटना है। इससे दिगदिगान्त तक भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी और सेना के साहस और शौर्य की धाक जमी है। विजय के इन गौरव क्षणों में जवानों द्वारा अपूर्व शौर्य प्रदर्शन के उपलक्ष्य में विभिन्न अलकारों द्वारा सम्मानित होते देख, किस भारतीय को उल्लास और गौरव न होगा ?

इन अलंकारों को कोई भी ऐसा व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जो भारत गणराज्य की सशस्त्र सेनाओं के किसी भी अग-जल, थल एवं नभ, सुरक्षित, प्रादेशिक या विधि पूर्वक गठित किसी अन्य सेना का सदस्य हो और युद्ध के समय शौर्य, पराक्रम, अभूतपूर्व कौशल और सूझ-बूझ का परिचय दें !

ये सभी अलंकार, सम्मानित होने वाले योद्धा को या फिर यदि उसको मरणोत्तर पुरस्कृत किया गया हो तो, उसकी विधवा पत्नी और उत्तराधिकारी को, हमारे महामहिम राष्ट्रपति के कर कमलों द्वारा विशेष समारोह में प्रदान किए जाते हैं।

वीरता के सूचक ये सभी पदक विभिन्न धातुओं के गोलाकार बने होते हैं। उनके पृष्ठ भाग पर हिन्दी, अंग्रेजी में, कमल पुष्प सहित उस विशिष्ट पदक का नाम अंकित रहता है। पदक विभिन्न रंगों के सवा इन्च चौड़े रेशमी फीते के सहारे सीने पर बाँयीं ओर धारण किए जाते हैं।

परमवीर चक्र

वीरता और शौर्य के लिए दिए जाने वाले पुरस्कारों में सर्वोच्च तथा सबसे अधिक सम्मान जनक है। यह तीनों सेनाओं के किसी भी जवान को शत्रु के सामने असीम-शौर्य, अदम्य साहस दिखाने या असाधारण आत्म बलिदान करने पर दिया जाता है। यह पदक ठोस काँसे का बना होता है। इसके मुख भाग पर भारतीय राजचिह्न तथा इन्द्र के वज्र की चार प्रतिमूर्तियाँ अंकित होती हैं। इसको धारण करने के लिए कत्थई रंग के रेशमी फीते का प्रयोग किया जाता है।

इस सर्वोच्च पुरस्कार पाने वाले सैनिक को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार द्वारा चार हजार रुपये नकद तथा पचास रुपये मासिक भत्ता दिया जाता है !

परमवीर चक्र सर्व प्रथम मेजर सोमनाथ शर्मा को सन् १९४७ में श्रीनगर में तथा १९६५ में अब्दुल हमीद एवं लैफननैन्ट कर्नल ए० बी० तारापोर को मिला।

"महावीर चक्र"

यह चाँदी का बना होता है। इसके मुख भाग पर पंच कोण नक्षत्र और बीच के उभरे हिस्से पर राष्ट्रीय चिह्न अंकित होता है। इसके लिए जिस फीते का प्रयोग किया जाता है उसका आधा भाग नारंगी तथा आधा सफेद होता है।

इस चक्र के प्राप्त कर्त्ता को दो हजार रुपय नकद तथा तीस रुपयें मासिक भत्ता दिया जाता है।

"वीर चक्र"

यह भी चांदी का बना होता है। इसके मुख भाग पर पंचकोण नक्षत्र तथा बीच की परिधि पर राष्ट्रीय चिन्ह अंकित रहता है। इसके लिए नारंगी तथा नीले फीते का प्रयोग किया जाता है। वीर-चक्र पाने वाले योद्धा को एक हजार रुपयें नकद तथा दस रुपयें आजीवन मासिक भत्ता मिलता है।

"अशोक चक्र"

युद्ध के अलावा अन्य विशेष परिस्थितियों में शौर्य प्रदर्शन करने पर अशोक चक्र प्रदान किया जाता है इसके तीन वर्ग हैं।

अशोक चक्र वर्ग—१: यह चक्र आकार में गोल तथा गिल्ट गोल्ड का बना होता है। इसके मुख भाग पर अशोक चक्र की प्रति कृति अंकित रहती है, जो कमल के फूलों के हार से घिरी रहती है। इसे हरे रंग के फीते द्वारा धारण किया जाता है। जिसके बीच में नारंगी रंग की रेखा अंकित रहती है।

अशोक चक्र वर्ग-२: यह आकार प्रकार में प्रथम वर्ग के चक्र की तरह होता है। जिसे हरे रंग के रिबन से लटका कर पहनते हैं। इसमें नारंगी रंग की दो रेखाएं अंकित होती हैं। इसे कीर्ति चक्र भी कहते हैं।

अशोक चक्र वर्ग—३: आकार प्रकार में यह पहले दो वर्गों के समान होता है, और इसके फीते में तीन रेखायें होती हैं। इसे शौर्य चक्र कहते हैं।

"सामान्य सेवापदक"

युद्ध क्षेत्र में जिन सैनिकों की योग्यता या वीरता पदक योग्य नहीं मानी जाती, उनका जिक्र खरीतों में किया जाता है। अथवा उनको सम्मानित करने के लिए कमल की पत्ती का प्रतीक भेंट किया जाता है। यह परम्परा १५ अगस्त १९४७ से प्रारम्भ हुई।

प्रादेशिक सेना के कमीशंड अफसरों का सम्मान करने के लिए उनकी बीस साल की बहुमूल्य सेवा के लिए अलंकरण (डेकोरेशन) दिए जाते हैं। इस आर्मी के जूनियर कमीशंड और नान कमीशंड अफसरों को बारह वर्ष की सुयोग्य सेवा के बाद अलंकरण प्राप्त होते हैं।

न होने दूंगी अत्याचार,
चलो मैं हो जाऊँ बलिदान,
मात्र-मन्दिर में हुई पुकार,
चढ़ा दो मुझको हे भगवान्।

—सुभद्रा कुमारी चौहान

पुस्तकालय 113427 गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी जी की भक्ति-भावना

राकेश कुमार XII B,

> 'तुलसी जयन्ती' १९७१ को आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता, में प्रथम स्थान प्राप्त निबन्ध प्रस्तुत है। तुलसी का 'मानस अनुपम और अद्वितीय महाकाव्य है। अधिकारों की प्रतियोगिता में जब कि हम अपने कर्त्तव्यों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं, 'राम चरित मानस' का पठन-पाठन कल्याणप्रद होगा।
>
> —सम्पादक

"जयतिमर्कटाधीश, मृगराजविक्रम, महादेव, मुदमंगलालय, कपाली।
मोह-मद-क्रोध-कामादि खल-संकुला, घोर संसार निशिकिरणामली॥"

तुलसीदास जी के आविर्भाव के समय भारतवर्ष विदेशी शासकों से आक्रान्त था। वह समय दो विरोधी संस्कृतियों, साधनाओं, जातियों का सन्धिकाल था। देश की सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थिति छिन्न-भिन्न सी हो रही थी। उचित नेतृत्व के अभाव में जनता के समक्ष न कोई आदर्श था और न उद्देश्य। विदेशियों के सम्पर्क से भारतीयों में भी विलासप्रियता घर कर चुकी थी। निम्न वर्ण वालों में अशिक्षा और निर्धनता पर्याप्त मात्रा में थी। लोग अकर्मण्य होते जा रहे थे। साधु-सन्यासी हो जाना साधारण बात बन गई थी जैसा गोस्वामी जी ने स्वयं लिखा है:—

नारी गई और सम्पत्ति नासी।
मूड़ मुड़ाय भये सन्यासी'।

मूर्ख ब्रह्मज्ञानी बनने का दावा करते थे। निम्नवर्ण के व्यक्ति भी ब्राह्मणों, पण्डितों और विद्वानों के वाद-विवाद करने तथा आलोचना करने में आत्मतुष्टि का अनुभव करते थे:—

"ब्रह्म ज्ञान बिन नारि नर कहहिं न दूसर बात।
बाढ़हि सूद्र द्विजन्ह संग हम तुमसे कछुघारि॥"

विद्वानों और, पण्डितों और ज्ञानियों का समाज में विशेष आदर्श नहीं रहा था। इसके अतिरिक्त दुराचारी सम्यक् समादृत होते थे। पण्डित तो उसी को माना जाता था जो ज्यादा बोल सकता हो:—

"पण्डित सोई जो गाल बजावा।"

नारियाँ पुरुषों को इस प्रकार चलाती थीं जैसे मँदारी बन्दर को नचाता है: —

"नारि नचा मर्कट की नाई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की ऐसी ही कुछ परिस्थिति में सम्वत् १५९९ के लगभग गोस्वामी तुलसीदास, जिनका वास्तविक नाम 'रामबोला' था, का जन्म हो गया। जन्म स्थान, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। अधिकतर विद्वान इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे तथा माता का नाम हुलसी स्वीकार करते हैं। ये राजापुर जिला बांदा के निवासी थे, जाति के ब्राह्मण थे। दुर्भाग्य से मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था में माता के वात्सल्य और पिता के संरक्षण से ये महापुरुष वंचित रहे जैसे कि स्वयं 'कवितावली' में लिखा :—

"मातु पिता जग जाय तज्यो,
विधि हूँ न लिखी कछु भाल भलाई ॥"

सम्वत् १६८० में आपका देहान्त हो गया था जैसा कि इस प्रचलित दोहे से सिद्ध होता है:—

"सम्वत् सोलह सौ असो असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यों शरीर ॥"

तुलसी ने अपने जीवन काल में अपने अगाध पांडित्य से ३७ ग्रन्थों की रचना की, परन्तु नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा केवल १२ ग्रन्थ ही प्रामाणिक माने जाते हैं। तुलसी उच्चकोटि के कलाकार, प्रकांड पण्डित, दर्शन और धर्म के व्याख्याता थे। उन्होंने राम की लोक पावन कथा द्वारा मानव जीवन की गुत्थियों को बड़ी कुशलता से तथा राजनीतिक· सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों के समस्त आदर्शों का सर्वाङ्गीण प्रतिपादन किया। तुलसीदास ने एक स्थान पर कहा है—-

"कीरति भनति भूति भल सोई,
सुरसरि सम सब कहुं हितहोई।"

अर्थात् यश, कविता और वैभव वही श्रेष्ठ हैं जिनमे गंगा के समान सबका कल्याण होता हो। इस दृष्टिकोण से तुलसी का साहित्य सभी प्रकार के व्यक्तियों के लिए उपयोगी हैं। ऊंचनीच, योग्य–अयोग्य सभी उसमें से अपने काम की बातें निकाल सकते हैं। यही कारण हैं कि तुलसी की "रामायण" निर्धन की झोपड़ी से लेकर राजप्रसाद तक समान रूप में समादृत होती हैं।

"रामचरितमानस" में तुलसीदास ने लोक-नायक, भक्तवत्सल, दशरथ नन्दन रामचन्द्र जी के जन्म से लेकर अन्त तक के सभी क्रिया-कलापों का "भक्ति–भाव" से सुन्दर वर्णन किया है, जिसे पढ़कर पाठकों का हृदय भगवान के श्री चरणों की गंगाजली में गोते खाने लगता है।

तुलसी भगवान के भक्त थे। आपने "रामायण" ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के हेतु मंगलाचरण स्वरूप गणेश सरस्वती की प्रार्थना करते हुये लिखा है:—

"वर्णनामर्थसंघानां रसानां छंद सामपि।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणोविनायकौ ॥"

भगवान शंकर की प्रार्थना करते हुये गोस्वामी जी कहते हैं कि:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धा: स्वान्त: स्थमीश्वरम् ।।"

तुलसी राम के आराधक थे। राम के शील-सौन्दर्य और आदर्श-चरित को लेकर उन्होंने काव्य-रचना की है। वह वर्णाश्रम-धर्म की स्थापना करने वाले वैष्णव भक्त कवि थे। उन्होंने अपने को राम का नौकर (दास्यभाव से) मानते हुये उनकी भक्ति करके जीव और ब्रह्म की एकता प्रतिपादित की है। उनके राम आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं।

शैव अर्थात् शिव के भक्त और वैष्णवों अर्थात् विष्णु के भक्तों के तत्कालीन झगड़ों को समाप्त करने के लिए उन्होंने अपने राम को शिव-भक्त बनाया और उनसे कहलाया:—

"शिवद्रोही मम दास कहावा।
सो नर मोहि सपनेहुं नहिं भावा ।।"

ज्ञान, भक्ति और वैराग्य तीनों का समन्वित रूप प्रस्तुत करके "तुलसी" ने लोक धर्म की मर्यादा को पुनः बांधा। उनके इष्टदेव का आदर्श 'मेघ" अर्थात् बादल हैं, जो कल्याणकारी और नयनाभिराम हैं। उनकी दृष्टि में भक्त (साधक) का आदर्श "पपीहा" है—'चातक' है। तुलसी की भक्ति-भावना का अनुपम ग्रन्थ 'विनय-पत्रिका" है। भक्ति हृदय की भावुकता को बड़ी निपुणता के साथ महाकवि शिरोमणि तुलसीदास ने अपने ग्रन्थ में रक्खा है। आपने "विनय-पत्रिका" नामक ग्रन्थ में अपने विषय को सफल बनाने के लिए सभी देवी-देवताओं की स्तुति की है:— गणेश की स्तुति करते हुये कहते हैं:—

"गाइये गणपति जगवंदन–शंकर सुवन भवानी नन्दन।
सिद्धि सदन, गजबदन, विनायक। कृपासिंधु सुन्दर सब लायक
मांगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे ।।"

सम्पूर्ण जगत् के वन्दनीय, गणों के स्वामी श्री गणेश जी का गुणगान कीजिये।

'गगा स्तुति" करते हुये तुलसी कहते हैं कि हे—भागीरथ नन्दिनी! तुम्हारी जय हो, तुम मुनियों के समूह रूपी चकोरों के लिए चन्द्रिका रूप हों। मनुष्य, नाग और देवता तुम्हारी वन्दना करते हैं। भगवान के चरणों में से उत्पन्न होकर शिवजी के मस्तक पर शोभा पाती हो —

"जय जय भगीरथ नन्दिनी, मुनि चय–चकोर चन्दिनी।
नर–नाग–विवुध–बन्दिनी, जय जहु बालिका ।।"

भक्ति भाव से ओतप्रोत होकर आपने ग्रन्थों की रचना की है। आपने गुरु की स्तुति करते हुये कहा है कि—

"वंदौ गुरुपद कंज, कृपासिंधु नर रूपहरि।
महामोह तम पुंज, जासु वचन रविकर निकर।।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम का नाम तो प्रत्येक मनुष्य को लेना चाहिए। राम नाम के लेने से तो सब दोष दूर हो जाते हैं। अजामिल जैसे दुष्ट लोग भी राम का नाम लेने से इस भव-सागर से पार उतर गयें।

तभी तुलसी कहते हैं:—

"काहे न रसना, रामहि गावहि ?
निसिदिन पर अपवाद कृपा कत रटि रटि राग बढ़ावहि ॥"

अरी जीभ ! तू श्री रामजी का गुणगान क्यों नहीं करती ? दिन–रात दूसरों की निन्दा कर व्यर्थ क्यों आसक्ति बढ़ा रही है ?

तुलसीदास भगवान राम के लिए विनय से भरी पत्रिकायें भेजा करते थें। उन्हीं पत्रिकाओं का संग्रह "विनय–पत्रिका" हैं। तुलसी राम चन्द्रजी से विनय करते हुये कहते हैं कि आपके सिवाय और मेरा कौन हित चाहता है:—

"रामराय बिनु रावरे मेरे को हितु साँचो।
स्वामा-सहित सबसौं कहौं, सुनि गुनि विसेषि कोउ रेख दूसरी खाँचों ॥"

भगवान राम का दिव्य दरबार लगा है, प्रभु जगत् जननी श्री जानकी के सहित अलौकिक रत्नजड़ित सिंहासन पर विराजमान हैं। भरत, लक्ष्मण शत्रुघन और हनुमान जी सेवा में संलग्न हैं। उसी समय तुलसी की विनय पत्रिका आती हैं, तुलसी कहते है:—

मारुति-मन, रुचिभरत की लखि लषन कहीहै।
कलिकालहु नाथ ! नामसों परतीते-प्रीति एक किंकरकी निवही हैं।
सकल सभा सुनिलै उठी, जानी रीति रही हैं।
कृपा गरीब निवाज की, देखत गरीब को साहब बाँह गही हैं ॥

इस प्रकार तुलसी का भक्ति भाव सबसे उच्चकोटि का था।

नव हे, नव हे,

नव–नव सुषमा से मंडित हो,
चिर–पुराण भव हे, नव हे !
अपनी इच्छा से निर्मित जग,
कल्पित सुख, दुख के अस्थिर पग,
मेरे जीवन से हो जीवित,
यह जग का शव हे ! —पन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में प्रजातन्त्रीय समाजवाद

(श्री बी० एन० शर्मा एम० ए०, एल० टी०)

"हमारा उद्देश्य एक ऐसे आदर्श कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है जिसमें न कोई शोषण करने वाला हो और न कोई शोषित, जो क्षेत्रीय विरोध अथवा गुट बन्दी से रहित हो। ऐसे कल्याण कारी राज्य में वर्ग हीन समाज की स्थापना होगी हमारा उद्देश्य अपने राष्ट्र में समाज व नैतिकता का पुनः निर्माण करना है। संक्षेप में हम अपने सम्पूर्ण राष्ट्र में नवीन सामाजिक, साँस्कृतिक, नैतिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण का विकास करना चाहते हैं" हमारे राष्ट्र निर्माताओं के इन उद्गारों से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात वे देश में ऐसे समाजवाद की स्थापना चाहते थे जो मार्क्स तथा लेनिन के विचारों से मेल तो खाता था परन्तु फिर भी कुछ बातों में भिन्न था। आज भी हमारे नेताओं का उद्देश्य देश में समाजवाद की स्थापना करने का है परन्तु वे इसे प्रजातन्त्रीय शासन के अन्तर्गत करना चाहते हैं। इसलिये भारत में इसे प्रजातन्त्रीय समाजवाद के नाम से पुकारा जाता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव सभ्यता के विकास के साथ ही साथ सामाजिक न्याय और समाजवाद की स्थापना पर भी विचार किया जा रहा है। विश्व के विद्वानों ने समय समय पर व्यक्ति का व्यक्ति के द्वारा और एक वर्ग का दूसरे वर्ग के द्वारा किये गये शोषण के विरूद्ध आन्दोलन किये हैं। यूनान के विश्व विख्यात विद्वान प्लेटो ने अपनी "रिपब्लिक" नाम की पुस्तक में जिस आदर्शराज्य की कल्पना की थी वह समाजवाद के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उसने दार्शनिक शासकों को बताया कि आर्थिक समानता आर्थिक दोषों को दूर करने का एक मात्र उपाय है। तथाकथित इसाई युग में धर्म के नेताओं ने "इसाई समाजवाद" का नारा लगाया। मध्य युग में तो फ्यूडल प्रथा के अन्तर्गत जनता का सर्वाधिक शोषण हुआ। ऐसे समय में विद्वानों ने आदर्श समुदाय की स्थापना का उपदेश दिया जिससे प्रत्येक व्यक्ति को जीविकोपार्जन का अधिकार हो और व्यक्तिगत सम्पत्ति पर प्रतिबन्ध हो। इनमें से टामसमूर ने व्यक्तियों के लिये आर्थिक व राजनैतिक स्वतन्त्रा का समर्थन किया। आधुनिक समाजवाद लेसाज फेयर सिद्धान्त के विरूद्ध एक आन्दोलन है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को व्यक्ति के शोषण की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। इसके फलस्वरूप धन केवल मुट्ठी भर लोगों के नियन्त्रण में चला जाता है। समाज की इस बुराई को दूर करने के लिये समाजवाद सामाजिक न्याय तथा धन के समान वितरण का समर्थन करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार धन परिश्रम और पूंजी की उपज है जिसमें से पूंजीपति धन का अधिकांश भाग अपनी तिजोरियों में बन्द कर लेता है और मजदूर को अपने परिश्रम का उचित मूल्य नहीं मिलता। इसलिये समाजवादी पूंजी को चोरी समझते हैं। समाजवाद इस असामान्य वितरण को दूर करने के लिये ऐसी सामाजिक व्यवस्था कराना चाहता है जहाँ व्यक्ति को व्यक्तित्व के विकास का समान अवसर मिले तथा समान कार्य के लिये समान पारिश्रमिक मिले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तभी सम्भव हो सकता है जब उत्पादन के साधन एक व्यक्ति के हाथ में न होकर समाज के हाथ में हों। १७८६ की फ्रांसीसी क्रान्ति जिसने स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्वभाव का नारा विश्व को दिया, इसी असमानता तथा विशेष व्यक्तियों को विशेष सुविधायें देने के विरूद्ध थी। व्यवसायिक क्रान्ति के पश्चात तो समाजवाद का महत्त्व और अधिक समझा जाने लगा।

मार्क्स तथा ऐंजिल्स ने सम्पूर्ण विश्व को आधुनिक समाजवाद से पूर्ण अवगत कराया। उन्होंने विश्व के मजदूरों को एक हो जाने का परामर्श दिया और उन्हें बताया कि पूंजीवाद को नष्ट करने के लिये साम्यवादी क्रान्ति की आवश्यकता है। बीसवीं शताब्दी में लेनिन ने समाजवाद की स्थापना के लिये "श्रमिक तानाशाही" का आन्दोलन किया।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात भारत के सम्मुख भी देश और समाज के पुनर्गठन की समस्या थी। मार्क्स और लेनिन के प्रभाव से भारतीय भी न बच सके। उनमें यह दृढ़ विश्वास था कि देश की उन्नति तथा प्रगति का एक मात्र साधन समाजवाद की स्थापना है। अतः देश के विधान में प्रथम बार मूल अधिकारों का समावेश किया गया। इन मूल अधिकारों के पीछे यह भावना निहित है कि "स्वतन्त्रता कभी वास्तविक नहीं हो सकती जब तक कि शासन को जनता के प्रति उत्तरदायी न बनाया जायगा।" यह भी निश्चित है कि भारतवासी समाजवाद की स्थापना तो चाहते हैं परन्तु वे मार्क्स तथा लेनिन की भाँति साम्यवादी क्रान्ति और श्रमिकों की तानाशाही में विश्वास नहीं करते। इस लिये हमारे नेता शासन के प्रजातन्त्रीय ढाँचे में ही समाजवाद की स्थापना चाहते हैं। प्रजातन्त्रीय समाजवाद विश्व को भारत की अनोखी देन है क्योंकि समाजवाद के पश्चिमी विद्वानों के अनुसार प्रजातन्त्रीय साधनों से इसकी स्थापना नहीं हो सकती।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमारी पंच वर्षीय योजनाओं का गठन होता है। समाजवाद को सामाजिक रूप देने के उद्देश्य से ही योजनाओं को बनाते समय यह सोचा जाता है कि प्रजातंत्रीय साधनों से ही व्यक्तियों को देश की उन्नति तथा विकास का अवसर दिया जाय। देश के निर्वाचनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारतीयों का प्रजातंत्र में अटूट विश्वास है! समाजवाद के मार्ग को सुगम करने के लिये ही जमीदारी प्रथा का उन्मूलन कर दिया गया है क्योंकि यह मान लिया गया है कि भूमि पर अधिकार उसी व्यक्ति का है जो उसमें हल चलाता है। पंचायत राज्य, सहकारी खेती तथा सामुदायिक विकास योजनायें देश को समाजवाद की ओर अग्रसित करने वाले साधन हैं। हमारी प्रधान मन्त्री ने देशी नरेशों के प्रिवीपर्स समाप्त करके समानता की ही स्थापना नहीं की है बल्कि उन्होंने अपने इस साहसिक कार्य से समाजवाद का मार्ग और भी सरल कर दिया है।

भारतवासियों के लिये यह कोई नवीन विचार धारा नहीं है। देश की अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने भुवनेश्वर के अधिवेशन में घोषणा की थी कि देश से निर्धनता, बीमारी तथा अज्ञानता को दूर किया जायगा। व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा सुविधाओं को न्यूनतम स्थान दिया जायगा। सभी नागरिकों को बिना रंग-भेद के विकास का समान अवसर मिलेगा।

इन सब बातों से भारत ने विश्व को यह बता दिया है कि समाजवाद की स्थापना प्रजातन्त्रीय साधनों से भी हो सकती है। इसके लिये मार्क्स की श्रमिक क्रान्ति तथा श्रमिकों की तानाशाही अनिवार्य नहीं है। भारत का समाजवादी समाज एक वर्गहीन तथा जातिहीन समाज होगा जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारों की स्वतन्त्रता पर आधारित होगा। देश के स्त्री तथा पुरुषों को यह विश्वास है कि वे सत्य तथा अहिंसा के मार्ग पर चलकर एक नवीन समाज की स्थापना करेंगे। वे एक ऐसा समाज बनायेंगे जिसमें सभी को समान अधिकार मिलेंगे और सभी को विचार, आवागमन, ज्ञान के विकास की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी। वे प्रजातन्त्रीय साधनों से महात्मा गांधी के स्वप्न को पूरा करना चाहते हैं। वे हमें बिना किसी सहायता तथा सत्य के सिद्धान्तों से भटके बिना सदा आगे बढ़ने का उपदेश देते थे। हमारे नेताओं ने राष्ट्रपिता की इसी इच्छा को पूर्ण करने के लिये भारत में प्रजातन्त्रीय समाजवाद को स्थापित किया है।

परन्तु इसकी स्थापना में अभी अनेक बाधायें हैं जिन्हें हमें दूर करनी हैं। अभी तक हम जातीयता, प्रान्तीयता तथा साम्प्रदायिकता के बंधन को दूर नहीं कर सक हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि देश के निर्वाचनों मे उपरोक्त विचारों के कारण निश्पक्ष योग्य प्रतिनिधियों को उचित स्थान नहीं मिल पाता। हमें प्रजातन्त्र की स्थापना के लिये इन कमियों को दूर करना होगा। इसी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था को भी सुधारना होगा। उचित शिक्षा के न मिलने से ही हम अपने सामाजिक दोषों को दूर नहीं कर सके हैं। जो व्यवस्था इस समय हमारे देश में चल रही है वह पूंजीवादी देश ब्रिटेन की देन है। इस व्यवस्था से देश के नवयुवकों का मानसिक विकास नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में समाजवादी समाज की स्थापना की आशा निरर्थक है।

पण्डित नेहरू का कथन था कि भारत को किसी अन्य देश की नकल नहीं करनी चाहिये। हमें आत्म निर्भर बनना होगा। विश्व के शक्तिशाली देशों से हम कम से कम इतना तो सीख ही सकते हैं कि जिस प्रकार रूस का निवासी अपने को रूसी और अमेरिका का निवासी अपने को अमरीकन कहता है उसी प्रकार प्रत्येक भारत-वासी अपने को गर्व से भारतीय कह कर पुकारे, तभी सच्ची समानता तथा समाजवाद की स्थापना हो सकती है। यह भी सोचना भूल होगी कि प्रजातन्त्री समाजवाद की स्थापना कानून तथा शासन के द्वारा ही हो सकती है। इसके लिये हमें विचारों के संकुचित क्षेत्र को त्यागना होगा, जातीयता तथा साम्प्रदायिकता की बेड़ियों को तोड़ना होगा। व्यक्ति तथा देश की गरीबी दूर करने के लिये हमें अथक परिश्रम करना होगा। हमारी कर्त्तव्य निष्ठा, सेवा सहानुभूति की भावना तथा स्वय को सम्पूर्ण समाज के लिये बलिदान करने की इच्छा, समाजवाद की स्थापना में सहायक होगी।

इसमें सन्देह नहीं कि भारत ने प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों पर चल कर ही अपने शत्रु को मुँह तोड़ उत्तर दिया है। उसने यह सिद्ध कर दिया है कि सैनिक शासन तथा धार्मिक शासन जनता को उन्नतिशील नहीं बना सकते। परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय जगत के संकटों का सामना हम तभी कर सकते हैं जब हम सभी यह कह सकें कि देश हमारा है, शक्ति हमारी है और शासन हमारा है। हम सब एक हैं क्योंकि हमारे समाज में अमीरी, गरीबी का भेदभाव नहीं है। यहां सच्चा रूप है भारत के प्रजातन्त्रीय समाजवाद का जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को विचार, उन्नति, तथा अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र ण या त्रा

—जौहर से साभार—

(श्याम नारायण पाण्डेय)

जान समय रात का,
जान समय प्रात का,
वीर सब उछल पड़े,
महल से निकल पड़े,
दिवस के विकास में,
किरण के प्रकाश में,
गोलियां दमक उठीं,
बर्छियां चमक उठीं ।

× × ×

जयति जय निनाद से.
जयति-जयति नाद से,
गूँजने नगर लगा,
एक-एक घर लगा ।

जय उमे, गणेश जय,
रुद्र-हर-महेश जय,
जय विशुम्भ - मर्दनो,
जय महिष - विमर्दनी ।

जय असुर-विदारिणी,
जय त्रिशूल-धारिणी,
देवि, पथ प्रशस्त कर,
शत्रु, व्यूह त्रस्त कर ।

मां, न तनिक देर कर,
आज तू अहेर कर,
गरज—गरज हेर कर,
अहित मार घेर कर ।

× × ×

भक्त सिंह दल चला,
हां अकूत बल चला,
साथ चलीं डोलियाँ,
गूँज उठीं बोलियां ।

दुर्ग का महारथी,
समर-सूर सारथी,
बोल उठा ताव से,
राजसी प्रभाव से—

तुम अजर, बढ़े चलो,
तुम अमर, बढ़े चलो,
तुम निडर, बढ़े चलो,
आन पर चढ़े चलो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीति निपुण–चाणक्य—

(चाणक्य नीति से संकलन)

एस० पी० अग्रवाल, एम० काम०, प्रवक्ता–वाणिज्य

चाणक्य का संक्षिप्त परिचयः––

चाणक्य, जिनके विष्णुदत्त कौटिल्य एवं अन्य कई नाम थे, चषक का पुत्र था। इस योग्य ब्राह्मण का लालन पालन कुसुमपुर में हुआ था। नीति के आचार्य चाणक्य में अर्थ शास्त्र, राजनीति, रणनीति तथा कूटनीति आदि की अलौकिक क्षमता थी। इन्होंने समस्त आर्यावर्त को एक सूत्र में बांधा। चाणक्य भारतीय इतिहास के गिने चुने कर्मठ, चतुर तथा निर्भय विद्वान थे। इनमें देश प्रेम कूट कूट कर भरा था तथा साम्राज्य स्थापित करने की अपार शक्ति थी। इन्हीं ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सम्राट बनाकर मगध में राज्य पर बैठाया। सिल्यूकस ने चाणक्य की बहुत प्रशंसा की है।

राजनीति विशारद चाणक्य ने जीवन के हर पहलू पर अपने अनमोल सुझाव दिये। पथ्य-कुपथ्य, दुःख, सुख, रूप, यौवन, धर्म, ईश्वर, अर्थ, काम, मोक्ष, तप-दान, ज्ञान-अज्ञान, सम्मान-अपमान, काल-मोक्ष, पशु-पक्षी, विद्या-ब्राह्मण, आदि कोई विषय उनकी कलम से अछूता नहीं रहा।

इसके अतिरिक्त मानव सम्बन्धों, जैसे पुत्र, माता, पिता, गुरु–शिष्य, स्त्री-पुरुष, राजा-प्रजा, दुर्जन-सज्जन, बैरी एवं मित्र तथा स्वामी-सेवक आदि के विषय में भी अपने अमूल्य विचार दिये।

यहां पर उनकी उपरोक्त विषयों पर दी गई शिक्षाओं में से विशेषकर विद्या तथा गुरु-शिष्य के सम्बन्धों तथा जीवन के मार्ग दर्शन एवं सफलता की कुछ शिक्षाओं का संकलन दिया जा रहा है।

(अ) गुरु–शिष्य तथा विद्याः—

१—विद्या में कामधेनु के समान गुण हैं। यह असमय में भी फल देती है। विदेश में यह माता के समान है। विद्या गुप्त धन है, इसलिये इसे संचय करना चाहिये।

२—विद्वान की ही संसार में प्रशंसा होती है, वह ही सब स्थानों में आदर पाता है, विद्या ही से सब मिलता है, विद्या ही की सब स्थानों में पूजा होती है।

३—विद्याहीन मनुष्य का सौन्दर्य तथा यौवन बड़े कुल में उत्पन्न होने पर भी वैसे ही नहीं शोभते जैसे बिना गन्ध के टेसू के फूल।

४—धन हीन होने पर मनुष्य हीन नहीं गिना जाता, किन्तु जो विद्या रत्न से हीन है, वह सब वस्तुओं में हीन हैं।

५—जो सुख चाहे तो विद्या छोड़े, विद्या चाहे तो सुख छोड़े। सुखार्थी को विद्या और विद्यार्थी को सुख कैसे हो सकता है?

६—विद्यार्थियों को काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, शृङ्गार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल, अधिक निद्रा और अति सेवा इन आठों को छोड़ देना चाहिये।

७–बच्चों को दुलारने से बहुत दोष होते हैं और ताड़ना करने से बहुत गुण। इसलिये पुत्र और शिष्य को ताड़ना करना ही उचित है, दुलार नहीं।

८—विद्या बिना जीवन कुत्ते की पूंछ के समान व्यर्थ है क्यों कि कुत्ते की पूंछ न तो गोप्य इन्द्रियों को ढांक सकती है न मक्खी, मच्छर, आदि जीवों को उड़ा सकती है।

९—पढ़ना, जप और दान इन तीनों से कभी सन्तोष नहीं करना चाहिये।

१०–आलस्य से विद्या, दूसरे के हाथ में जाने से धन, बीज की कमी से खेती, सेनापति के बिना सेना, यह सब नष्ट हो जाते हैं।

११–राजा अपने राज्य में किये हुए पाप को, पुरोहित राजा के किये हुए पाप को, पति अपनी स्त्री के किये हुये पाप को तथा गुरु अपने शिष्य के किये हुये पाप भोगता है।

१२–मित्र न हो तो अच्छा पर कुमित्र होना अच्छा नहीं। शिष्य न हो तो अच्छा पर निन्दित शिष्य अच्छा नहीं।

१३–बुरे राजा के राज में प्रजा कैसे सुखी रह सकती है? बुरे मित्र से आनन्द कैसे हो सकता है? बुरी स्त्री से गृह कैसे अच्छा लग सकता है और बुरे शिष्य को पढ़ाने का यश कैसे प्राप्त हो सकता है? मूर्ख शिष्य को उपदेश करना, कर्कशा स्त्री का भरण-पोषण करना, दुखियों से व्यवहार करना पण्डितजनों को दुख का कारण होता है।

१४–दक्षिणा लेकर ब्राह्मण यजमान का, विद्या प्राप्त करके विद्यार्थी गुरु का उसी प्रकार त्याग कर देते हैं जैसे मृग जले हुए बन का त्याग कर देते हैं।

१५–जो मनुष्य एक अक्षर देने वाले को भी गुरु नहीं मानता, वह सौ बार कुत्ते की योनियों को भोगकर चान्डालों में जन्म लेता है।

१६–एक अक्षर भी उपदेश यदि गुरु शिष्य को कर देता है तो पृथ्वी पर कोई द्रव्य ऐसा नहीं है जिसको देकर शिष्य उऋण हो जाये।

(ब) जीवन का मार्ग-दर्शन एवं सफलता–

१—चाणक्य के अनुसार सफलता के चार मन्त्र हैं—निरंतर यह देखते रहना (१) कि समय कैसा है? (२) वह मेरे और मेरी विधियों के कितना अनुकूल अथवा प्रतिकूल है। (३) मेरे कौन कौन शत्रु अथवा मित्र हैं? (४) मुझमें कितनी शक्ति अथवा दुर्बलता है?

२—पीठ पीछे काम बिगाड़ने वाले और मुंह पर मीठी बातें बनाने वाले को इस प्रकार छोड़ देना चाहिये जैसे कि किसी घड़े में गले तक विष और मुंह पर थोड़ा सा दूध डाल दिया हो।

३—कुमित्र पर विश्वास कदापि न करें और मित्र पर भी विश्वास न करें क्यों कि मित्र रुष्ठ होने पर सब गुप्त बातों को खोल सकता है।

४—दुर्जन और सांप में से सांप अच्छा है क्योंकि सांप काल आने पर ही काटता है किन्तु दुर्जन तो पद पद में।

५—मूर्ख प्रिय भाषण नहीं बोल सकता और साफ-साफ कहने वाला छली नहीं हो सकता।

६— निन्दक सबसे बड़ा चान्डाल होता है।

७—मनुष्यों को सन्तोषरूपी अमृत से जो शान्ति और सुख होता है वह सुख धन के लोभियों को कदापि नहीं मिलता।

८—अत्यन्त सीधे स्वभाव से रहना भी अच्छा नहीं होता। वन में जाकर देखो सीधे ही वृक्ष काटे जाते हैं और टेढ़े खड़े रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९—जो सदा जैसा अन्न खाता है उसकी सन्तान वैसी ही होती है।

१०—दुर्जन दूसरे की यशरूपी अग्नि से जलते रहते हैं और उसके पद को नहीं पाते, इसलिए निन्दा करने लगते हैं।

११-जल, अन्न और प्रिय वचन पृथ्वी पर तीन ही रत्न हैं। मूर्खों ने पाषाण के टुकड़ों को ही रत्न मान रखा है।

१२—अन्याय से पैदा किया हुआ धन दस वर्ष तक ठहरता है और ग्यारहवें वर्ष में यह धन मूल सहित नष्ट हो जाता है।

१३-प्राणी अपने गुणों से उत्तमता पाते हैं, ऊंचे आसन पर बैठने से नहीं। क्या महल के ऊपर के भाग में बैठकर कौआ गरुड़ हो जायेगा ?

१४—गुण सर्व स्थान में पूजे जाते हैं, बड़ी सम्पत्ति नहीं पूजी जाती।

१५—ऐसा धन जो अत्यन्त पीड़ा से, धर्म त्याग से और बैरियों की शरण से मिलता हो, सो धन मुझको प्राप्त न हो।

१६—मान गंवा कर जीने से मर जाना अच्छा है।

१७—विष साँप के दांत में, मक्खी के सिर में और विच्छू की पूंछ में रहता है परन्तु दुर्जन के सारे शरीर में विष भरा रहता है।

१८—जिन छात्रों ने दान नहीं दिया है, कानों ने वेद, शास्त्र को नहीं सुना है, नेत्रों ने साधु का दर्शन नहीं किया है, पांवों ने तीर्थ गमन नहीं किया है, अन्याय से अर्जित धन से पेट भरा है और गर्व से सिर ऊंचा हो रहा है, अरे सियार। ऐसे नीच निन्दनीय शरीर को छोड़ दे।

सार्थकता

विज्ञान यदि मनुष्य की आत्मीयता पर पुल बांध कर उसे पार कर जाये, तो गति में वह चाहे सारे अंतरिक्ष को नाप ले, अपना गंतव्य नहीं मिल सकता। ज्ञान और भक्ति की तरह विज्ञान भी मनुष्य का अपने को खोजने का प्रयत्न ही है। क्षुद्र आत्मीयता में बूंद-बूंद जोड़ कर उसे विशाल बनाते रहने का संकल्प ही है। मैक्स प्लान्क ने हमारे इस अन्ध युग में विज्ञान के इस अर्थ को फिर से जीवित कर दिया है। सफलता, सिद्धि और कीर्ति के शीर्ष-स्थान पर खड़े होकर उन्होंने हमारे सामने फिर इस चिरन्तन सत्य को दोहराया है कि ज्ञान और विज्ञान, दोनों की चरम सार्थकता मानव-प्रेम की जय जयकार में ही है—

—अलबर्ट आयन्सटीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी–अध्यापक और माँ–बाप

(श्री सोहन लाल जी गुप्ता भाषण में जिस अलंकारिक शैली का प्रयोग करते हैं उसी प्रकार से आपकी लेखनी भी प्रभावित है। श्री गुप्ता जी का व्यक्तित्व साहित्य और विज्ञान के मिश्रण से गठित हुआ, किन्तु अंकों के डंकों से इस प्रकार दंशित है कि फिर-फिर गणित तथा अंकों की अद्भुत अभिव्यक्ति हुई है। प्रस्तुत लेख जहां सामाजिक और विचारोत्तेजक है, वहां शैली भी बेजोड़ हैं।)

—सम्पादक

श्री सोहन लाल गुप्ता, एम० एससी०, एम० ए०, एल एल० बी०, एल० टी०

विद्या अर्थी नहि रहे, विद्या रथी आहिं।
विद्या अरथी उठावहीं, विद्यार्थी कहाहिं ॥

संस्कृत शब्द विद्यार्थी, अरबी का तालिब-इल्म और अंग्रेजी का स्टूडेन्ट सभी एक अर्थ-विद्या, इल्म या स्टडी का अर्थी या तालिब रखते हैं। पर, आज कल बहुत से विद्यार्थी विद्या के अर्थी न हो विद्या की अर्थी निकाल रहे हैं जो हरताल से भी अधिक विषैली हड़ताल के रूप में देखी जाती है। विद्या के शव को वे शव में कब्रिस्तान रूपी सिनेमा घर में दफनाते हैं। केवल थोड़े से विद्यार्थियों का सौभाग्य विद्या के रथी और महारथी बनने का हो पाता है।

विद्यार्थी का लक्ष्य पढ़ना नहीं पास होना रह गया है जिसके लिए परीक्षा भवन में नकल की सामग्री पास होनी चाहिए। उत्तीर्ण होने का सुगम मार्ग नकल है, जो आरम्भ में चोरी से और फिर सीना-जोरी से की जाती है जब विद्यार्थी बटन दबाते ही खुलने वाला रामपुरी चाकू बगल में रखता है जो निरीक्षक को चों चपड़ करने पर, बिना पास, राम नाम सत्य वाला, रामपुर या भगवानपुर का रास्ता नपवा सकता है।

विद्यार्थी का लक्ष्य विद्या प्राप्ति का नहीं वरन मनुष्य बनने का है जिसके लिए चरित्र निर्माण की आवश्यकता है। आदि पुरुष मनु की स्मृति मानव की आचरण संहिता ही है। डिग्री खोकर चरित्र पाना चरित्र खोकर डिग्री पाने से कहीं बढ़कर है। पर, छात्र, चरित्र की यहाँ तक गिरावट हो गई है कि झूठे बहाने पर अवकाश पाने के लिए प्रार्थना करके, लड़के जिसे चाहे बाप बना लेते हैं जो उनकी माताओं को कभी सह्य न होगा। माँ, बाप इन लाड़िलों से इतने तंग रहते हैं कि उनके पाठशाला जाने पर वे छ घन्टे चैन की साँस लेते हैं और उन्हें पाठशाला भेजने का प्रायः अभिप्राय होता है कि वे पुलिस की नजर से बचे रहें। इस प्रकार सरस्वती मन्दिर गुन्डों के गढ़ बन गए हैं। फिर भी शिक्षालय बौद्धिक, मानसिक, चारित्रिक एव शारीरिक सभी प्रकार की व्याधियों के औषधालय हैं। औषधालयों में तो शीशी से डाट हटा कर दवा मात्र पी जाती है, पर विद्यालय वह तिलस्मी औषधालय हैं जहाँ केवल डाट खाकर ही रोग ठीक हो जाता है। ज्ञान और सदाचरण की अमृतमय औषधि जिसने यहां पी ली, उसका क्या कहना।

बालक में जन्म जात देवत्व होता है न कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानवत्व। वह दर्पण की तरह उज्ज्वल है। जब वह दानव दिखाई देता है तो माता-पिता, अध्यापक और समाज ही उसमें प्रतिबिंबित होते हैं।

माँ-बाप बालक का सारा दोष अध्यापक के सिर मढ़ते हैं। वे अपने दायित्व की इतिश्री तो बालक का पाठशाला में नाम लिखा कर ही समझ लेते हैं। बेचारा अध्यापक चाक पर चाक घिसता है पर विद्यार्थी के पल्ले खाक नहीं पड़ता। हाँ अध्यापक की नाक चाक की खाक से अवश्य भर जाती है और उसका पिता इस हालत पर चाक-चाक हो जाता है। दिल के दो हरूफों की भांति उसका दिल टूक टूक हो जाता है।

कुम्हार के चाक की तरह गतिमान रह कर ही अध्यापक-कुम्भकार छात्र रूपी भांडे ढालता है। ऊपर से कठोर वाक्य तथा डंडे की हलकी ताड़ना दे और अन्दर से सहानुभूति और प्रेम का सहारा दे कर वह उन्हें बढ़ाता और सुडौल बनाता है और अपनी ज्ञानाग्नि से पकाता है। इस प्रकार विद्यालय के आंवे से बुद्धि मन और शरीर से पुष्ट छात्ररूपी सुन्दर परिपक्व घट निकलते हैं। किन्तु जिन कच्चे या गर्म बरतनों पर सिनेमा आदि से दूषित वातावरण के बादलों की छींटें पड़ जाती हैं वे चटख और टूट कर कौड़ी मोल के भी नहीं रहते।

ऐसे महत्वपूर्ण दायित्व को निभाने पर भी अध्यापकने भादों सुदी-चौथ का चांद देखा है जबकि उसके छात्र अमावस की रात में भी 'चौदहवीं का चाँद' देखते हैं, भले ही उसकी चाँद दिन में पूर्णमासी की छटा दिखाती हो। अर्थाव्यवस्था ने उसकी लक चार के अक की भांति मरोड़ दी है और उसे लाचार कर दिया है। और समाज से उसे कलंक मिलता है। समाज में न वह तीन में है न तेरह में। खुद भी वह तीन-तेरह हो रहा है। छात्र उसके छठे आठवे पड़े हैं। उसकी कक्षा से वे नौ-दो ग्यारह होते हैं और वह तीन-पांच भी नहीं कर सकता। छत्तीसी उसे आती नहीं। बीस बिस्वा उसके जी में यहीं आता है कि इस संख्या को दाब, उससे निकले विष-रस को पी सदा के लिए एक से एक हो जाय।

विद्यार्थी के पर्याय छात्र शब्द का अर्थ है कि जिस पर गुरुओं का छाता, छाया हो। पर ऐसी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला गुरु आज आर्थिक जगत में गुरु न रह कर हलका हो गया है। और गुड़ से भी सस्ता। गुरु का गुरुत्वकेन्द्र ट्यूशन हो गया है।

बेतन हू को पाइ गुरु, बेतन रहे लखाइ।
तिनकी बेतन मार अब, शिष्य न नाहिं सुहाई॥

अपनी झुकी कमर को सीधा कर खड़े हो सकने के लिए अध्यापक ट्यूशन की लाठी का सहारा लेता है। जो परिश्रम और ईमानदारी से अतिरिक्त आय का साधन है, जो अन्य विभागों में चोरी और रिश्वत ऐसे भ्रष्ट साधनों से ही की जाती है। तुर्रा यह कि रिश्वत के लिए 'सदाचार' की हत्या कर कम से कम चार रुपये लिए जाने लगे हैं और पांच रुपए का औचित्य सामने दीवार पर लगे चित्र में गाँधी जी के हाथ के पंजे को इंगित कर सिद्ध किया जाता है। फिर इन्डिया में भी तो पांच अक्षर हैं।

ट्यूशन शन (*Shun*) करने की चीज है। ट्यूटर का जीवन कैदी के जीवन से भी बुरा है। टकों की खातिर उसे अपने आराम व मनोरंजन से हाथ धोने पड़ते हैं। प्रायः टकों की प्राप्ति की नौबत ही नहीं आती। रोगी के मर जाने पर भी डाक्टर की फीस पक्की होती है, पर लड़के फेल होने पर टयूशन की बकाया राशि डूब ही जाती है क्योंकि टयूशन चलते ही बकाया में है और बकाया इकट्ठी होकर विशाल और भारी हो जाती है जिसमें डूबने का प्रकृति जन्य गुण है। फिर यह भी दलील दी जाती है कि पढ़ाया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपया तो कर्ज नहीं दिया। मुफ्त खोरी में टयूशन कराने के पीछे भी मिलती जुलती धारणा रहती है! टयूशन के सम्बन्ध में लांछन भी है और लगाए भी जाते हैं। प्राय: वह चोरी से किये जाते हैं भले ही स्वीकृति-सीमा के अन्दर क्यों न हों। यह इल्जाम सुनने को मिलते हैं कि टयूशन मिलने की खातिर अध्यापक कक्षा में ठीक प्रकार से पढ़ाता नहीं और ट्यूशन अनुचित साधनों से छात्र को उत्तीर्ण कराने का ठेका मात्र रह गया है। यह बातें अवश्य जघन्य अपराध है पर इनके लिए अध्यापक से कम दोषी माँ-बाप नहीं जो रामचरित मानस की लोकोक्ति—

आरत काह न करइ कुकरम।
स्वास्थ लागि तजौ निज धर्म॥

छात्र के सामने आदर्श रूप में अध्यापक ही होते है, अत: अध्यापक को आदर्श होना चाहिए, आईना के समान स्वच्छ होना चाहिए। जिस प्रकार आईना के अन्तर्गत आईन है उसी प्रकार अध्यापक में आईन, नियम, चरित्र का समावेश होना चाहिए जो छात्रों पर कल्याणकारी छाप डाल सके। दर्पण की भाँति उसमें ज्ञान का दर्प न होना चाहिए। जिस अध्यापक में दर्प हो आदर्श न हो वह नर होकर भी वानर है और वह नर हो या नारी, अनारी ही है।

विद्यार्थी रूपी रथ का अध्यापक एक पहिया है। उसका दूसरा पहिया माँ-बाप हैं जिनकी देख रेख में बालक अट्ठारह घन्टे रहता है। मां बाप की उपेक्षा ही बालक के बिगड़ने के मूल में होती है। उपेक्षा का कारण भी है। रासायनिक भाषा में कहा जा सकता है कि बालक गृहस्थी के कारखाने के बाईप्राडक्ट (*Biproduct*) मात्र है, लक्ष्य नहीं। उसे पाठशाला में ठेल और ढकेल कर वे उससे छुटकारा पाते हैं। वहाँ पर पहुंचता है या नहीं, क्या करता है इसे जानने की उन्हें जरूरत नहीं, उनके कर्त्तव्य की इतिश्री तो हो ही गई।

वर्ष में एक बार भी यदि पिता बालक की उपस्थिति में उसके सभी अध्यापकों से पाठशाला आकर मिल ले तो उसका बालक पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। वह अधिक अच्छे कार्य व व्यवहार से अध्यापकों को सतुष्ट रखना चाहेगा जिससे रास्ता चलते भेंट होने पर माँ बाप से उनके द्वारा शिकायत किए जाने का मौका न आए। पाठ-शालाओं में अभिभावक सभा की ओर इनकी इस कदर उपेक्षा रहती है कि बैठक आयोजित होने पर वहां उल्लू बोलने की नौबत रहती है।

माँ बाप को यदा-कदा बालक की अभ्यास पुस्तकों के पन्ने पलट लेने चाहिऐं। यह आवश्यक नहीं कि वे उन विषयों के ज्ञाता हों। इतने भर से बालक पाठशाला एव गृह कार्य को करने के लिए प्रेरित होगा क्योंकि लड़का बाप की दृष्टि में कभी गिरना नहीं चाहेगा।

विद्यार्थी को जानना चाहिए कि मध्यम या निर्धन वर्ग के उसके मां-वाप अपना पेट काट कर उसे खिला-पिला, पहना और पढ़ा रहे हैं। इसमें उनकी अपने स्वार्थ की इतनी भावना नहीं होती ज़ितनी कर्त्तव्य और ममता की होती हैं। उसे मां बाप की खातिर नहीं अपनी खातिर योग्य बनना है क्योंकि जीवन भर ठेका मां बाप ने नहीं लिया है। दूसरे, जीवन का यह काल बार बार नहीं आएगा। कालिज नालिज प्राप्ति का स्थान है बुद्धि पर फालिज पड़ने का नहीं। विद्या प्राप्ति कठिन तप है। कष्टसाध्य विद्यार्थी जीवन के बाद ही सुखी जीवन की प्राप्ति सम्भव होती है। यदि कालेज में मजा लिया गया तो बजा समझो कि बाद में कजा तक उसकी सजा मिलती रहेगी जीरो पाकर अपने को हीरो मत समझो। उस पाकर में, कालेज-वसन्त के अन्त में पतझड़ हो जाएगा और चार दिन की होली भी हो लेगी। कालेज की निकम्मी लाइफ के बाद कम्मी वाइफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का योग कहां जो तुम्हें अपने अरदली के रूप में रोटी कपड़ा दे सके। फिर उसकी चप्पल की चोट से तुम्हारी चांद चौखट बन सकती है। तुम्हारा रामपुरी नाइफ भी कुंद पड़ जाएगा।

समाज एवं राज्य के भी बालकों के प्रति कर्त्तव्य हैं। राज्य देखे कि शिक्षाकी वस्तु बालक के लिये जीवनोपयोगी हो और विधि चरित्र निर्माण कारी। राज्य और समाज दोनो को देखना है कि शिक्षा के बाद युवक बेकार नहीं रहता भले ही उसके पास कार न रहे। भले ही उसके घर में हाल न हो पर वह बेहाल न बनने पाए।

जिन्दगी क्या है।

—कु० सरला—

जिन्दगी क्या है ? एक जिज्ञासु ने पूछा। बहार ही जिन्दगी है। वृक्ष की टहनी पर बैठे हुए एक पक्षी ने चहक कर उत्तर दिया। विश्राम ही जिन्दगी है। उसी वृक्ष की छाया में बैठे हुए एक मनुष्य ने कहा। चलते रहने का नाम जिन्दगी है। किसी यात्री ने कहा।

किसी दार्शनिक ने उत्तर दिया, मृत्यु ही जिन्दगी है।

जिन्दगी सुख और दुख का सम्मिश्रण है—एक और दार्शनिक ने कहा। जिन्दगी एक अनोखा आविष्कार है। एक वैज्ञानिक ने कहा।

प्यार के नशे में मदहोश किसी प्रेमी ने कहा—प्रेम ही जीवन है, इसके बिना जीनव सूना है।

जीवन एक संग्राम है। किसी राजा ने कहा। किसी फिल्म-अभिनेता ने उत्तर दिया—जिन्दगी एक चित्रपट है जिस पर प्रतिदिन भांति-भाँति की तस्वीरें दिखाई देती हैं। त्याग ही जीवन है। किसी योगी ने कहा। पैसा ही जिन्दगी है। किसी भिखारी ने कहा। मेहनत बिना जिन्दगी क्या ? पसीने में डूबे हुए किसी मजदूर ने कहा अनेक व्यक्तियों ने कहा—

जिन्दगी एक अधूरा सपना है। जो कभी पूरा नहीं होता।

निर्बल का जीवन व्यर्थ है। बल ही जीवन है।

जिन्दगी एक बहुत बड़ा धोखा है।

जिन्दगी एक ऐसा टिमटिमाता हुआ दिया है जिसकी लौ देखते ही देखते बुझ जाती है।

कल्पना ही जीवन है। कल्पना में खोये किसी कवि ने कहा।

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है। एक और व्यक्ति ने कहा।

परन्तु जिज्ञासु की जिज्ञासा शान्त न हो सकी। उसने जैसे अपने आप से कहा—शायद यूं भटकते रहना ही जिन्दगी है।

मूर्ख ! कही से आवाज आई–अपने कर्तव्यों का पालन ही जिन्दगी है।

उसने चकित होकर चारों ओर देखा और फिर सन्तुष्ट हो घर चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहार आ सकी नहीं !

(श्री हरि)

बसन्त आ गया मगर बहार आ सकी नहीं ।

कली हंसी, पवन जिसे विमुग्ध चूमता चला,
सुमन सुरा पिला रहे, मलिन्द झूमता चला,
विकल–वितृष्ण वृक्ष से विहँस लिपट गई लता,
प्रकृति पुलक–प्रतृप्त कर रही प्रकट प्रसन्नता,
मगर अतृप्त मातृभूमि तृप्ति पा सकी नहीं ।
बसन्त आ गया मगर बहार आ सकी नहीं ।

मनोज्ञ–मुग्धकारिणी छटा लिए, हरा–भरा
वसन पहन, सजो–सजो, बनो–ठनो वसुन्धरा,
नवागता नवीन ऋतु दिशा–दिशा सजा रही,
नवीन भूषणादि दे नए वसन पिन्हा रही,
मगर मनुष्य को नए वसन पिन्हा सकी नहीं ।
बसन्त आगया मगर बहार आ सकी नहीं ।

समृद्ध की समृद्धि–ऋद्धि–सिद्धि–वृद्धि हो रही,
विपन्न की विपन्नता उसी प्रकार रो रही,
नवीन ऋतु सुखी मनुष्य को उमंग दे रही,
कि रूप - राग - रंग की नई तरंग दे रही,
मगर क्षुधित मनुष्य की क्षुधा मिटा सकी नहीं ।
बसन्त आ गया मगर बहार आ सकी नहीं ।

नई पुलक लिए हिली नवीन चन्द्रिका,
नए प्रकाश में मधुर खिली नवीन तारिका,
कि रात जगमगा उठी, मिटी तमिस्र–कालिमा,
प्रभात क्या हुआ कि छागई नवीन लालिमा,
मनुष्य कुछ हँसा मगर मनुष्यता हँसी नहीं ।
बसन्त आगया मगर बहार आ सकी नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान के साथ युद्ध में भारत की उपलब्धियाँ

कान्ताराम वर्मा, एम० ए०, एल० टी० (नागरिक शास्त्र, राजनीति शास्त्र)

स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरु तथा स्वर्गीय श्री लालवहादुर शास्त्री ने भारत की विदेश नीति तटस्थता की नीति पर आधारित की और विश्व के दो शक्तिशाली गुटों, रुसीगुट (साम्यवादी) तथा अमरीकी गुट (जनतन्त्र वादी) में से किसी में भी भारत शामिल नहीं हुआ और अपने प्रधानमन्त्रीत्व काल के प्रथम चरण में श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने भी इसी नीति का अनुसरण किया। कालान्तर में अमेरिका ने पाकिस्तान को पैंटन टैंक तथा सेवरजेट तथा युद्ध के अन्य विनाशकारी हथियार पाकिस्तान को देना प्रारम्भ किया। हमारी दूरदर्शी, योग्य प्रधान - मन्त्री श्रीमती गाँधी ने यह पहले ही अनुभव कर लिया कि यदि हमने इस शक्ति के विरुद्ध कोई ठोस कदम नहीं उठाया तो यह भारत के भविष्य के लिए बहुत ही हानिकारक होगा। वह नहीं चाहती थीं कि भारत की मासूम जनता वियतनाम की जनता की भांति अमेरिका की मशीनगनों से विनाश को प्राप्त हो। अत: श्रीमती गांधी ने तुरन्त रूस से मित्रता का हाथ वढ़ाया तथा भारत-रूस मैत्री संधि कर ली। यद्यपि भारत के अन्य दलों के नेताओं ने (जैसे जनसंघ) इस सन्धि की कटु आलोचना की थी। परन्तु जैसे हम सबने देखा इस सन्धि के फलस्वरूप ही रूस ने सुरक्षा परिषद् में अमेरिका प्रस्ताव के विरुद्ध दो बार अपनी 'वीटो' शक्ति का प्रयोग किया और भारत को पाक-युद्ध ज्वाला में भस्म होने से बचाया। इसी सन्धि के फलस्वरूप ही श्रीमती गाँधी विश्व के नक्शे पर स्वतन्त्र बंगला देश का निर्माण करने में सफल हो सकीं।

बंगला देश को आजाद करा कर श्रीमती गांधी ने सिर्फ इतिहास का ही नहीं, भूगोल का भी निर्माण किया है। युद्ध के मैदान में भारतीय सेना को जो अभूतपूर्व सफलता मिली है उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण सफलता श्रीमती गाँधी को अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति के क्षेत्र में प्राप्त हुई है। ३ दिसम्बर से पूर्व अनुभवी राजनैतिक और पैनी नजर वाले पत्रकार भी यही सोचने लगे थे कि बंगला देश से जो शरणार्थी भारत आ गये है वे अब अपने देश को वापिस नहीं जायेंगे। २५ मार्च तक समस्या पाकिस्तान के सिर थी। वह भारत के मत्थे मढ़ दी गई।

लेकिन पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति याहियाँ ने ३ दिसम्बर को भारत पर नग्न आक्रमण कर उसे लड़ाई के मैदान में उतरने का मौका दे दिया। यही याहिया खाँ की सबसे बड़ी भूल थी। लेकिन पाकिस्तानी हुक्मरानों को विश्वास था कि युद्ध निर्णायक दौर तक नहीं पहुँचेगा। उससे पहले ही अमेरिका तथा चीन से उसे मदद मिल जायेगी। यदि उन्होंने ठोस फौजी मदद नहीं दी तो भी भारत पर दबाव डालकर वे युद्ध-विराम अवश्य करा देंगे।

पाकिस्तानी हमले के वाद सभी मोर्चों पर युद्ध शुरू करने का फैसला तो हमारे नेताओं ने किया लेकिन युद्ध किस प्रकार लड़ा जाय यह निर्णय पूर्णत: सैनिक कमान्डरों पर छोड़ दिया गया। इससे सेनाधिकारियों में आत्मविश्वास बढ़ा और उन्हें सामरिक पहल की छूट मिली। प्रधान मन्त्री की दृढ़ता तथा राजनीतिक दवावो के आगे नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुकने के उनके संकल्प ने सेनाधिकारियों के हाथ मजबूत किये और उनके हौसले को बुलन्द किया ।

वास्तव में बंगला देश संकट पैदा होने से पूर्व अधिकांश भारतीयों को भी श्रीमती गाँधी के अन्दर छिपी अद्भुत शक्ति, दृढ़ता, साहस और कूटनीतिक चातुर्य का सही अनुमान नहीं था । लेकिन इतिहास देवता ने अपने अनुष्ठान के लिए इन्दिरा गांधी का चयन किया और उनके सामने एक महान चुनौती रखी । उन्हें एक महान दायित्व सौंपा । श्रीमती गाँधी इस परीक्षा में खरी उतरीं ।

विश्व की राजनीति में पिछले कुछ सालों से शीघ्र-गामी परिवर्तन रहे हैं । पाकिस्तान के अत्याचारी नानाशाह फौजी शासन से बंगला देश की आजादी के फलस्वरूप परिवर्तन की यह प्रक्रिया और भी तेज हो गई है । अब भारत वह भारत नहीं रहा । चीन वह चीन नहीं रहा और अमेरिका वह अमेरिका नहीं रहा जिसकी सैन्यशक्ति सारी दुनियाँ पर छाई थी और जिसके डालर का डंका सारी पृथ्वी पर गूँजता था ।

राष्ट्रीय स्वार्थ की नीति—

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर पूँजीवादी अमेरिका तथा कम्युनिस्ट रूस के नेतृत्व में दुनिया दो अलग-अलग खेमों में विभाजित हो गई और फिर शीत युद्ध का दौर हुआ । इस दौरान अमेरिका के बदनाम विदेश मत्री डलेस ने अपने देश की नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण रोल अदा किया । बंगला देश के प्रश्न पर अमरीका के राष्ट्रपति निक्सन और उनके विशेष सलाहकार कीसिंगर ने पाकिस्तानी फौजी शासन के खुले समर्थन की जो नीति अपनाई है वह डलेस की परम्परा में ही है ।

वह युग बीत गया जब अमेरिका या कोई अन्य शक्तिशाली राष्ट्र शान्ति, न्याय तथा स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए किसी कमजोर राष्ट्र की सहायता करना था । बड़े राष्ट्र अपनी नीति निर्धारण अपने राष्ट्रहितों का ध्यान में रखते हुए विश्व में शक्ति-सन्तुलन कायम रखने के उद्देश्य से ही करते हैं । यही कारण है कि घोर पूंजीवादी अमेरिका उग्र वामपंथी चीन की ओर आज मित्रता का हाथ बढ़ा रहा है । ऐसी स्थिति में बंगला देश के प्रश्न पर अमेरिका तथा चीन ने जो रुख अपनाया वह कोई अप्रत्याशित घटना नहीं थी । हो सकता है उन्होंने यह कार्य कुछ ज्यादा भौंडे ढंग से किया हो । स्वयं प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने हाल में अपने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा है कि इस बारे में अमेरिका तथा चीन के रवैये पर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ है ।

अमेरिका या चीन ने जो कुछ किया उस पर हमारी प्रधानमन्त्री को आश्चर्य नहीं हुआ, लेकिन श्रीमती गाँधी ने जो कुछ किया उस पर दोनों चकित रह गये । अमेरिका ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि श्रीमती गाँधी के नेतृ व में भारत अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए तथा बंगला देश को आजाद कराने के लिए पूरी शक्ति लगा देगा । वह बाहरी दबावों और धमकियों के आगे नहीं झुकेगा ।

सुरक्षा परिषद में रूस के 'वीटो' तथा भारत-पाक युद्ध में किसी तीसरे राष्ट्र को हस्तक्षेप न करने की उसकी चेतावनी ने शक्तिशाली अमेरिका को भी अपनी सीमाओं का अहसास करा दिया । पाकिस्तान को सीधी सैनिक सहायता नहीं पहुँचा पाने की इसी बेबसी से पैदा नपुंसक क्रोध के आवेग में अमरीका ने अपने सातवें नौ सैनिक बेड़े की एक टुकड़ी बंगाल की खाड़ी में भेज दी । यह बात अलग है कि भारत ने इस अमरीकी धमकी की परवाह नहीं की और वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा । दक्षिणी एशिया में कृत्रिम शक्ति सन्तुलन के इतिहास को मिटा दिया है । विश्व के राष्ट्रों के बीच भारत को वह स्थान मिला है जिसका वह अधिकारी था और है ।

दूसरी सबसे महत्वपूर्व उपलब्धि भारत में लोकतंत्रीय प्रणाली की सफलता तथा सुदृढ़ता का सिद्ध होना है । लोकतंत्रीय भारत के हाथों फौजी तानाशाही की पराजय लोकतन्त्र की छिपी बुनियादी शक्ति का उद्घोष है । बंगला देश सकट के दौरान भारत की समस्त राजनैतिक पार्टियों तथा जनता ने सरकार के साथ जिस शानदार ढंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सहयोग किया है वह किसी भी राष्ट्र की राजनीतिक प्रणाली की उपयोगिता व प्रभावशीलता सिद्ध होती है। लोकतन्त्र के अलावा किसी अन्य राजनीतिक व्यवस्था में शायद जनता से इतना व्यापक सहयोग और सद्भानुभूति प्राप्त करना सम्भव नहीं है।

पिछले आम चुनाव के अवसर पर भारत की राजनीतिक अस्थिरता पर चिन्ता प्रकट करते हुए ब्रिटेन के प्रमुख दैनिकपत्र 'दि टाइम्स' के दिल्ली स्थित संवाददाता ने भविष्यवाणी की थी कि भारत में यह अन्तिम आम चुनाव होगा। लेकिन यह आशंका निर्मूल सिद्ध हुई। लोकतन्त्र में समय के अनुसार अपने को ढालने की क्षमता है। राजनीतिक अस्थिरता के नियन्त्रण से बाहर होने से पूर्व लोकतन्त्र की मूलभूत शक्ति प्रकट हुई और उसने राष्ट्र को उसकी आवश्यकता के अनुसार श्रीमती इन्दिरा गाँधी जैसा नेता दिया। लोकतन्त्र नेता को पैदा करता है। तानाशाही में नेता अपने को जनता पर थोपता है। श्रीमती गाँधी ने अपने अल्प शासन काल में जो कुछ कर दिखाया है वह बहुत ही उत्साह वर्धक है। गरीबी दूर नहीं हुई। लेकिन जनता को विश्वास है कि उसे दूर करने के लिए ईमानदारी से प्रयत्न किया जायेगा। जनता में पहले की तरह अब भविष्य के प्रति निराशा और वर्तमान के प्रति उपेक्षा के भाव नहीं हैं।

भारत पाक-युद्ध के दौरान अमरीका ने भारत को आर्थिक मदद बन्द कर परोक्षरूप से हमें आत्मनिर्भरता की ओर विशेष रूप से प्रयत्नशील होने का मौका दिया है। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी स्वयं इस बात को विशेष महत्व देती हैं। युद्ध बन्द होने के बाद उनके भाषणों में प्रमुख स्वर भारतीय अर्थ व्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने का ही है। हाल में जब एक संवाददाता ने प्रधानमत्री से पूछा कि क्या बंगला देश की स्वतन्त्रता आपके जीवन का सबसे गौरवमय क्षण था, तो उन्होंने कहा कि ऐसे क्षण का निर्णय तो जीवन समाप्त होने पर ही किया जा सकता है। उन्होंने भविष्य की चुनौतियों का उल्लेख करते हुए उनका सामना करने के अपने संकल्प पर बल दिया।

स्पष्टतः इन्दिरा गाँधी को भारत की सफलताओं व उपलब्धियों की सीमित प्रकृति का अहसास है, तभी विजय के क्षणों में उनकी आँखें भविष्य की चुनौतियों पर टिकी हुई हैं। बिना विदेशी मदद के काम चलाने के लिए सरकार अपनी योजनाओं का पुर्नानिधारण कर रही है। ५५ करोड़ जनता यदि कमर कस ले तो कोई भी शक्ति भारत को आर्थिक व सैनिक दृष्टि से एक महान राष्ट्र बनने से नहीं रोक सकती। यह इतिहास की माँग है।

मानव कौन ?

स्वाध्याय और सदाचारिता में रत रह,
हिंसाहीन भावना की भव्यता दिखाता है।
मन-वाणी, करनी में समता का श्रोत बहे,
शुचिता, सरलता से जीवन बिताता है।

तप, त्याग शीलता का सहारा ले के,
दीन, दुखियों के शोक-संकट मिटाता है।
जिसके आचारमें, विचार में विमलता है,
वही कर्मवीर मान्य मानव कहाता है।

(हरि शंकर शर्मा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी चाह"

—अशोक केशवानी
(कक्षा १२, सी. 'वाणिज्य')

चाह नहीं कुछ मुझे रूप की,
जिससे कोई प्यार करे।
वह दौलत भी नहीं चाहिए,
जिससे जग सत्कार करे।

क्या होगा उस बल-पौरुष का,
जिससे भय सन्सार करे।
क्या होगा उस धन दौलत का,
जिससे अत्याचार बढ़े।

यदि वह पाया हृदय नहीं,
जो दुखियों का उद्धार करे।
चाह हैं मेरी इस दुनिया में,
रहकर कुछ उपकार करूँ।

दुखिया दोन अनाथों की,
सेवा कर दिल से प्यार करूँ।

दरो–दीवार पे हसरत से
नज़र करते हैं।
खुश रहो अहले वतन,
हम तो सफ़र करते हैं।
—(नवाब वाजिद अलशाह)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रोत्थान में—

कवियों का योगदान

(कु० गायत्री तोमर, कक्षा १० ए)

साहित्य तथा काव्य समाज की उदात्त–भावनाओं की अभिव्यक्ति है। कवि अथवा साहित्यकार एक ऐसा प्राणी है जिसके हृदय–उदधि में, समाज में उठती प्रवृत्तियों अथवा आकांक्षाओं की बयार, सहज ही हिलोरें उठा देती हैं! समाज के यान को किस दिशा में जाना चाहिये, दूर-दृष्टा मार्ग निर्देशक की भाँति वह समय के पूर्व अपनी रचनाओं द्वारा दिशा-बोध भी प्रदान करता है।

देश की दासत्व-जनित वेदना को भी उसने अनुभव करके प्रकट किया और दासत्व की शृँखला से मुक्त होने के लिये राष्ट्र-वीणा में शौर्य, तथा राष्ट्रभक्ति का मधुर स्वर झंकरित किया। इन स्वरों का मूल नाद है 'देश भक्ति'। देश भक्ति-भाव व्यक्तिपरक न होकर समष्टि-परक भाव है। जब मनुष्य की राग-प्रवृत्तियों के वृत्त का विकास होता है तो वह अपने व्यक्तित्व से परिवार, फिर जाति, ग्राम, प्रान्त, देश और फिर विश्व की सीमाओं को छूने के उपरान्त पशु-पक्षी तथा कीट-पंतगों तक फैलता है। व्यक्ति में व्याप्त उसके 'स्व' अथवा अहंकार का विस्तार अथवा व्यापकत्व ही विकास क्रम है। देश भक्ति में 'स्व' के विस्तार की सीमा समूचे देश और उसके निवासियों के लिये फैल जाती है। 'स्व' के इस व्यापकत्व में राग के साथ उत्साह तथा शौर्य भाव का मिश्रण भी हो जाता है।

मध्य युग में विदेशी आक्रान्ताओं के विरुद्ध समरांगण में, अपने प्रदेश अथवा स्वदेश की सुरक्षा-हित में, प्राणों की चिन्ता न करने वाले वीर रणबाँकुरों के यशोगान भी 'देश भक्ति' कविता के अन्तर्गत हैं, किन्तु उस काल में यह भावना विरल है, और देशभक्ति की वर्तमान भावना से अवश्य ही कुछ भिन्न है। वीर तथा शौर्य भाव के सभी रूप वर्तमान देशभक्ति भावना के अन्तर्गत नहीं आते, क्योंकि व्यक्तिगत स्वार्थ की सकीर्ण परिधि में प्रकट हुआ शौर्य देशभक्ति की सीमा में नहीं आता है।

मध्यकाल में 'वीरगाथा काल' के राजाओं अथवा सत्ताधारियों द्वारा अभिव्यक्त शौर्य अपनी निजी महत्वाकाँक्षाओं अथवा अपनी राज्य सीमाओं के लिये ही था। उस समय अखिल देश एक समूची इकाई के रूप में प्रतिष्ठित न होकर केवल सीमित राज्य ही एक ईकाई के रूप में था। उस युग में 'हिन्दुत्व' की रक्षा का अर्थ ही राष्ट्रीय-भावना के अर्थ में सैकड़ों वर्ष तक प्रयुक्त होता रहा। वीर छत्र साल, वीर शिवाजी अथवा महाराणा प्रताप आदि की राष्ट्रीयता जाति-सीमा से परे नहीं थी। भूषण आदि कवियों की वाणी में इसी प्रकार की राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति हुई है।

वर्तमान राष्ट्रीयता का उद्घोष सन् १८५७ के विद्रोह में प्रथम बार हुआ। भारत की सामूहिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और संगठित राष्ट्रीयभावना का अंग्रेजी शासक के विरूद्ध वह प्रखर तूर्यनाद था। भारतीय राष्ट्रीय-भावना प्रथम बार प्रदेश अथवा धर्म-भावना की सीमित सीमा को लाँघ कर वास्तविक राष्ट्रीय-भावना के स्तर पर आई। इस काल को 'भारतेन्दु काल' कहा जाता है। राष्ट्रोत्थान का एक आन्दोलन प्रारम्भ श्री राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द, श्रीरामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ आदि क नेतृत्व में हुआ। आन्दोलनों की प्रमुख धारा यद्यपि धार्मिक तथा सामाजिक थी, फिर भी राष्ट्रभक्ति की अभिव्यक्ति भी स्पष्टतः हुई। सामाजिक तथा साँस्कृतिक चेतना को जगाकर राजनैतिक परतन्त्रता के सूत्रों को शिथिल किया जा रहा था।

इसके उपरान्त ऐसी विचार धारा का जन्म होने लगा जो सर्वधर्म समन्वय पर आधारित थी। हिन्दू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि सभी धर्मों और सम्प्रदायों के लिये इसमें सुरक्षा का आश्वासन था। यह चिन्तनधारा भारत को इन सभी की मातृभूमि मानकर विदेशी राज्य के विरूद्ध मोर्चा बनाने की योजना बना रही थी। यह चिन्तनधारा प्रकट हुई इण्डियन नेशनल कांग्रेस के रूप में।

इस चिन्तनधारा ने महात्मा गांधी का सहयोग प्राप्त किया। समस्त सामाजिक, आर्थिक तथा साँस्कृतिक पतन में राजनैतिक दासत्व ही मूल कारण उभर कर आया।

लोकमान्य तिलक ने नारा दिया 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। इसलिये 'पूर्ण-स्वराज्य' ही सघर्ष का मुख्य उद्देश्य निर्धारित हुआ। इस काल में अनेक कवियों ने अपनी लेखनी द्वारा इस चिन्तनधारा तथा संघर्ष को आगे बढ़ाने में पूर्ण सहयोग दिया। भारत की आत्मा मैथिली शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सूर्यकान्त निराला, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, दिनकर तथा सोहनलाल द्विवेदी आदि के स्वरों में मुखरित हो उठी।

भारत लक्ष्मी पड़ी राक्षसों के बन्धन में।
सिन्धु पार वह बिलख रही है व्याकुल मन में।।
—(मैथिली शरण गुप्त)

और

बलि होने की परवाह नहीं,
मैं हूँ कष्टों का राज्य रहे।
मैं जीता, जीता-जीता हूँ,
माता के हाथ स्वराज्य रहे।।
—(माखनलाल चचुर्वेदी)

पशु नहीं वीर तुम,
समर-शूर, क्रूर नहीं,
काल चक्र में हो दबे,
आज तुम राजकुंअर और समर-सरताज !
....
मुक्त हो सदा ही तुम,
बाधा-विहीन-बन्ध छन्द ज्यों !
—निराला

नहीं जीते जी सकता देख,
विश्व में झुका तुम्हारा भाल।
वेदना मधु का भी कर पान,
आज उगलूंगा गरल कराल।।
—दिनकर

श्री 'नवीन' ने जनशक्ति को आवाहन करते हुये लिखः—

ओ भिखमंगे, अरे पतित तू,
ओ मजलूम अरे चिर दोहित,
तू अखंड भडार शक्ति का,
जाग अरे निद्रा-सम्मोहित।
प्राणों को तड़पाने वाली,
हुंकारों से जल-थल भर दे,
अनाचार के अम्बारों में।
अपना ज्वलित फलीता भरदे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दिनकर' अपनी 'हुँकार' में हुँकार उठेः—

पौरुष को बेड़ी डाल पाप का,
अभय रास जब होता है,
ले जगदीश्वर का नाम खड्ग
कोई दिल्लीश्वर धोता है।
धन के विलास का बोझ दुखी,
दुर्बल, दरिद्र जब ढोता है,
दुखिया को भूखों मार, भूप
जब सुखी महल में सोता है।
सहती सब कुछ मन मार प्रजा,
कसमस करता मेरा यौवन।

× × ×

असि की नौकों से मुकुट जीत,
अपने सिर उसे सजाती हूँ।
ईश्वर का आसन छीन,
कूद मैं आप खड़ी हो जाती हूँ।
थर-थर करते कानून, न्याय,
इंगित पर जिन्हें नचाती हूँ।
भयभीत पातकी धर्मों से,
अपने पग मैं धुलवाती हूँ।
सर झुका घमण्डी सरकारें,
करती मेरा पूजन अर्चन।

हिन्दी के वीररस प्रधान कवि भूषण तथा लाल जहाँ शौर्य के गान गाते हुये विरोधी के संहार का उत्साह प्रदर्शित करते हैं वहाँ गाँधी-युग में राष्ट्रीय चेतना के कवि 'बलिदान' की भावना को प्रतिष्ठित करते हैं। गाँधी जी की अहिंसा-भावना से वे कदाचित प्रभावित है। माखन लाल चतुर्वेदी शीशदान की महिमा लिखते हैंः—

बलि के कम्पन में जो आती भटकी हुई मिठास।
यौवन के बाजीगर, करता हूँ उस पर विश्वास।
(हिमकिरीटिनी)

× × ×

रक्त है ? या है नसों में, क्षुद्र पानी,
जाँचकर, तू सीस दे देकर जवानी।
(हि. कि.)

चढ़ चल, चढ़ चल, थक मत रे!
बलिपथ के सुन्दर जीव।
उच्च कठोर शिखर के ऊपर,
है मन्दिर की नींव।
बड़े बड़े ये शिला खण्ड,
मग रोके पड़ अचेत।
उन्हें लाँध तू, यदि जाना है,
तुझे मरण के हेत।
(हि० कि०)

सुनूँगी मात की आवाज,
रहूँगी मरने को तैयार।
कभी भी उस वेदी पर देव,
न होने दूँगी अत्याचार।
चलो मैं हो जाऊँ बलिदान,
मात्र – मंदिर में हुई पुकार,
चढ़ा दो मुझको हे भगवान।
(सुभद्रा कुमारी चौहान)

'शीशदान' करने की प्रथा हमारे देश के लिये कोई नई नहीं, मध्य युग में भी इस भावना का जोर था।

बारह बरस लों कूकर जीवें
और सोलह लो जियें सियार,
बरस अठारह छत्री जीवें,
आगे जीवन को धिक्कार।

ऐसा ही सोहन लाल द्विवेदी ने 'भैरवी' में लिखा–

आँसू बिखराते बीतेंगी,
जलते जीवन की घड़ियाँ।
बिना चढ़ाये शीश, नहीं,
टूटेंगी माँ की कड़ियाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसम तुम्हें भगवान की

कमल कुमार पाहवा, XI C, वाणिज्य

तुम्हें बदलनी है भारत में, अब तकदीर किसान की।
युवको उठो, कमर तुम कसलो, कसम तुम्हें भगवान की ।।

दुनिया के आगे तुमको, अब नया जमाना लाना है,
चट्टानों से टकरा, उनको तोड़–फोड़ बढ़ जाना है,
है अमूल्य आज़ादी अपनी, वीरों उसे बचाना है,
आजादी के लिए 'भगतसिंह' 'शेखर' सा बन जाना है,

याद करो तुम अमर शहीदों के पावन बलिदान की।
युवकों उठो, कमर तुम कसलो, कसम तुम्हें भगवान की ।।

बन कर कर्मठ कार्य करो, नित तुमको आगे बढ़ना है,
नित्य सफलता की चोटी पर, अविरल गति से चढ़ना है,
भाग्य 'विधाता' नहीं, भाग्य इन्सान बनाया करते हैं,
कायर नित्य मरा करते, पर वीर शान से मरते हैं,

जियो शान से, मरो शान से, तुम्हें कसम है शान की।
युवकों उठो, कमर तुम कसलो, कसम तुम्हें भगवान की ।।

अन्न अधिक उपजाना है, यह लक्ष्य बनाओ जीवन का,
मिलो गले सबसे सब मिलकर, दान करो तन-मन-धन का,
जननी जन्म भूमि भारत की, तुमको रक्षा करनी है,
बंजर धरती अपने श्रम से, हरी भरी फिर करनी है,

धरती माँ की आँखों में है, सूरत युवक किसान की।
युवकों उठो, कमर तुम कसलो, कसम तुम्हें भगवान की ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय सेना की

शौर्य गाथा

लेखक:—विष्णु स्वरूप त्रिपाठी, साहित्यरत्न

हमारे देश की वीर सेना ने सन्सार के देशों में भारत देश के गौरव को उच्च पद प्रदान करके विश्व में महान कीर्ति प्राप्त कर ली है। आज प्रत्येक भारतवासी का हृदय इस महान विजय को देख कर प्रफुल्लित तथा गौरवान्वित है। सन्सार के सभी देश इस अनुपम विजय का अवलोकन करके आश्चर्य से चकित हैं।

३ दिसम्बर सन् १९७१ को पाकिस्तान ने अचानक भारत पर आक्रमण कर दिया। उसने सोचा था कि इजराइल की तरह अचानक आक्रमण करके भारत की हवाई सेना को पंगु बनाकर काश्मीर पर अधिकार कर लिया जाये। "चौबे जी गये थे छब्बेजी बनने परन्तु दूबे जी ही रह गये।" पाकिस्तान ने ३ दिसम्बर को सायंकाल अमृतसर, पठानकोट, श्रीनगर, जोधपुर, आगरा, अवन्तिपुर पर अचानक आक्रमण करके हमारी वायुशक्ति को छिन्न-भिन्न करने का प्रयत्न किया परन्तु वह हमारी थोड़ी ही हानि कर सका। इसके पश्चात रात्रि के १२ बजे से हमारे वायुयानों ने प्रत्याक्रमण आरम्भ किया और पाकिस्तान के प्रमुख हवाई-अड्डों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

४ दिसम्बर को हमारी नौ-सेना ने दल-बल सहित शत्रु के प्रमुख बन्दरगाह कराँची पर आक्रमण किया। कराँची एशिया का सर्वोत्तम बन्दरगाह माना जाता है। हमारे विशाल जलयान 'विक्रान्त' ने इस युद्ध में कमाल कर दिया। इस सेना के सचालक वाइस एडमिरल कोहली थे। पहले ही आक्रमण में शत्रु की कमर तोड़ दी गई कराँची बन्दरगाह के पास ही शत्रु के दो विशाल विध्वंसक जलयानों, "खैबर" और "शाहजहाँ" को डुबो दिया गया। "विक्रान्त" की विशाल तोपों ने और "विक्रान्त" पर से उड़ने वाले हमारे वायुयानों ने कराँची के सुन्दर बन्दरगाह को नष्ट-भ्रष्ट करके उसके विशाल तेल भण्डारों में आग लगा दी। हमारी तोपों तथा वायुयानों ने शत्रु की पाँच विशाल तेल टकियों में आग लगा दी। इन टकियों में शत्रु का लाखों गैलन पैट्रोल भरा था। पांच दिन तक दो सौ गज ऊँची लपटें उस तेल भण्डार को जलाती हुई और धुँए के विशाल बादल उठाती हुई शत्रु पर प्रलय की अग्नि बरसाती रही।

शत्रु की विशाल पनडुब्बी "गाजी", जिसका शत्रु को बड़ा गर्व था और जो उसे अपने रक्षक अमेरिका से उधार मिली थी जिसका मूल्य तीन करोड़ रुपये था और तोल २४०० टन। उस शक्तिशाली पनडुब्बी को डुबाकर हमारी नौ सेना ने अनुपम विजय प्राप्त करके शत्रु को जर्जर बना दिया। इस युद्ध में अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन ने शत्रु का पूर्ण समर्थन किया परन्तु हमारे मित्र देश रूस के द्वारा उसके षडयन्त्रों को विफल कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे शत्रु ने काश्मीर पर अधिकार करने की योजना बनाई और १३० टैंकों की बख्तरबन्द सेना लेकर काश्मीर पर धावा बोल दिया। शत्रु की सेना प्रबल वेग से आगे बढ़ रही थी। पहाड़ी प्रदेश होने के कारण हमारी सेना के पास उस मोर्चे पर बहुत कम टैंक थे। हमारी वायुसेना के वीरों ने शत्रु से लोहा लिया। उन्होंने ५०० बमवर्षकों से शत्रु के टैंकों पर धावा बोल दिया। नीचे स्थल सेना भी आगे बढ़ी। छम्ब मोर्चे पर घमासान युद्ध हुआ। दोनों ओर के सहस्त्रों वीर मारे गये। हमारी सेना ने शत्रु के आक्रमण को रोक कर इस मोर्चे पर शत्रु सेना को परास्त किया। शत्रु के अधिकांश टैंकों को हमारे वायुयानों ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। हरिद्वार के वीर लेफ्टिनेंट ज्ञान प्रकाश बहुखण्डी ने इसी मोर्चे पर वीरगति प्राप्त करके हमारे नगर के तथा देश के गौरव को उज्जवल किया। राजस्थान मोर्चे पर लौंगवाला नाम की चौकी के निकट पाकिस्तानी टैंकों का हमारे वीरों ने कब्रिस्तान बना दिया। इस मोर्चे पर शत्रु के ४० टैंकों को नष्ट-भ्रष्ट करके हमारी स्थल सेना और वायुसेना ने विजय प्राप्त की। सिन्ध क्षेत्र की लगभग ४८० वर्ग मील भूमि पर हमरी स्थल सेना ने अधिकार कर लिया। गुजरात की सीमा के निकट शत्रु की लगभग ३०० वर्ग मील भूमि पर हमारी वीरवाहिनी ने अधिकार करके शत्रु को पीछे ढकेल दिया। लद्दाख (लेह) सड़क पर, जो काश्मीर की सीमा पर है, शत्रु की लगभग ५० चौकियाँ पर्वत पर बनी हुई थीं। इनके द्वारा शत्रु बड़ी सरलता से लेह मार्ग को काट सकता था और लद्दाख से हमारा सम्बन्ध-विच्छेद कर सकता था। इन सभी महत्वपूर्ण चौकियों पर घमासान युद्ध हुआ। स्थल सेना ने वायुसेना के सहयोग से शत्रु सेना को छिन्न-भिन्न करके शत्रु की ५० चौकियों पर अधिकार प्राप्तकर इस महत्वपूर्ण सड़क को सुरक्षित बना दिया है।

हमारी वीर सेना ने १४३,००० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र वाले बांगला देश को मुक्त करके चकित कर दिया। यहां शत्रु सेना के एक लाख से अधिक सैनिक और सहस्त्रों अर्ध सैनिक थे।

इस आक्रमण में भी वायु सेना तथा जल-सेना का थल सेना को पूर्ण सहयोग प्राप्त था। जनरल अरोड़ा इस क्षेत्र के सेनापति थे। शत्रु ने प्रमुख नगरों में विपुल अस्त्र-शस्त्रों के भण्डार सुरक्षित कर रक्खे थे। जैसोर छावनी ऐसा ही नगर था जिसे पाकिस्तानी सेना का सुदृढ़ दुर्ग माना जाता था। हमारी वीर सेना को मुक्ति-वाहिनी का पूर्ण सहयोग मिला। इस नगर से बाहर साधारण सा युद्ध हुआ। इसी समय हमारे प्रधान सेनापति जनरल मानिक शाह ने आकाशवाणी के द्वारा जनरल फरमान अली और जनरल नियाजी तथा पाकिस्तानी सैनिकों को सन्देश दिया—"मैं भारत की स्थल सेना का प्रधान सेनापति मानिकशाह तुमको चेतावनी देता हूँ कि तुमको हमारी सेना ने चारों ओर से घेर लिया है। तुम्हारी वायु सेना पूर्ण रूप से नष्ट कर दी गई है तथा जलमार्ग भी हमारी जल-सेना ने रोक लिए हैं, कुछ जलयानों पर हमारी जलसेना का कब्जा है तथा कुछ डुबो दिये गये हैं। यदि आप लोग भागने का प्रयत्न करेंगे तो उसका परिणाम मौत होगा। यदि आप आत्मसमर्पण कर देंगे तो जिनेवा समझौते के अनुसार आपके साथ अच्छा व्यवहार किया जायेगा और आपके प्राण बच जायेंगे।

इस घोषणा से पाक सेना में निराशा फैल गई। जैसोर में बिना युद्ध के ही हमारी वीर सेना ने अधिकार कर लिया। वहाँ पर हमें विशाल अस्त्रों का भण्डार मिला। शत्रु सेनाने वहाँ पर अपना बना-बनाया भोजन भी छोड़ दिया और प्राण बचानें के लिये निकट के वनों में भाग गई। शत्रु सेना पीछे भागती हुई पुलों तथा अन्य याता–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात साधनों को नष्ट करती हुई जाती थी, परन्तु हमारे कुशल इन्जीनियर शीघ्र ही पुलों व मार्गों का निर्माण और सुधार करके शत्रु सेना को आश्चर्ययुक्त कर देते थे।

ढाका पर विजय प्राप्त करने के लिए हमारे वायुयानों ने सैनिक स्थानों पर बम-वर्षा करके उन्हें नष्ट कर दिया। गवर्नर के भवन को भी बम-वर्षा से नष्ट किया गया। हमारे १०००० छाता सैनिक ढाका के निकट उतर गये। सहस्त्रों सैनिक हेलीकौप्टरों की सहायता से आये। ढाका को घेर लिया गया। ढाका के गवर्नर तथा सेना ने आत्म-समर्पण कर दिया। कुल मिलाकर लगभग १ लाख सैनिकों ने शस्त्र डालकर पराजय स्वीकार की। जनरल नियाजी ने जनरल अरोड़ा को झुक कर सैनिक प्रणाम करके आत्म-समर्पण किया और अपना पिस्तौल उन्हें भेंट कर दिया। इस प्रकार १३ दिनों में बाँगला देश को मुक्त करके हमारी विजयी सेना ने विश्व को चकित कर दिया। सोवियत रूस का हमें पूर्ण समर्थन मिला। इसके लिए हम उसके आभारी रहेंगे।

भारत–पाक क्षतियाँ

१४ दिन के भारत–पाक युद्ध में दोनों पक्षों की निम्न प्रकार क्षति हुई है।

	पाकिस्तान की क्षति	भारत की क्षति
अधिकृत क्षेत्र–लाभ	१५०० वर्गमील	४७ वर्गमील
नष्ट विमान–क्षति	८४	४५
,, टैंक	२४४	७३
,, युद्धपोत	४	१
,, पनडुब्बी	२	×
,, गनबोट	१६	×
,, छोटे जहाज	१२	×

हताहत भारतीय सैनिक

	पूर्वी मोर्चा	पश्चिमी मोर्चा
मृत	१०२१	१२८६
घायल	२९१५	३२४८
लापता	८९	२०७४
	४०२५	६६०८

पाकिस्तानी सैनिक दोनों मोर्चों पर कितने हताहत हुए इसका विवरण अज्ञात है किन्तु अनुमान है कि वह संख्या भारत से लगभग तिगुना है। इसके अलावा पाकिस्तान के लगभग एक लाख से अधिक युद्धबन्दी भारत की हिरासत में है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षाओं में विद्यार्थी क्यों असफल होते हैं ?

(कु० रश्मि गुप्ता, बी०एस०सी०)

क्रमश: प्रत्येक वर्ष परीक्षाओं के परिणामों में गिरावट आ रही है। शिक्षा के गिरते हुये स्तर पर राजनेता, शिक्षाविद तथा माता-पिता चिन्तित हैं। असफल रहने पर स्वयं विद्यार्थी भी निराश हो जाते हैं। इसके लिये कोई दोषी अध्यापकों को ठहराता है तो कोई परीक्षार्थियों को। राष्ट्र का अपार धन और समय व्यर्थ में नष्ट हो रहा है।

इसका मूल कारण जानने का कोई कष्ट नहीं करता है। तो, लीजिये—गणित की नवीन खोज के आधार पर असफलता के कारण प्रस्तुत हैं। आप स्वयं भी देखिये, सोचिये:—

विशेष कार्य जो विद्यार्थी को करने होते हैं	वर्ष में कार्य के दिन	वर्ष में पूर्ण दिन	शेष
रविवार के अवकाश	५२ दिन	३६५	
अन्य अवकाश तथा त्योहार आदि	४१ ,,		
ग्रीष्म अवकाश	५२ ,,		
प्रतिदिन ८ घन्टे निद्रा	१२२ ,,		
प्रति दिन २ घन्टे घर का काम तथा घूमना	३० ,,		
आराम तथा सिनेमा आदि	३० ,,		
भ्रमण तथा सगे-सम्बन्धियों में आना-जाना	८ ,,		
अस्वस्थता तथा बीमारी	१० ,,		
त्रैमासिक, अर्द्ध वार्षिक परीक्षायें	२० ,,		
	३६५	३६५	०००

वर्ष के ३६५ दिनों में जब अन्य बहुत से कार्य करने होते हैं तो, भला अध्ययन के लिये समय कहाँ बचता है ? बेचारा विद्यार्थी फिर सफल हो तो कैसे ? बेचारे विद्यार्थी को ही दोष दिया जाये तो कैसे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनको कराल काल भी कवलित नहीं कर सका। 'सदाचार' ही 'कला' को नित्यत्व' प्रदान कर सकता है क्योंकि सत् आचार ही जीवन का नित्य आचरण हो सकता है। जो सत्=शाश्वत है वही 'शिव' हो सकता है, अनित्य=असत् कभी भी शिव=मंगलमय नहीं हो सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होगया होगा कि वही कला सार्थक हो सकती है जो सदाचार प्रेरणोन्मुखा हो। ऐसी कला ही महान् विभूतियों का सजन कर सकती है, राष्ट्र को वास्तविक गौरव-गरिमा प्रदान कर सकती है और जीवन को 'ज्योतिमय' बना सकती है। अतः श्रेष्ठ कलाकारों को चाहिये कि वे अपनी 'कलाकृतियों' का भव्य प्रसाद 'सदाचार' की दृढ़ भित्ति पर निर्मित करें ताकि जीवन मंगलमय बन सके। गोस्वामी तुलसीदास जी ने क्या ही सुन्दर ढंग से यह भावना प्रकट की है—

"कीरति भनिति भूति भली सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥

भारत-रत्न

यह पारितोषिक कला, साहित्य, विज्ञान किसी भी क्षेत्र में अद्वितीय व अत्यन्त महत्वपूर्ण किये गये कार्य के फलस्वरूप दिया जाता है।

"भारत रत्न" से सम्मानित किये गये भारतीय

(संकलन कर्त्ता : प्रदीप कुमार शर्मा, कक्षा १२बी$_2$)

१९५४ श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
१९५४ डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
१९५४ डा० सी वी० रामन
१९५५ डा० भगवान दास
१९५५ डा० एम० विश्वेश्वरय्या
१९५५ पं० जवाहरलाल नेहरू
१९५७ पं० गोविन्द वल्लभ पन्त
१९५८ डा० डी० के० कारवे
१९६१ डा० सी० सी० राय
१९६१ श्री पुरुषोत्तमदास टन्डन
१९६१ डा० राजेन्द्र प्रसाद
१९६३ डा० जाकिर हुसैन
१९६३ डा० पी० वी० काने
१९६६ श्री लाल बहादुर शास्त्री (मरणोपरान्त)
१९७१ श्रीमती इन्दिरागाँधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला और सदाचार

(हेमचन्द्र उप्रेती, एम०ए०, एल०टी)

एक बार आकाशवाणी में विश्वविख्यात दार्शनिक और भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने 'कला' की समीक्षा करते हुए कहा था—

"कं=आनन्द लाति या सा कला"

अर्थात् जो अपनी कृति के द्वारा आनन्दानुभूति का उद्रेक करे वही कला है। इससे स्पष्ट है कि 'कला' और 'आनन्द' का नित्य सम्बन्ध है। पर 'सदाचार' का 'कला' से किस प्रकार का सम्बन्ध है, इसी विषय पर विवेचन किया जाता है।

आनन्द परमात्मा का नित्य स्वरूप है जैसा कि 'सच्चिदानन्द' (सत्, चित्, आनन्द) शब्द से सिद्ध है। इसी परमात्मा की विभूति 'सत्' भी है जिसका अर्थ है 'नित्यत्व'। जिस आचार की आधारशिला 'सत्' पर विद्यमान हो उसे ही 'सदाचार' कहा जाता है। अत: 'सदाचार' और 'आनन्द' का अभिन्न सम्बन्ध होने के कारण 'कला' के साथ भी सदाचार' का शाश्वत सम्बन्ध है।

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'—आचार्य विश्वनाथ जी की इस उक्ति के अनुसार रसानुभूति कारिणी कृति ही 'कला' संज्ञा से विभूषित होने योग्य होती है। 'रसो वैस:' के अनुसार रस ब्रह्मानन्द-सहोदर है। ब्रह्मानन्द का आधार भी 'सत्' है क्योंकि यह उसकी नित्य विभूति है। अत: 'सदाचार' ही ब्रह्मानन्द का साधन और उसी माध्यम से 'कला-कृति' को राष्ट्रोपयोगी बनाने का साधन है।

पाश्चात्य आलोचकों में मैथ्यू आर्नल्ड व रस्किन उसी 'कला' को श्रेष्ठ मानते हैं जिससे मानव का चरित्र-निर्माण हो, वह सदाचार मार्ग पर अग्रसर हो और राष्ट्र को ऊँचे आदर्शों की दिशा में प्रेरित कर सके। इतिहास भी इस तथ्य का साक्षी है कि जो कलाकृतियाँ सदाचार की प्रेरणा से विमुख रहीं वह काल के प्रबल झंझावात द्वारा नष्ट कर दी गईं। भारतीय आर्ष महाकाव्य 'रामायण' व 'महाभारत' चिरकाल से जनमानस के लिए स्थायी प्रेरणा-स्रोत क्यों बने हुए हैं? गोस्वामी तुलसीदास जी विरचित 'रामचरित-मानस' रूपी 'मानस' में अवगाहन करके जन मानस मलविरहित क्यों बनता है? शेक्सपियर की अमर सूक्तियाँ अमरत्व-विधायिनी क्यों हैं? इन सब पर गम्भीरतापूर्वक मनन करके यही निष्कर्ष निकलता है कि ये सब अमर कला-कृतियाँ सदाचार की महती प्रेरणा से अनुप्राणित थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न राष्ट्रों के स्वतंत्रता दिवस

(कु० कल्पना डबराल, कक्षा १० ए.)

क्रम	देश का नाम	तारीख	क्रम	देश का नाम	तारीख
१	भारत	१५ अगस्त	१३	स्पेन	१४ अप्रैल
२	अमरीका	४ जौलाई	१४	अफगानिस्तान	२७ मई
३	रूस	७ नवम्बर	१५	श्री लंका	४ फरवरी
४	फ्रान्स	१४ जौलाई	१६	जापान	२० अप्रैल
५	चीन	१० अक्तूबर	१७	यूगोस्लोवेकिया	२९ नवम्बर
६	आस्ट्रेलिया	२६ जनवरी	१८	फिनलैंड	६ दिसम्बर
७	बर्मा	४ जनवरी	१९	अर्जेनटाइना	२५ मई
८	कनाडा	१ जौलाई	२०	मैक्सिको	१४ सितम्बर
९	पाकिस्तान	१४ अगस्त	२१	इन्डोनेशिया	१७ अगस्त
१०	तुरकी	१ नवम्बर	२२	इजराइल	३० अप्रल
११	चेकोस्लोवेकिया	२८ अक्तूबर	२३	नोर्वे	२४ जून
१२	बेलजियम	४ अक्तूबर	२४	स्विटजरलैंड	३० अप्रैल

जग—जीवन में जो चिर-महान, सौन्दर्यपूर्ण औ सत्यमान्,
मैं उसका प्रेमी बनूं नाथ, जिसमें मानव-हित हो समान।
जिससे जीवन में मिले शक्ति, छूटें भय, सन्शय, अन्ध-भक्ति,
मैं वह प्रकाश बन सकूं नाथ, मिल जावें जिसमें अखिल व्यक्ति।

'युगान्त' से-(सुमित्रानन्दन पन्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी० बी० म्यु० इण्टर कालिज, हरिद्वार, छात्र कल्याण परिषद्–कार्यकारिणी तथा कक्षा प्रतिनिधि, १९७१–७२

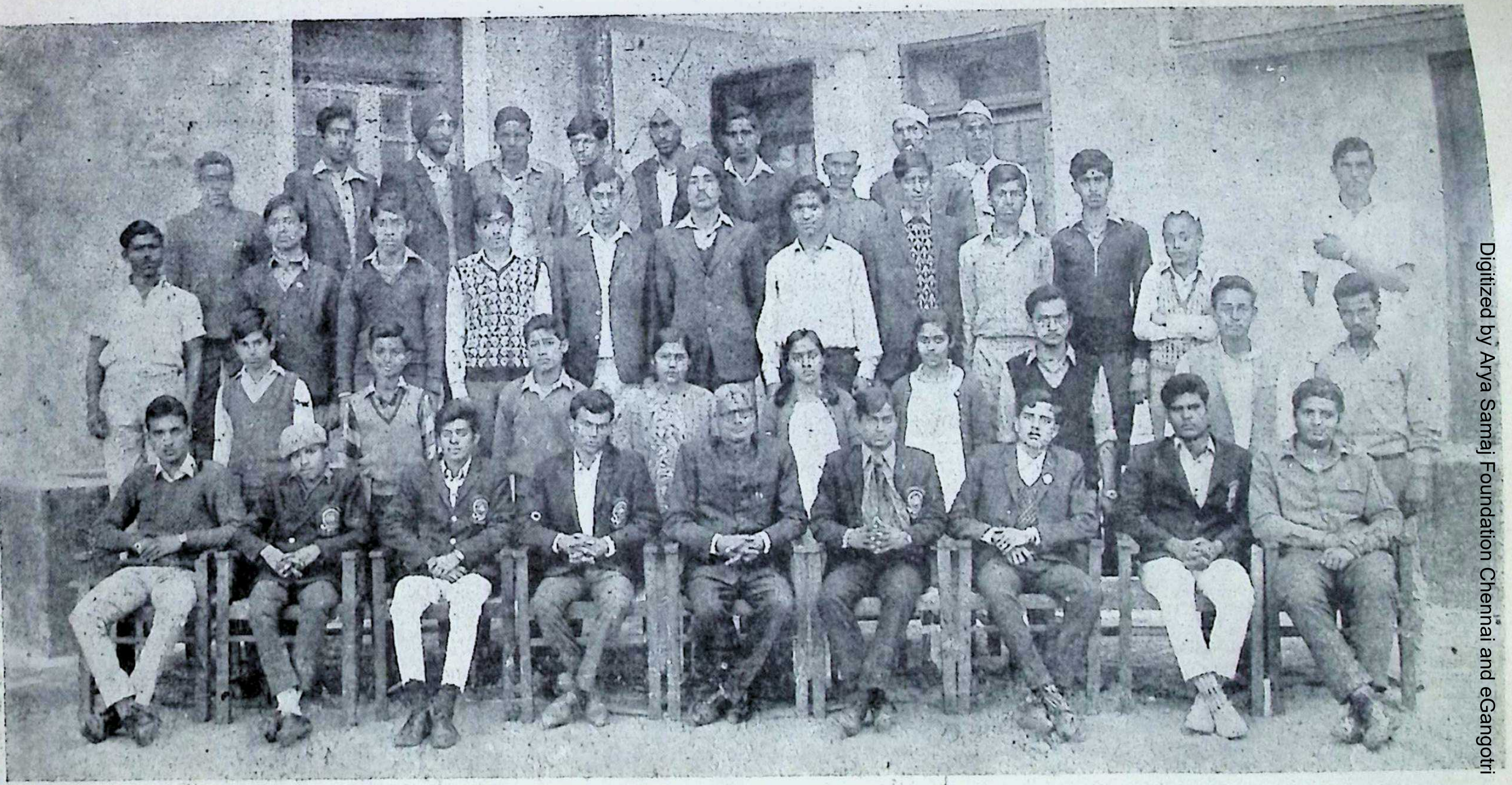

प्रथम पंक्ति—कुर्सियों पर—प्रदीप डोगरा (सं०जलपान), सोमप्रकाश नैथानी (उप सचिव), विष्णु भारद्वाज (उपाध्यक्ष), चमन प्रकाश (अध्यक्ष), श्री सोहन लाल गुप्ता
(बायें से दायें) (प्रधानाचार्य), किशोर कपूर (सचिव), वासुदेव मिश्रा (सदस्य), वीरेन्द्र कुमार चौहान (उ.म अनु.) प्रदीप शर्मा (सं अनु)
दूसरी पंक्ति में खड़े हुये —हरीश भागवानी (सदस्य), राकेश कुमार गोयल सदस्य), रामबहादुर (सदस्य) कु. ईना मल्होत्रा (कक्षा प्रति.) कु. अजिन्द्रमान (कक्षा प्रति.)
(बायें से दायें) कु. रमिन्द्र बग्गा (कक्षा प्रति.), योगेन्द्रपाल सिंह (कक्षा प्रति.) कैलाश पांडे (क प्र.), ओंकार शर्मा (सदस्य)
तृतीय पंक्ति — रामलाल (सेवक) विजयकुमार गोयल (क प्र.), दीपककुमार (सदस्य), मुकुल सिंघल (क प्र.), राकेशकुमार बाली (सदस्य), नरेन्द्रपाल सिंह (कक्षा प्र.)
(बायें से दायें) विजय कु. जैन (सदस्य), कृष्ण कुमार (सदस्य), सुधीर गुप्ता (क प्र.), प्रताप राय (सदस्य), अमरजीत सिंह (सदस्य), घनानन्द (चप.)
चौथी पंक्ति— गबल सिंह (चप), अशोक गोयल (क.प्र.) अवतार सिंह (क प्र.), नरेन्द्र उपाध्याय (क.प्र.), विजय कुमार भाटिया (क.प्र)
(बायें से दायें) किशन सिंह वेदी (सदस्य), समनरेश शर्मा (क.प्र), देशराज (चप.) आत्माराम (सेवक), हरफूल (माली)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पी० बी० म्यु० इण्टर कालिज हरिद्वार (३/८२ कम्पनी, एन० सी० सी० ग्रुप : १९७१-७२)

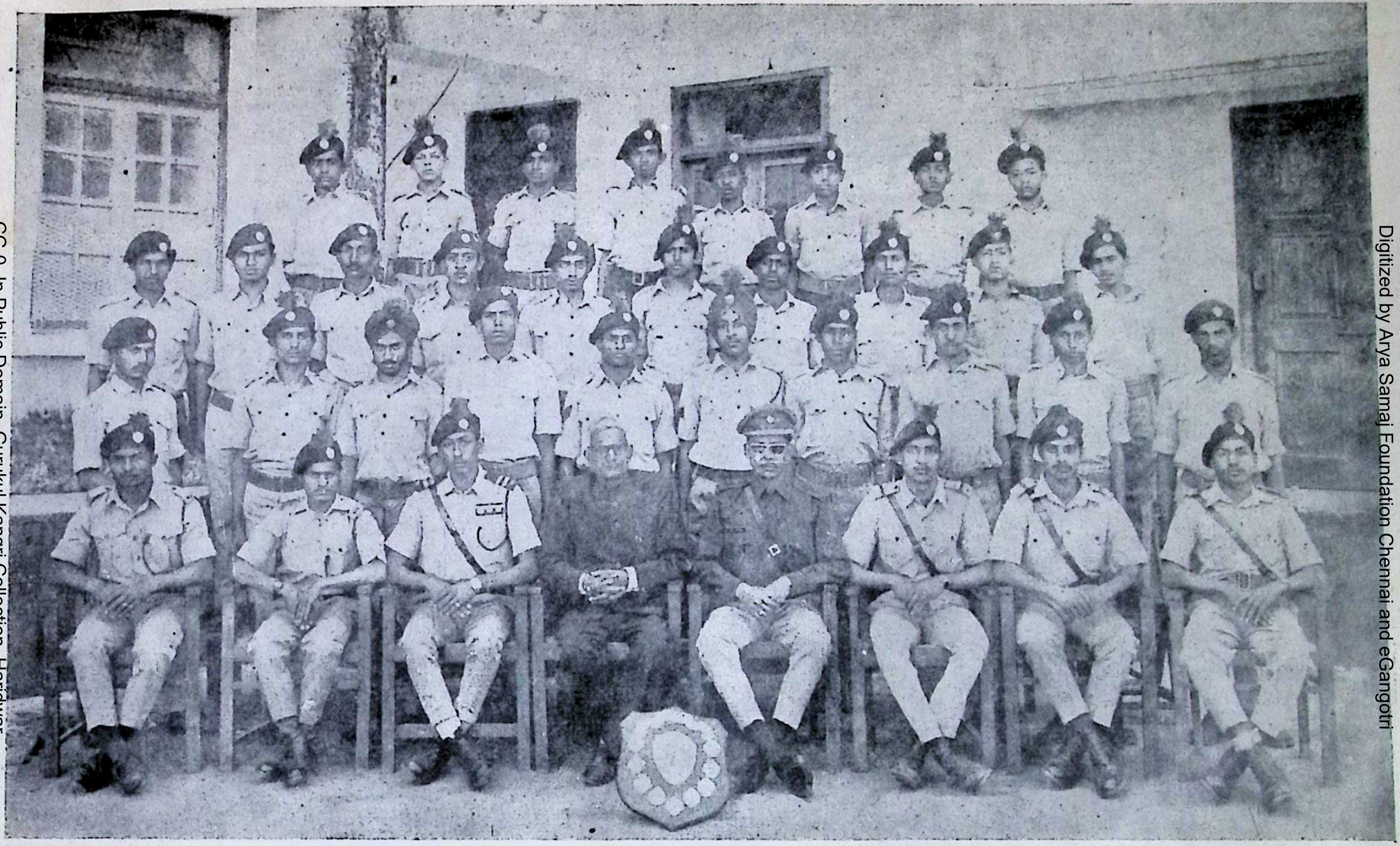

कुर्सियों पर बैठे हुये— सार्जेन्ट विजय कुमार जैन, जी.एस. पटवल (सी.एस.एम.), सी.पी. शर्मा (वी.एस.यू.ओ.), श्री सोहनलाल गुप्ता (प्रधानाचार्य)
(बायें से दायें) कैप्टन एम.पी. शर्मा, पी.के. डोगरा (यू.ओ.), वी.के. जैतली (यू.ओ.) ए.के. शर्मा (यू.ओ.)

खड़े हुए, प्रथम पंक्ति—एन के. वर्मा, एन.के.शर्मा, डी.एस. कग्गा, वी.के. शर्मा, सार्जेन्ट टी.के. गर्ग, सार्जेन्ट एन. सिंह, सार्जेन्ट ए.के. गोयल, अनील बाली,
(बायें से दायें) अशोक वर्मा, हरीश बहुखडी, जी.एल.साहू, एच.एस. सिरोही,

खड़े हुये, द्वितीय पंक्ति-बायें से दायें) वी.एम. भारद्वाज, ए.के. गर्ग, मुकुल सिंघल, यशपाल व्यास, किशनसिंह, के.एस. नेगी, वी.के. गोयल, आदर्श गौतम ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वतन के नौजवानों

(अनिल शर्मा, कक्षा ११ अ)

वतन के पासवान, ओ हिन्द के जवान।
तुम लो मेरे प्रणाम, तुम लो मेरे सलाम॥

डाले नजर वतन पे, जो तुम उसको टोक दो,
उठाये बुरी नजर तो तुम उसको रोक दो,
हिम्मत से तुम लड़े तो हमें तुम पे नाज है,
जो हिन्द के खिलाफ कहें, उसको टोक दो,
वतन के पासवान, ओ ! हिन्द के जवान। तुम लो०

ओ ! हिन्द के जवाँ जरा होश में तू आ,
मैदाने-जंग में कुछ हौसला दिखा,
मिटने का वक्त देश पे आया है अब 'अनिल,'
ओ ! हिन्द के सपूत आज शीश तू कटा,
वतन के पासवान, ओ ! हिन्द के जवान। तुम लो०

दिल कह रहा है आज तू देख शान से,
दुश्मन को तुम मिटादो अरे ! इस जहान से,
प्यार ही प्रकाश बने आज देश में,
हम शीश भी चढ़ायें सदा मां के क्लेश में,

वतन के पासवान, ओ हिन्द के जवान।
तुम लो मेरे प्रणाम, तुम लो मेरे सलाम॥

दिल से निकलेगी न मर कर भी,
वतन की उल्फत।
मेरी मिट्टी से भी,
खुश-बूयें वतन आयेगी।

(शहीद भगतसिंह)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिज में एन. सी. सी. का इतिहास

लेखक- -कैप्टेन श्री महेश प्रशाद शर्मा, एम.ए.,एल.टी.

श्री महेश प्रशाद शर्मा, एम.ए.,एल.टी.

श्री शर्मा जी १ सितम्बर १९२७ में बरेली में जन्मे प्रारम्भिक शिक्षा–बरेली। उच्च शिक्षा–मेरठ कॉलिज, मेरठ। एल० टी० खुर्जा से। अध्यापक बनने वाले श्री शर्मा का जीवन आरम्भ हुआ कलकत्ता से अंग्रेजी दवाइयों के सेल्समैन के रुप में। सन् १९५० में भल्ला कालिज में अध्यापन कार्य आरम्भ। सन् १९६० में अंग्रेजी प्रवक्ता। सन् १९६१ मे एन० सी० सी० अधिकारी। सन् ६८ में 'कैप्टेन' पद प्राप्त। शान्त और लजीले स्वभाव वाले श्री शर्मा जी को युवकों में सैनिक भावना भरने का श्रेय है। —सम्पादक

बात है सन् १९६१ की, मैं उस समय काप्पटी से एन.सी.सी. का प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने विद्यालय में आया था। बहुत परिवर्तन हो गया था मेरी चाल–ढाल में, जैसे कि तीन मास की ट्रेनिंग ने स्फूर्ति भर दी थी मेरी रग-रग में। सुबह से शाम तक, प्रशिक्षण काल में, जो स्फूर्तिदायक कार्य-क्रम चलते थे, उन से मेरी तो कायापलट हो चुकी थी।

सन् १९६३ से एन. सी. सी. का प्रशिक्षण अपने ही कालिज में आरम्भ हो गया। इस ओर छात्रों का अकथ आकर्षण था। दो सौ छात्र-सैनिकों से हमारी राइफल कम्पनी चल निकली। जब हमारे छात्र नई–नई वर्दियों में ड्रिल करने के लिये मैदान में निकलते थे तो देखते ही बनता था! सबसे पहिला हमारा प्रशिक्षण शिविर बरेली में लगा। इसमें ४८ छात्रों ने भाग लिया। 'बी' सर्टिफिकेट की परीक्षा में सभी छात्र सफल रहे।

लगातार अनेक वर्षों तक हमारी एन. सी. सी. की कम्पनी प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करती रही। एन. सी. सी. के युवक सैनिकों के लोभवश ऋषिकेश-कैम्प में कुछ गड़बड़ी हुई। प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम आने पर भी हमारे विद्यार्थी 'अनुशासन में पिछड़ जाते थे। किन्तु सर्व श्री लालरूप, नारायणसिंह, चन्द्रपालसिंह सुरेन्द्रकुमार डोगरा, पुरुषोत्तम शर्मा, प्रकाश सहगल विनोद शर्मा, त्रिभुवन शर्मा, विजेन्द्र शर्मा, हरिप्रसाद, सतीश जोशी, नरेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र-बेनीवाल आदि युवकरत्न हमारी कम्पनी का गौरव बढ़ाने में सहायक हुये।

इस वर्ष आरम्भ से ही मैंने निश्चय किया कि इस बार हमारी छात्र-सेना प्रशिक्षण शिविर में उच्च स्थान प्राप्त करेगी। प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल में लगा था। पहिले ही दिन शिविर साज-सज्जा में हमारे कैडेट्स प्रथम आये। अन्तिम दिन हम सबसे आगे रहे। इन दिनों सभी कैडेट्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण मनोयोग से प्रशिक्षण शिविर में भाग लेते थे। श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा ने समूचे कैम्प के बटालियन सीनियर अण्डर आफिसर का कार्य सबसे अच्छा किया। अशोक कुमार शर्मा ने लंगर कमान्डर के रूप में सभी के भोजन की उत्तम व्यवस्था की। अंतिम दिन का सुन्दर कार्य-क्रम मेरे ही द्वारा निर्देशित तथा संचालित था। सीनियर अण्डर आफिसर चन्द्र प्रकाश शर्मा, गगासिंह पटवल तथा कैलाश पांडे ने मुझे बहुत सहयोग दिया। बी तथा सी सर्टीफिकेट परीक्षा में हमारा विद्यालय सबसे ऊपर आया।

अन्त में मैं अपने अत्यन्त प्रिय दो शिष्यों का उल्लेख किये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने न केवल हमारे कालिज, नगर का ही नाम ऊँचा किया है वरन् राष्ट्र-मस्तक के गौरव को बढ़ाया है। स्वर्गीय से० ले० देवेन्द्र शर्मा मेरे अनुज के समान था। इसके बड़े भाई श्री राजेन्द्र शर्मा ने अजमेर जाते समय मुझे उसका उत्तरदायित्व सौंपा था। से० ले० ज्ञान प्रकाश बहुखंडी का मुस्कुराता हुआ चेहरा मैं नहीं भूल सकता। हमारी एन०सी०सी० के रूप में उसकी शानदार आवाज को क्या कभी भुलाया जा सकेगा? सेना में भर्ती होकर राष्ट्र सेवा करते हुये बलिदान हो जाने का उसका सपना सचमुच ही साकार हो गया।

नया पन्ना पल्टे इतिहास,
हुआ है नूतन वीर्य-विकास,
विश्व तू ले सुख के निश्वास,
तुझे हम देते हैं विश्वास।

(बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन')

अशेष रक्त तोल दो,
स्वतन्त्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,
डरो नहीं, हटो नहीं,
बढ़े चलो. बढ़े चलो।

(सोहन लाल द्विवेदी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर बालक—गीतिनाट्य

(श्री श्रीविलास डबराल, एम०ए०, हिन्दी प्रवक्ता)

पाक–भारत युद्ध में सम्पूर्ण देश जैसे शौर्य की सुदृढ़ चट्टान बन गया था। नर-नारी और बच्चे-बच्चे में देश-गौरव-हित में जैसे अपराजित साहस व्याप्त हो गया था। प्रस्तुत गीति-नाट्य में एक परिवार के चार बच्चों में, जो क्रमश: चौदह, बारह, दस और आठ वर्ष के हैं, अपनी माता के साथ हुये सम्वाद अदम्य राष्ट्रीय–भावना से ओत–प्रोत हैं। इसके रचियता श्री डबराल, हिन्दी के प्रख्यात लेखक तथा कवि हैं जो 'भागीरथी' के प्रवाह को गति देने में सतत गतिशील रहे हैं। —सम्पादक

चारों बच्चों के संयुक्त उद्गार— सीमा पर बज रहा बिगुल है,
टैंक गरजते आ रहे,
समर-क्षेत्र में गये युवक सब,
हम बच्चे भी जा रहे।
हम अवश्य हैं नन्हें मुन्हें,
पर हम हैं चिनगारियां,
हम सह सकते कैसे बोलो,
पाकिस्तानी गालियाँ ?

माँ— अरे ! कहाँ तुम जा रहे ?
कैसा रोष दिखा रहे ?

एक बालक— मां, हम रण में जा रहे,

दूसरा बालक-- रिपु हैं बढ़ते आ रहे,

तीसरा बालक— धीरे धीरे निज सीमा पर,
पाकिस्तानी छा रहे,

छोटा बालक— मां, हमको तलवार दो,

दूसरा बालक— बरछी, तीर, कटार दो,

तीसरा बालक— इन चीजों से क्या होगा मां–
बन्दूकें दो–चार दो।

माँ— मेरे बच्चों अभी देश के,
जीवित सभी जवान हैं,
पाकिस्तानी तिनका, चीनी-
छप्पर, ये तूफान हैं।

एक बालक— मां, जवान किसको कहते ?

दूसरा बालक— जो तन से मोटे होते ?

तीसरा बालक— या उनको कहते हैं जो,
सब कष्टों को हँसते सहते ?

माँ— बच्चों वही युवा है जिसमें,
देश–प्रेम की आग है,
जिसके कारण मातृ-भूमि का,
रहता अमिट सुहाग है।

छोटा बालक— फिर बच्चा क्यों कहती, मन में,

दूसरा बालक— मचल रहा तूफान है,

तीसरा बालक— मैं प्राणों की बलि दे सकता,
मेरा हिन्दुस्तान है।

माँ— नहीं, नहीं तुम तन से छोटे,
कोमल हो, लाचार हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फौलादी जंजीर नहीं हो,
तुम कलियों के हार हो।

सबसे छोटा बालक–माँ, हम छोटे नहीं, हमारा,
साहस, बहुत महान है।

दूसरा बालक— क्या इन नन्हीं आंखों में–
बन्दी नहीं जहान है?

तीसरा बालक— छोटे पंछी के पंखों में,
बँधा गगन–विस्तार है,

चौथा बालक— छोटी सी चिंगारी रखती,
ज्वाला धूंम्रा–धार है।

छोटा बालक— छोटा सा है बीज मगर,
उसमें जंगल का वास है।

दूसरा बालक— छोटों के महान् कार्यों से,
भरा हुआ इतिहास है।

माँ को मुस्कुराते हुये देखकर—

सबसे छोटा
(बड़े भाई से)— भैया, माँ मुस्का रही,

दूसरा बालक— हमें राह दिखला रही,

तीसरा बालक— चलो युद्ध में चलते हम,
सीमा हमें बुला रही।

सब मिलकर— दायाँ–बायाँ, दायाँ–बायाँ,
हटजा पाकिस्तान तू,
इन चट्टानों से टकरा कर,
होगा लहू–लुहान तू।
तेरे हाथ रँगे हैं जुलमी,
बँगला–देशी खून से,
अब हम टकरायेंगे तेरे,
जुलमी, जंग–जनून से।
दायाँ–बायाँ, दायाँ–बायाँ,
'पिन्डी' अपने हाथ है,
नन्हें सैनिक चले युद्ध में,
देश हमारे साथ है।

तम्बाकू पीने के लाभ

अमरीका में एक कबीले के मुखिया ने अपने दल के एक युवक को तम्बाकू पीने के तीन अच्छे लाभ बताये–

१. यदि तुम ज्यादा तम्बाकू पिओगे तो तुम्हारे शरीर में इतनी तेज गन्ध आने लगेगी कि कुत्ते तुम्हे कभी नहीं काटेंगे।
२. यदि तुम काफी दिनों तक तम्बाकू पीते रहोगे तो तुम्हें फेफड़ों का रोग हो जायेगा, जिससे रात को सोते समय तुम्हे खांसी आती रहेगी, तुम्हे जागता हुआ जानकर, चोर चोरी न कर सकेंगे।
३. यदि तुम बहुत अधिक तम्बाकू पिओग तो जवानी हो में मर जाओगे, और बुढ़ापे की मुसोबतों से बच जाओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम की निर्मल धारा

कु० निर्मल अग्रवाल कक्षा ११ ए,

सेवा के लिए पहली शर्त प्रेम है, अर्थात् जिसके दिल में प्रेम है, वही सेवा कर सकता है। टॉल्स्टाय ने कहा है "प्रेम स्वर्ग का रास्ता है।" बुद्ध का कथन है "प्रेम इन्सानियत का नाम हैं।" ईसा ने कहा है "प्रेम ससार की ज्योति है।" विक्टर हूँगों का कहना है, "जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु" राम कृष्ण परमहँस ने कहा है, "प्रेम अमरता का समुद्र है।" "कबीर का कथन है," जिस घर में प्रेम नहीं वह मरघट के समान है, बिना प्राण के सांस लेने वाली लुहार की धौकनी।

अलग अलग शब्दों में सभी महापुरुषों ने प्रेम को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वास्तव में प्रेम मानव जाति की बुनियाद है। प्रेम ऐसा चुम्बक है, जो सबको अपनी ओर खींच लेता है। जिसके हृदय में प्रेम है, उसके लिए सब अपने हैं। भारतीय संस्कृति में तो सारी पृथ्वी को एक कुटुम्ब माना गया है।

जो सबको प्रेम करता है उससे बड़ा दौलतबन्द और कोई नहीं हो सकता। वह दूसरे के दिल में ऊँची भावना पैदा कर देता है। जबकि आप जानते हैं कि मनुष्य को जमीन से कितना प्रेम होता है। कौरवो ने कहा था कि हम पांडवों को सुई की नोक के बराबर भी जमीन नहीं देंगे, लेकिन विनोबा के प्रेम ने लाखों एकड़ भूमि एकत्रित कर दी। उन्होंने लोगों से यह नहीं कहा "मुझे जमीन दो, नहीं दोगे तो कानून से या जोर जबर दस्ती से तुम्हारी जमीन को छिनवा दूँगा। जिसका हृदय प्रेम से सराबोर है वह ऐसी भाषा कैसे बोल सकता था? उन्होंने कहा, "मेरे प्यारे भाइयों मैं तुम्हारे घर पर आया हूँ। तुम्हारे पांच बेटे हैं, छटा होता तो तुम उसका भी लालन पालन करते न! मुझे अपना छटा बेटा मान लो और मेरा हिस्सा मुझे दे दो।"

विनोबा का प्रेम ही तो था, जिसने लोगों के दिल को मोम बना दिया। किसी न किसी ने तो अपनी सारी की सारी जमीन उनके चरणों में रख दी। प्रेम के इतने बड़े चमत्कार की घटनायें हम किताबों में पढ़ते हैं, पर आज के युग में विनोबा ने उसे सामने करके दिखा दिया।

जिसका हृदय निर्मल हैं, उसी में ऐसे महान प्रेम का विकास रहता है। वैसे तो हम रोज प्रेम करते हैं। अपने भाइयों से, बच्चों से, माता पिता से, सगे सम्बन्धियों से प्रेम का व्यवहार करते हैं। लेकिन बारीकी से देखें तो वह असली प्रेम नहीं। हमारे प्रेम में कर्त्तव्यों की थोडी बहुत भावना रहती है। पर साथ ही यह स्वार्थ भी कि हमारे बच्चे बड़े होकर बुढ़ापे में हमारा सहारा बनेंगे हमें यह भरोसा हो जाये कि हमारा काम दूसरों के बिना भी चल जायेगा तो सच मानिये हमारे प्रेम का बर्तन बहुत कुछ खाली हो जायेगा। ऐसा प्रेम हमारे जीवन में छोटी मोटी सुविधायें पैदा कर सकता है, पर दुनिया को बाँध नहीं सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असली प्रेम तो वह है, जिसमें किसी प्रकार के बदले की भावना न हो। इतना ही नहीं, उसमें विरोधी के लिए भी जगह हो। गर्मी से व्याकुल होकर हम जाने कितनी बार सूरज को कोसते हैं पर सूरज कभी हम पर क्रोध दिखाता है? हम धरती को रोज पैरों से दबाते हुए चलते हैं, पर वह कभी खिन्न होती है? जरा गर्म हवा आती है तो हम कहते हैं:--मार डाला कम्बख्त ने। हमारी गाली का हवा कभी बुरा मानती है? यदि क्रुद्ध होकर सूरज, धूप और रोशनी न दें, धरती अन्न न दे, हवा प्राण न दें, तो सोचिये हम लोगों की क्या हालत होगी?

पर दुनिया उन्हें कितना ही भला बुरा कहे वे अपने धर्म को नहीं छोड़ सकते। उनके प्रेम में तनिक भी अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि उनके प्रेम के पीछे कोई स्वार्थ नहीं है वे प्रेम इसलिए देते हैं कि बिना दिये रह नहीं सकते यही है वास्तविक प्रेम।

ऐसे प्रेम का वरदान बिरलों को ही मिलता है। पर जिन्हें मिलता है, वे अपने को कृतार्थ बना जाते हैं। दुनिया को धन्य कर जाते हैं।

हम सरे-दार बसद शौक
जो घर करते हैं,
ऊँचा सर कौम का हो,
नजर से-सर करते हैं।
सूख जाये न कहीं
पौधा ये आजादी क।
खून से अपने इसे
इसलिये तर करते हैं।
इस गुलामी में खुशी
हम को तो आई न नज़र,
खुश रहो अहले-वतन
हमतो सफ़र करते हैं।

('हितैषी'–१९१८ ई०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापसी

कुमारी अजिन्दरमान कक्षा ११ बी,

भारती ने एक नए घर में कदम रखा था। वह बहुत प्रसन्न थी। अपने पिता का घर छूट जाने का उसे दुख भी था लेकिन फिर भी वह प्रसन्न थी। वह अपने जीवन के प्रथम चरण में प्रवेश कर रही थी। घर में मध्यानों के अतिरिक्त पड़ौसी औरतों और बच्चों की भीड़ सी लगी थी, सब नई दुल्हन को देखने के लिए उत्सुक थे। भारती को क्षणिक चैन न मिल रहा था। बेचारी कब से गठरी बनी बैठी थी। जरा भी तो वह अपनी कमर सीधी करने के लिए लेटना चाहती थी कि पडौसी स्त्रियां उसे आ घेरती।

काफी समय के बाद भीड़ कम हुई। पडौसी स्त्रियां अपने–अपने घरों को लौट गई। घर के अन्य सदस्य अपने-अपने कामों में लग गए। तब रवि भी दोस्तों से फुर्सत पाकर माँ को ढूढता हुआ कमरे में आया। और वहाँ माँ को न पाकर शीघ्र ही कमरे से बाहर चला गया।

अगले दिन लगभग सभी रिश्तेदारों ने विदा ली। घर का वातावरण पूर्व की तरह शान्त हो गया। कुछ ही दिनों में उसने अपनी कार्य कुशलता और अच्छे व्यवहार से सबके दिलों में स्थान पा लिया। घर के प्रत्येक सदस्य की सहानुभूति उसे प्राप्त थी। रवि अपने माता-पिता का एक मात्र पुत्र था। माँ-बाप उसे बहुत चाहते थे। अपने माता-पिता की इच्छा के अनुसार रवि ने ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त की थी। शिक्षा पूरी कर चुकने के बाद वह माता-पिता के बहुत रोकने पर भी फौज में भर्ती हो गया था। उसकी माँ नहीं चाहती थी कि उसका एक मात्र लड़का फौज में भर्ती हो लेकिन बाप ने, जो स्वयं एक अवकाश प्राप्त मेजर था, उसे अनुमति दे दी थी। रवि फौज में लैफ्टीनेन्ट था।

भारती पढ़ी-लिखी, सुन्दर व सुशील लड़की थी उसे फौजी अत्यधिक पसन्द थे। उसने कई रिश्तों को ठुकरा कर रवि को अपने जीवन साथी के रूप में चुना था। शादी के कुछ दिनों के पश्चात् रवि की सीमा पर से बुलावा आ गया। घर के प्रत्येक सदस्य ने अपना मन कड़ा कर के रवि को विदा दी। जाने से पहिले भारती ने रवि को तिलक लगाया और युद्ध में सफल होने का आशीर्वाद उसे माता–पिता की ओर से मिला।

अपने क्षेत्र में वह बड़ी वीरता के साथ लड़ा उसकी टुकड़ी ने एक के बाद एक चौकी पर कब्जा कर विजय प्राप्त की। लेकिन वह साहसी अन्त में क्रूर दुश्मन की पांच गोलियाँ जांघ पर झेलता हुआ घायल होकर गिर पड़ा लेकिन उसने अपनी टुकड़ी को आगे बढ़ते रहने का आदेश दिया और वह टुकड़ी उसके आदेश के अनुसार उसे वहीं छोड़ कर दुश्मन को परास्त करती हुई काफी आगे निकल गई।

इस घटना के काफी दिनों पश्चात् रवि के लापता होने का समाचार आया। भारती ने ही उसे डाकिए से प्राप्त किया और अपने मेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससुर को बताया, लेकिन इस विषय में रवि की माता को कोई जानकारी न दी गई। भारती ने जी कड़ा किया और किसी पर भी अपना दुख प्रकट न होने दिया।

× × ×

सर्दी की ठिठुरती चांदनी रात में भारती ने शान्त कमरे में घड़ी की टिक्-टिक् के अतिरिक्त एक अन्य शब्द भी सुना। यन्त्रवत वह उठकर दरवाजे की ओर बढ़ी। उसका अनुमान ठीक ही था। आवाज उधर से बाहर से ही आ रही थी। उसने देखा, चांद के प्रकाश में बाहर एक ओवरकोट और अग्रेजी हैटधारी व्यक्ति को पहिचानने का प्रयत्न किया। उसके एक हाथ में छड़ी थी। उस व्यक्ति का हैट चांद के प्रकाश को उसके चेहरे पर न पड़ने दे रहा था और भारती उसे पहचानने में असमर्थ थी। लेकिन शीघ्र ही उसने उसे पहचान लिया। रवि के अन्दर की ओर बढ़ने पर जब उसने देखा कि वह कुछ लंगड़ा कर चल रहा है तो उसके दिल को एक धक्का सा लगा वह रवि के सीने से लग गई।

रवि के लौटने का समाचार घर में फैलते देर न लगी। एक के बाद एक घर के सभी कमरों की बत्तियां जलने लगीं। भारत की वह ज्वलित दीप शिखा बुझते-बुझते बच गई थी। और अब सब अपनी-अपनी आँखों में प्रसन्नता के आँसू लिए रवि से उसकी वापसी की कहानी सुन रहे थे।

बापू की विनोद प्रियता

एक बार हस्ताक्षर करने वालों से तंग आकर बापू ने हस्ताक्षर की फीस पांच रुपये रख दी थी।

एक बालिका ने बापू को पांच रुपये दिये और हस्ताक्षर मांगे। जब बापू ने हस्ताक्षर कर दिये, तो वह बालिका फिर बोली, 'कुछ लिख भी दीजिये।'

'तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं ?' बापू ने पूछा।

'तम्बाकू की दूकान' लड़की ने उत्तर दिया।

बापू ने झट लिख दिया, 'तम्बाकू पीना बुरा है।'

(कु० कुमुद सिंघल, कक्षा १० ए)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनरल मानिकशा

प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी की राजनैतिक सूझ-बूझ के अतिरिक्त पाक-भारत युद्ध में हमारी अनुपम विजय का कारण हमारे सेनानियों में देश के लिये मर मिटने की अदम्य-भावना, तीनों सेनाओं का पारस्परिक सहयोग तथा थल, जल, वायु सेना के सेनाध्यक्षों का रण-कौशल है।

जनरल एस० एच० एफ० जे० मानेकशा का जन्म अमृतसर में ३ अप्रैल, सन् १९१४ को हुआ इनके पिता डा० एच०एफ० मानिकशा प्रथम विश्व युद्ध में कप्तान थे। थल सेनाध्यक्ष के पद पर पहुंचने वाले ये प्रथम भारतीय कमांड अफसर हैं। इनके पूर्ववर्ती सभी सेनाध्यक्षों की शिक्षा ब्रिटेन के प्रसिद्ध सैंडहर्स्ट सैनिक विद्यालय में हुई और उन्हें 'किंग्ज कमीशन' प्राप्त हुआ, किन्तु श्री मानिकशा ने देहरादून की सैनिक अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त किया। २० वर्ष की अवस्था में इन्हें कमीशन प्राप्त हुआ। पहिले ये स्थल-स्काउट्स में रहे, फिर फ्रनटियर फोर्स रायफल्स में रहे। प्रथम बर्मा अभियान में इन्होंने जापानियों के विरुद्ध कई लड़ाइयाँ लड़ीं। घायल होने पर भी इन्होंने बड़े शौर्य का प्रदर्शन किया, इसके लिये इन्हें 'मिलिटरी क्रास, प्रदान किया गया। क्वेटा के स्टाफ कालिज का कोर्स समाप्त कर वे पूर्वी सीमांत में बिग्रेड मेजर रहे। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में ये इन्डो-चीन भी गये।

सन् १९४६ में ६ मास का आस्ट्रेलिया में लेक्चर भ्रमण किया। सन् १९४८ में सैनिक अभियान' निर्देशक के रूप में जम्मू-काश्मीर में कार्य किया। सन् १९५७ में मेजर जनरल बने। सन् ६२ में ले० जनरल बने। भारत पर चीनी आक्रमण के समय ये उपूसी में कार्प्स कमांडर थे। सन् ६३ में पश्चिमी कमान के जी० ओ० सी० बने। सन् ६८ में राष्ट्रपति द्वारा 'पद्म भूषण' से अलकृत किये गये ८ जून, सन् १९६९ को सेनाध्यक्ष के पद को सुशोभित किया।

१४ दिन के अल्प कालिक युद्ध में जिस कौशल से शत्रु को शिकस्त दी, वह सचमुच गौरव की बात थी, विश्वमंच पर भारत एक शक्तिशाली देश के रूप में उभर कर आया। इस विजय के भागीदार वायुसेनाध्यक्ष मार्शल पी० सी० लाल तथा नौसेना अध्यक्ष एडमिरल एस०एम० नन्दा भी हैं।

जनरल मानिकशा के कार्यकाल में ६ मास की वृद्धि और की गई है। देश के जन-जन के अभिनन्दन और बधाई के समवेत स्वर में 'भागीरथी' का भी स्वर स्वीकार लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एडमिरल एस० एम० नन्दा

स्वतन्त्र भारत की नौ सेना शक्ति का परिचय पाक-भारत के पिछले संघर्ष में मिला। यह परिचय इतना गौरवशाली रहा, जिसमें भारत का चित्र अत्यन्त उज्ज्वल सिद्ध हुआ। इसका आधार था एडमिरल एस० एम० नन्दा का कुशल नेतृत्व। हमारी नौ सेना शक्ति ने युद्ध के प्रथम चरण में ही पाकिस्तानी नौ-सेना शक्ति की कमर तोड़ दी। उनका जन्म सन् १८१५ में हुआ था। नौ सेना में भर्ती होने से पूर्व उन्होंने कुछ दिन कराची पोर्टट्रस्ट में कार्य किया था।

सन् १९४८ में श्री नन्दा भारत के प्रथम युद्धपोत आई० एन० एस० पर नियुक्त हुये थे। उस समय वे ब्रिटेन में थे। तत्पश्चात् नौ सैनिक केन्द्रीय स्थल में 'पर्सोनेल' निर्देशक के रूप में दो वर्ष तक काम किया, फिर इन्होंने विध्वंसक जलपोत आई० एन० एस० रंजीत का संचालन किया। तत्पश्चात् केन्द्रीय स्थल में 'पर्सोनल चीफ' के रूप पदोन्नति हुई और 'कमोडोर' बना दिये गये।

सन् १९५७ में श्री नन्दा ने ब्रिटेन में भारतीय युद्धपोत 'आई० एन० एस० मैसूर' का उद्घाटन किया। शीघ्र ही इन्हें 'बम्बई नौसैनिक डॉकयार्ड' का महानिर्देशक नियुक्त किया गया। लन्दन के इम्पीरियल डिफेन्स कालिज में प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त नौ सैनिक केन्द्रीय स्थल में 'कमोडोर' के रूप में 'चीफ़ आफ़ मैटीरियल की हैसियत से और फिर सन् १९६२ में श्री नन्दा की नियुक्ति 'नौ सैनाअध्यक्ष' के पद पर हुई। दिसम्बर, १९६४ में इन्हें मझगांव डॉक लिमिटेड का मैनेजिंग डाइरेक्टर बना दिया गया। सन् १९६६ में उच्च-कोटि की सेवाओं के लिये 'परम विशिष्ट सेवा पदक' से इन्हें अलंकृत किया गया। इसी वर्ष इन्हें नौ सैनिक बेड़े का ध्वजाधिकारी बनाया गया। सन् १९६७ की फरवरी में नौ सैनिक कमानों के पुनर्गठन फलस्वरूप इस पद को 'ध्वज अधिकारी कमान्डर-इन-चीफ़ 'पश्चिमी नौ सैनिक कमान' की संज्ञा दी गई और इन्हें वाइस-एडमिरल बना दिया गया।

१४ फरवरी १९७० को देश की नौ सेना के अध्यक्ष के रूप में पदोन्नति हुई। पाक-भारत युद्ध में श्री नन्दा ने जिस कुशल रणनीति का परिचय दिया वह इतिहास में सदा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। उनके यशस्वी जीवन के साथ हम उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

एक से अनेक होने के, विस्तार के ज्ञान को 'विज्ञान' एवम् अनेक से एक—विस्तार से केन्द्रीयकरण के बोध को 'ज्ञान' कहते हैं।

—लोकमान्य तिलक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एयर मार्शल श्री पो० सी० लाल

वर्तमान् युद्ध कौशल अब थल का न रह कर वस्तुतः आकाशीय हो गया है। वायु सेना के रण कौशल के कार्य तो गत पाक-भारत युद्ध में ही देखे जा चुके थे। पाक-भारत के अभी के सघर्ष में हमारी वायु सेना ने, अपने कुशल सेनाध्यक्ष-श्री पी० सी० लाल के नेतृत्व में अपने रण कौशल का परिचय युद्ध के प्रथम दिन ही, अपनी सीमाओं को पाक के हवाई हमलों से बचाकर, और दुश्मन के ठिकानों को ध्वस्त करके, दे दिया था। हमारी वायु सेना ने दुश्मन की वायुशक्ति का पाँचवा भाग नष्ट करके, हमारी थल सेना को भी पूर्ण सहयोग दिया। इस संघर्ष में प्रथम बार वायुसेना के पैराशूट-दस्तों ने भी अपना कौशल सिलहट एवम् ढाका में उतर कर दिखाया।

श्री लाल का जन्म ६ दिसम्बर, सन् १९१६ को लुधियाना में हुआ था। इनकी शिक्षा दिल्ली तथा लन्दन में हुई। लन्दन के 'किग्ज कालिज' से स्नातक होने के उपरान्त श्री लाल कानून का अध्ययन करना चाहते थें, किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ होने से इसमें सफलता न मिली। एक वायु-सैनिक के रूप में अपनी सेवायें प्रस्तुत कीं और १९३९ ई० में कमीशंड अधिकारी बने। ७ नवम्बर, सन् ४३ में स्कवाड्रन में नियुक्ति हुई। विश्वयुद्ध की समाप्ति पर इन्हें भारतीय विमान-सेवा में स्थायी रूप से ले लिया गया।

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् श्री लाल ने ब्रिटेन की शाही-विमान सेना के स्टाफ कालिज से प्रशिक्षण प्राप्त किया। सन् १९५७ से ६२ तक 'इंडियन एयरलाइन्स कारपोरेशन' का प्रबन्ध किया। सन् १९६३ में श्री लाल को फिर वायु-सेना में वापिस बुला लिया गया। सन् १९६५ के पाक-भारत युद्ध में अपूर्व रण-कौशल दिखाने के उपलक्ष में महामहिम राष्ट्रपति जी ने 'पद्म भूषण' से विभूषित किया। युद्धोपरान्त इन्हें 'हिन्दूस्तान एयरोनाटिक्स' का डाइरेक्टर बनाया गया। सन् १९६९ में फिर वायुसेना के सेनाध्यक्ष का गुरुतर दायित्व लिया और पिछले युद्ध में विश्व ने हमारे अनुभवी एवम् योग्य वायु सेना अध्यक्ष का चमत्कार देखा। विश्व ने अनुभव किया कि भारत वायुसेना शक्ति में जंसे अग्रिम पंक्ति में खड़ा है।

वायुसेना अध्यक्ष श्री लाल का हार्दिक अभिनन्दन करते हुये, उनके दीर्घ जीवन के लिये प्रार्थना करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थल सेनाध्यक्ष—जनरल एस० एच० एफ० जे० मानिकशा

जल सेनाध्यक्ष—एडमिरल एस० एम० नन्दा

वायु सेनाध्यक्ष—एयर मार्शल पो० सी० लाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पारसकुमार जैन
नगरपालिका अध्यक्ष एवम्
प्रबन्धक, पी० बी० म्यु० इण्टर कालिज

श्री आनन्दप्रकाश शर्मा
भूतपूर्व नगरपालिका अध्यक्ष (१९६४-७१)

श्री हरिदत्त बहुगुणा
भूतपूर्व नगरपालिका अध्यक्ष (१९५८-६५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब मौत की भी आँखों में आँसू थे"

गोवर्धन प्रसाद शाह, कक्षा ११ सी.

श्री भगवत गीता का यह श्लोक:—

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिभवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानंसृजम्यहम् ।"

अनेक वर्षों की गुलामी से जकड़ा हुआ भारत स्वतन्त्र होकर जब प्रगति के मार्ग पर जा रहा था, तब लालबहादुर शास्त्री एक उज्ज्वल सितारे के रूप में भारतीय आकाश पर देदीप्यमान हुए। वे जन्मतः महान् थे। उनका जीवन महान् कार्यों को करते हुए व्यतीत हुआ। उनकी मृत्यु भी इतनी शानदार हुई कि आजतक के इतिहास में ऐसी शानदार मौत ढूँढने पर भी नहीं मिलेगी। न केवल भारत बल्कि विश्व की आँखों में भी आँसू थे। विश्व के लाखों हाथ उस दिव्य पुरुष की आत्मा को शाँति देने के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे।

लाल बहादुर शास्त्री के बारे में यह सत्य है कि वे भारत के 'लाल' ही नहीं अपितु 'बहादुर' भी थे। शास्त्री जी ने उस समय देश का बोझ अपने कंधों पर लिया जब सारी दुनिया यह सोच रही थी कि नेहरू के बाद भारत का क्या होगा ? श्री शास्त्री ने इसका उत्तर दिया। यह देख कर लोग हैरान हो गये। इतिहास में कोई ऐसा आदमी नहीं हुआ जिसने १८ महीने में किसी देश पर इतना बड़ा असर छोड़ा हो। वे १८ महीने तक इस देश में नेता के रूप में रहे और मुसीबतों को शाँति के साथ हल करते रहे। वे शांति के पुजारी थे! वे कहा करते थे कि जिस हिम्मत से हमने लड़ाई लड़ी, उसी हिम्मत से शांति के लिए यत्न करना चाहिए। ताशकन्द में श्री शास्त्री ने जो सफलता प्राप्त की वह इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायेगी। श्री लालबहादुर शास्त्री जब अपनी प्रसिद्धि के चरम उत्कर्ष पर पहुँचे तो नियति को उनसे ईर्ष्या हो गयी। उसने उन्हें छीन लिया।

शास्त्री जी के जीवन का प्रत्येक क्षण भारत को अतिशय उज्ज्वल बनाने में बीतता था। यहाँ की गरीबी से वे दुखी थे। शुद्ध रूप में वे मानव थे। मानव मात्र की सेवा करना उनके जीवन का लक्ष्य था। बालक की तरह सरल, नदी के वेग की तरह जोशीले, जनतन्त्र के सच्चे समर्थक, देश पर अत्यन्त-आसक्त, भावुक परन्तु अपने वैयक्तिक सिद्धान्तों के लिए हिमालय की तरह अचल और अटल। कार्य में अत्यन्त उदार, हर नये विचार के लिए अत्यन्त उत्सुक, अपने देश के लिए अत्यन्त सावधान।

हम सब मिल कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र ध्वज का सम्मान

चमन प्रकाश, कक्षा १२

इसी विशेषांक में आपने पीछे 'राष्ट्र ध्वज' की कहानी पढ़ी। ध्वज सम्बन्धी अन्य आवश्य बातें भी हमें जाननी चाहियें। झण्डे को कब और कहां फहराना चाहिये ? ध्वज को किस प्रकार अभिवादन करना चाहिये ? मार्च करते समय ध्वज को किस प्रकार लेकर चलना चाहिये ? इन प्रश्नों के उत्तर हमें जानने चाहियें।

राष्ट्रध्वज की लम्बाई और चौड़ाई के विषय में तो सभी जानते हैं। यह सदैव याद रखना चाहिये कि केसरिया पट्टी सदैव आकाश की ओर रखनी चाहिये।

राष्ट्रध्वज समूचे राष्ट्र के सम्मान का प्रतीक है, इसलिये लहराते हुये ध्वज का पूर्ण सम्मान हमें करना चाहिये। झण्डे के आगे सीधे खड़े होकर सावधान स्थिति में दाहिने हाथ से सलामी दी जाती है। यदि किसी जलूस में झण्डा ले जाया जा रहा हो तो, झण्डे को देखते ही रुक जाना चाहिये और झण्डे के सामने आते ही सावधान होकर सलामी देनी चाहिये। यदि फहराते झण्डे के सामने से कोई जलूस जाता हो तो जलूस के नेता को झण्डे की ओर गर्दन मोड़ कर चलते हुये ही दाहिने हाथ से सलामी देनी चाहिये। और दल के प्रत्येक सदस्य को झण्डे की ओर गर्दन घुमानी चाहिये।

राष्ट्रध्वज को यदि जलूस के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना हो तो, ध्वज-वाहक को, सबसे आगे ध्वजदंड को सीधा रख कर चलना चाहिये। ध्वज-दंड को कभी भी झुकने नहीं देना चाहिये। यदि किसी स्थिति में ऊपर बँधी झण्डियों या नीचे द्वार के कारण, उठे झण्डे को ले जाने में अड़चन हो, तो ध्वज-वाहक को नीचे मुड़ कर, ध्वज को बिना झुकाये, झण्डे को ले जाना चाहिये। किसी जलूस में यदि अन्य दलों के झण्डे भी हों, तो राष्ट्रध्वज को, अन्य झण्डों के बीच, सबके आगे और सबसे ऊँचा रखना चाहिये। यदि अपने ध्वज के साथ अन्य स्वतन्त्र विदेशी राष्ट्रों के राष्ट्रध्वज भी हों, तो समस्त ध्वजों को एक सीध में रखते हुये अपने राष्ट्रध्वज को ही दाहिनी ओर रखना चाहिये।

अपने राष्ट्रध्वज के प्रति हमें सदा ही पूर्ण सम्मान का प्रदर्शन करना चाहिये। नियमानुकूल झण्डे को फहराकर उसके प्रति यह शपथ लेनी चाहिये—'भारतसंघ के झण्डे के प्रति तथा भारत-राष्ट्र के प्रति, जिसका यह प्रतीक हैं, आत्मभक्ति की शपथ लेता हूँ। हमारा राष्ट्र अखण्ड हो, सबके लिये स्वतन्त्रता और न्याय सुलभ हो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिद्वार नगर पालिका के माननीय अध्यक्षों

का

संक्षिप्त जीवन-वृत्त

१.	श्री सरदार रामरक्खा शर्मा	सन्	१६३८ — ४०
२.	श्री हीरावल्लभ त्रिपाठी	,,	१६४६ — ५२
३.	श्री पन्ना लाल भल्ला	,,	१६५३ — ५८
४.	श्री हरिदत्त जी बहुगुणा	,,	१६५८ — ६५
५.	श्री आनन्द प्रकाश शर्मा	,,	१६६४ — ७१
६.	श्री पारस कुमार जैन	,,	१६७१ —

नोट:—नगर पालिका अध्यक्ष महोदय पी० बी० म्यु० इन्टर कालिज के प्रबन्धक भी होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० सरदार राम रक्खा जी

हरिद्वार म्युनिसिपल यूनियन के स्वर्गीय सरदार रामरक्खा जी आधार स्तम्भ थे। ज्वालापुर के प्राचीन नगर में श्री सरदार जी का जन्म सन् १८९९ में हुआ। इनके पूज्य पिता जी सरदार गंगा शरण जी नगर के सम्भ्रान्त व्यक्तियों में गिने जाते थे। अपने पिता की ये एक मात्र सन्तान थे। इनका प्रथम विवाह सन् १९१५ में हुआ और प्रथम पत्नी के देहावसान के उपरान्त दूसरा विवाह सुश्री दयावती जी से सन् १९३० में सम्पन्न हुआ।

शिक्षा प्राप्त करने का उस समय आज जैसा प्रचार नहीं था। इनकी विधिवत् शिक्षा किसी स्कूल में न होकर घर पर ही शिक्षक रख कर हुई। प्रथम पत्नी से दो तथा द्वितीय जीवन संगिनी से तीन पुत्र हुये और तीन कन्यायें हुई। ज्येष्ठ पुत्र–प्रेम कुमार, वायुसेना में कुशल स्कवाड्रन लीडर हैं।

सरदार जी न केवल योग्य अध्यक्ष थे, वरन् वे एक कठोर परिश्रमी, सरल, मिलनसार और अहंकार–शून्य व्यक्ति थे। वे सबका आदर करते तथा उन्हें भी सब प्रेम करते थे। सामाजिक कार्यों के प्रति उन्हे रुचि थी। कुछ दिनों तक ये अवैतिनिक मैजिस्ट्रेट रहे। सन् १९३८ में नगर पालिका अध्यक्षपद को सुशोभित करने से पूर्व सरदार जी पालिका के उपाध्यक्ष भी रह चुके थे। सरदार जी द्वारा नगर में अनेक विकास–कार्य सम्पन्न हुये। सन् १९३८ में सरदार जी हरिद्वार नगर पालिका के अध्यक्ष बने।

अन्ततः महाकाल का वह निठुर और क्रूर दिवस आया जब कि सरदार जी के पार्थिव शरीर को पंचभूतों में सदा के लिये विलीन कर देना पड़ा और वह मार्च सन् १९५२ का अशुभ दिन था।

स्व० सरदार जी द्वारा नगर में की गई सेवाओं के प्रति आभार प्रकट करते हुये 'भागीरथी' परिवार भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पुष्प की अभिलाषा—

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ में तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

(माखनलाल चतुर्वेदी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० श्री पन्नालाल भल्ला
भूतपूर्व नगरपालिका अध्यक्ष (१९५३–५८)

स्व० सरदार रामरक्खा शर्मा
भूतपूर्व नगरपालिका अध्यक्ष (१९३८–४०)

स्वर्गीय श्री शिवप्रसाद झा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

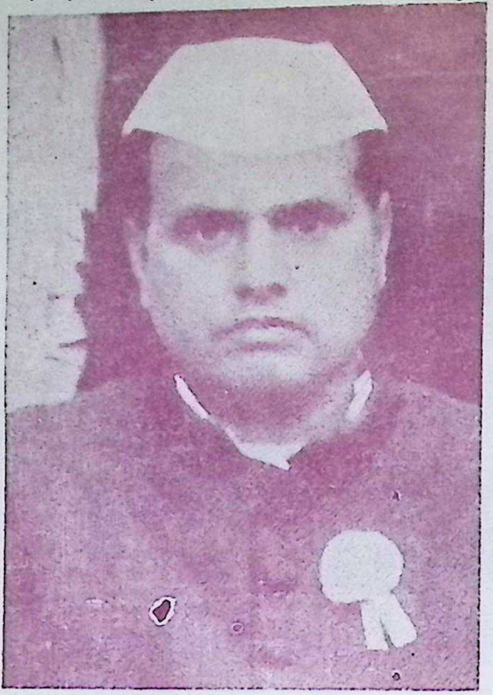

श्री हीरावल्लभ त्रिपाठी
भूतपूर्व नगरपालिका अध्यक्ष (१९४६-५२)

श्री सुरेन्द्रचन्द्र रस्तोगी
स्थानीय दण्डाधिकारी एवम् न्यायाधीश

श्री ऋषिकुमार गुप्ता
अधिशासी अधिकारी, नगरपालिका, हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हीरा वल्लभ त्रिपाठी, एम०पी०

श्री त्रिपाठी जी ऐसे नेताओं की श्रेणी में आते हैं, जिन पर नगर ही नहीं वरन् जनपद भी गौरवान्वित हुआ है। श्री त्रिपाठी का समूचा जीवन जैसे राष्ट्र-देवता को समर्पित रहा है। श्री पद्मदत्त त्रिपाठी पूज्य पिता जी का नाम था। श्री हीरा वल्लभ जी का जन्म सन् १९०२ के अगस्त मास में कनखल में हुआ।

'सेन्ट जान्स हाई स्कूल आगरा' से हाईस्कूल पास किया और बी.एस.सी तथा बी.ए.एल.एल.बी. आगरा कालिज से। सन् १९२३ में सुश्री प्रेमवतीजी को श्री त्रिपाठी की जीवन सहचरी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् १९२७ से सन् १९३४ तक श्री त्रिपाठी जी ने सहारनपुर में वकालत की, किन्तु इन पर विद्यार्थी जीवन में ही महात्मा गाँधी का प्रभाव पड़ गया था और ये कुछ भी काम करते, मन तो राष्ट्रीयरंग में भीग चुका था। सन् १९३८ से '४१ तक' कोआपरेटिव बैंकिंग यूनियन, रूड़की के ये अवैतिनिक मन्त्री रहे।

सन् १९४२ में महात्मा गाँधी द्वारा 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चलाया गया, इसमें श्रीत्रिपाठीजी ने सक्रिय भाग लिया और श्री जयप्रकाश नारायण, डा० लोहिया, श्रीमती अरुण आसफ अली आदि नेताओं के साथ भूमिगत रह कर स्वतन्त्रता आन्दोलन को गति प्रदान की।

इस बीच में श्री त्रिपाठी जी निम्नलिखित संस्थाओं से सम्बन्धित रहे—

सदस्य—बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स, कोआपरेटिव बैंकिंग
,, यूनियन, सहारनपुर
,, शुगर कमेटी, इम्पीरियल कौंसिल, कृषि अन्वेषण विभाग।
,, केन इनक्वायरी कमेटी (१९४६) एग्जीक्यूटिव, आई.एन.टी.यू.सी.
,, सहारनपुर जिला कांग्रेस कमेटी, उ० प्र० कांग्रेस कमेटी यू.पी. सी.सी. लेवर कमेटी
,, प्राविजनल पार्लमेन्ट आफ इडिया कान्स्टीट्यूएंट एसेम्बली तथा प्रावीजनल पार्लमेन्ट आफ इंडिया (१९५०–५२ तक)
,, रामकृष्णमिशन सेवाश्रम, कनखल (१९५५)
,, अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी (१९५५तक)

सन् १९४६ से ५३ तक हरिद्वार नगर पालिका के सर्वप्रिय अध्यक्ष रहे। सन् १९५९ तक ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालिज, हरिद्वार की प्रबन्ध समिति के सचिव रहे। सन् '५७ में राज्य सभा के लिये निर्वाचित। अप्रैल सन् १९६० में राज्य सभा के लिये फिर निर्वाचित। फिर निर्वाचित होने पर अप्रैल ६२ तक राज्यसभा के सदस्य रहे। सन् १९३० से लेकर १९४२ तक प्रत्येक स्वतन्त्रा-आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर जेल गये।

श्री त्रिपाठी चीन, जापान, थाईदेश, मलेशिया सिंगापुर आदि अनेक देशों की यात्रा कर चुके हैं। बहु गतिविधियों में भाग लिये. अत्यन्त अनुभवी तथा सुलझे हुये राज्य नेता श्री त्रिपाठी जी सदा स्वस्थ रहें, दीर्घ जीवी हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दानवीर' श्री पन्नालाल जी भल्ला

पंचपुरी, हरिद्वार के लिये श्री भल्ला जी का ऐसा यशस्वी नाम है, जिसे परिचय की आवश्यकता नहीं। पूर्वजों के सद्‌गुणों और उनके द्वारा सम्पन्न कार्यों के प्रति कृतज्ञताज्ञापन स्वस्थ समाज का लक्षण है। कृतघ्नता सबसे भीषण अपराध है।

श्री पन्नालाल जी भल्ला अमृतसर में सन् १८८४ के अक्टूबर मास में जन्मे थे। पूज्य पिता जी श्री वैष्णव दास पंजाब के यशस्वी व्यक्तियों में थे। श्री वैष्णव दास जी के छ पुत्रों में हमारे भल्ला जी चौथे पुत्र-रत्न थे। श्री भल्ला जी तब ज्वालापुर के एक प्राइमरी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करते थे।

सन् १९१५ में भल्ला जी ने हरिद्वार में ही 'टिम्बर' का व्यापार आरम्भ कर दिया और आगे चलकर सन् १९२५ से जंगलात के ठेकों का कार्य भी आरम्भ कर दिया।

श्री भल्ला जी की व्यापारिक कार्य कुशलता और परिश्रम के कारण व्यवसायिक उन्नति दिन-दूनी, रात-चौगुनी होती गई।

धन की तीन गति हैं। भोग, दान और नाश। श्री भल्ला जी ने 'दान' को महत्व प्रदान किया। हरिद्वार, पंचपुरी के बहुतांश सामाजिक एवम् निर्माण सम्बन्धी कार्य श्री भल्ला जी द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग के प्रमाण है। आर्थिक सहायता के दृष्टिकोण से श्री भल्ला जी के द्वार पर गया उनका विरोधी भी खाली हाथ नहीं लौटता था। उनमें गजब की उदारता, निश्छलता और सहिष्णुता थी। अहंकार उनमें लेशमात्र को नहीं था और सभी से वे, खुले हृदय से, उन्मुक्त मुस्कुराहट के साथ मिलते थे।

श्री भल्ला जी सन् १९५३ से ५८ तक हरिद्वार नगर पालिका समिति के अध्यक्ष रहे। इनका कार्यकाल निर्माण तथा विकास के आधार पर 'स्वर्ण काल' कहा जा सकता है।

श्री भल्ला जी के व्यक्तित्व की आंशिक अभिव्यक्ति नगर पालिका द्वारा संचालित 'पन्ना लाल भल्ला' कालिज है जिसके निर्माण में श्री भल्ला जी ने एक लाख के ऊपर दान दिया। उनकी इच्छा इस संस्था को अधिकाधिक विकसित और उन्नतिशील देखने की थी।

कराल-काल की भुजायें बहुत लम्बी हैं, १९ जनवरी सन् १९६४ का वह अमंगल दिन कौन भूल सकेगा जिस दिन नगर का 'दानवीर' सदा के लिये हमसे पृथम हो गया, और नागरिकों ने एक अत्यन्त विशाल 'अंतिम यात्रा' में अश्रु-पूरित नेत्रों से, सम्मलित होकर श्री भल्ला जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की थीं उनके नाम से सम्वन्धित इस कालिज का समूचा परिवार अपने संस्थापक की पुण्य स्मृति को जाग्रत करते हुये उनके प्रति स्नेह–स्निग्ध श्रद्धांजलि अर्पित करता है। श्री बनवारी लाल भल्ला, अपने स्वर्गीय पिता श्री पन्नालाल जी के चरण चिन्हों पर चलने का प्रयत्न कर रहे है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिदत्त बहुगुणा

श्री बहुगुणा जी का जन्म २ फरवरी, सन् १९०४ को कनखल में हुआ। पूज्य पिता जी श्री दुर्गादत्त बहुगुणा कनखल के जने-माने नागरिक थे। श्री हरिदत्त जी की प्रारम्भिक शिक्षा कनखल के प्राइमरी स्कूल में हुई। सन् १९२३ में हाई स्कूल की परीक्षा गवर्नमेन्ट हाई स्कूल रुड़की से उत्तीर्ण की। इन्टर मिडियेट परीक्षा आगरा कालिज से सन् १९२५ में दी। काशी-विश्व-विधालय से बी० ए० तथा एम० ए०, की परीक्षायें सन् २७ तथा २९ में उत्तीर्ण कीं। अध्ययनकाल में ही, कानपूर में सन् १९२५ में सम्पन्न हुये कांग्रेस के महाअधिवेशन में आप सम्मिलित हुये। राष्ट्रीय चेतना के रंग में रंग जाने से, किसी भी प्रकार की नौकरी का ध्यान छोड़ कर, सम्पूर्ण जीवन को राष्ट्रीय सेवा के लिये अर्पित कर दिया। सन् १९३० में, कनखल आकर अपने अग्रज द्वारा आयुर्वेदिक औषधालय के संचालन में सहयोग देने के साथ नगर में कांग्रेस संगठन का कार्य आरम्भ कर दिया।

सन् १९३९ में श्री बहुगुणा अवैतिनिक विशिष्ट न्यायाधीश नियुक्त किये गये। सन् १९४९-५० में फिर दोबारा अवैतिनिक न्यायाधीश के रुप में इन्होंने कार्य किया। अनेक वर्षों तक गुरुकुल आयुर्वेदिक फार्मेसी के प्रबन्धक पद पर कुशलता पूर्वक कार्य किया।

सन् १९५८ से १९६४ तक श्री बहुगुणा हरिद्वार नगर पालिका यूनियन के अध्यक्षपद को सुशोभित करते रहे। श्री बहुगुणा का कार्य काल नगर में 'प्रगति और उन्नतिकाल' के नाम से सदा स्मरण किया जाता रहेगा। सुस्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की मंगल कामना प्रभु से है।

मेरी भारत मां बोले अष्टादश भाषायें।
परिधान मात्र वे हैं सब उसके एक विचार के।
तीस कोटि चेहरे हैं मेरी भारत मां के।
पर प्राण एक है, जीव एक है उन सब में।
सब के उर की धड़कन में एक गीत, सम-आशायें।

—सुब्रमणीय भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री आनन्द प्रकाश शर्मा

यह २० अगस्त, सन् १९२४ का शुभ दिन था जिस बेला ज्वालापुर के सर्वमान्य श्री सरदार कृपा राम जी के घर में बालक आनन्द के जन्म पर आँगन में आल्हाद और आनन्द छा गया। तांता लग गया बधाइयों का।

श्री आनन्द जी की प्रारम्भिक शिक्षा ज्वालापुर महा विघालय में हूई।

पश्चात्, ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालिज, हरिद्वार में शिक्षा प्राप्त की। शहीद जगदीश शर्मा के सहपाठी होने के नाते. तथा हृदय राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत होने के कारण, श्री आनन्दप्रकाश शर्मा ने सन् १९४२ के स्वतंत्रता आन्दोलन में खुल कर भाग लिया। गिरफ्तारी के लिये इनका 'वारंट' कटा रहा, ये फरार रहे। 'जेल' जाने का प्रसाद भी इन्हें प्राप्त हुआ।

सन् १९६४ तक श्री बहुगुणा जी के कार्यकाल में श्री शर्मा जी नगर पालिका के सक्रिय सदस्य रहे। सन् ६४ के चुनाव में श्री आनन्द प्रकाश शर्मा ने हरिद्वार नगर पालिका समिति के अध्यक्षपद को सन् १९७१ तक सुशोभित किया।

नगर में अनेक नवीन निर्माण तथा विकास कार्यों को सम्पन्न कराने का श्रेय श्री शर्मा जी को है। आप एक अच्छे वक्ता, तथा सुलझे हुये नेता हैं। प्रगति की सरगम में अनेक आरोह–अवरोह–क्रम का आपका कार्यकाल रहा। आपके दीर्घजीवन की प्रार्थना प्रभु से करते हैं।

वतन की आबरु का पास
देखें कौन करता है,
सुना है आज मकतल में
हमारा इमतिहाँ होगा।
इलाही वह भी दिन होगा
जब अपना राज देखेंगे,
जब अपनी ही जमीं होगी
व अपना आसमाँ होगा।
शहीदों की चिताओं पर
जुड़ेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मिटने वालों का
यही बाकी निशां होगा।

'हितैषी' रचना काल, १९१३ ई०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पारस कुमार जैन

श्री पारस कुमार जैन १६ जौलाई, सन् १६२० में, मालेर कोटला (पंजाब) में जन्मे। इनके पूज्य पिता श्री भगवन्त राय जैन उक्त क्षेत्र के न केवल सिद्धहस्त वैद्यराज, श्रायुर्वेदिक दवाओं के कुशल निर्माता ही थे, वरन् एक लोकप्रिय समाज सेवी महानुभाव भी थे। देश–विभाजन के उपरान्त श्री भगवन्त राय जी सपरिवार हरिद्वार आ गये। शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण के लिये 'देश रक्षक औषधालय' की स्थापना की। साथ ही नगर की सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में सम्पूर्ण सहयोग देते रहे।

श्री पारस कुमार जैन ने स्थानीय ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालिज से बी० आई० एम० एस० करके, अपने स्वर्गवासी पिताजी से प्राप्त सभी सद्गुणों, अनुभवों के आधार पर शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों के वृहद निर्माण कार्य को ही आगे नहीं बढ़ाया वरन् सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक कार्यों में योगदान देते हुये जनता का स्नेह अर्जित किया।

कुछ वर्ष पूर्व 'शिवालिक ड्रग्स' की स्थापना कर विशाल व्यवसायिक स्तर पर देशी दवाओं का निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया गया है।

नगर पालिका के गत चुनाव में श्री जैन ने अध्यक्षपद को सुशोभित कर जनता में नवीन आशा का संचार किया। श्री जैन के सद् प्रयत्न से ही कालिज भवन निर्माण के लिये बम्बई के सेठ श्री मेघराज लालचन्दद जौंकानी ने एक लाख से ऊपर दान देकर शिक्षा प्रेम का परिचय दिया है। नवीन सत्र में भवन निर्माण कार्य पूरा हो जायेगा।

आशा है नगर पालिका श्री जैन के सहयोग से नगर को एक सुन्दर स्वरूप प्रदान करने में सक्षम होगी और नगर के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन में सुधार होगा।

यश और दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

"क्या मेरे बेटे का किसी विशेष कार्य की ओर झुकाव है ?" पिता ने अध्यापक से पूछा। वे बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा दिलाना चाहते थे।

"जी हाँ" अध्यापक ने तुरन्त कहा—'वह अच्छा व्यापारी हो सकता हैं, क्योंकि वह अपना काम दूसरों से बड़ी आसानी से करवा लेता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी० बी० म्यु० इण्टर कालिज, हरिद्वार, के उन

समस्त शिक्षक बन्धुओं

को

विनम्र श्रद्धाँजलियां सादर समर्पित

जिन्होंने इस संस्था में कार्य किया, इसकी उन्नति में योग दान दिया

और

जिनके पार्थिव शरीर पंचतत्वों में मिल गये

किन्तु

जिनकी स्मृति के मधुर स्वरों को यह संस्था सदा गाती, गुनगुनाती रहेगी।

१. स्व. रामेश्वर दयाल निगम(प्रधानाचार्य)	२. स्व. रामदत्त उप्रेती
३. ,, जगनन्दन शास्त्री	४. ,, रघुवीर सिंह विश्नोई
५. ,, लक्ष्मी नारायण महेन्द्रू	६. ,, गोविन्द सिंह रावत
७. ,, लक्ष्मी नारायण शर्मा	८. ,, कालूराम
९. ,, मुहम्मद उमर	१०. ,, श्याम स्वरूप वर्मा

अपने कर्त्तव्यपथ पर अडिग रहते हुये जो मृत्युरानी का प्रसन्नतापूर्वक वरण करले, उसे मैं 'शहीद' मानता हूँ। शिक्षण कार्य करते हुये, सेवाकाल में जो बन्धु अनन्त पथ में विलीन हो गये, एवम् अनुचित कार्यों के विरोध में, अपने ही छात्रों द्वारा जिनकी जीवन लीला समाप्त कर दी गई, जाने-अनजाने उन असंख्य शहीदों की पावन-स्मृति में हम सब नत-मस्तक हैं। -सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रामेश्वर दयाल निगम

पी० बी० म्यु० कालिज के रूप सँवारने, इसे उन्नत अवस्था में पहुंचाने का श्रेय यदि किसी को दिया जाये तो वे स्वर्गीय रामेश्वर दयाल निगम हैं : श्री निगम के कर्मण्य जीवन का अनुवाद भल्ला कालिज है। उन्होंने कालिज को सर्वांगीण उन्नत करके इसे प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान दिला दिया था।

कानपुर से इलाहबाद जाने वाली रेलवेलाइन 'सरसौल' स्टेशन के निकट 'हाथे गांव' स्थान में २६ अक्तूबर, सन् १८६५ को इनका जन्म हुआ था। इनके पूज्य पिता श्री मन्नूलाल जी इसी गाँव के पटवारी थे। इनकी माता का नाम श्रीमती भगवान देवी था जिनका स्वर्गवास हरिद्वार में ही मई सन् १९५१ में हो गया था।

इनके चार भाई थे। एक बहिन थीं। अपने बड़े भाई श्री बद्री प्रसाद के संरक्षण में श्री निगम की प्रारम्भिक शिक्षा हुई, सन् १९०९ में इन्होंने वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। ए० पी० मिशन हाई स्कूल, इलाहबाद से सन् १९१५ में इन्होंने 'स्कूल लीविंग सर्टीफिकेट' परीक्षा, गणित विषय में, विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की।

इसके पश्चात् इन्होंने कानपुर के क्राइस्टचर्च कालिज में प्रवेश लिया, किन्तु धनाभाव के कारण शिक्षाक्रम भंग हो गया।

अर्थोपार्जन हेतु इन्होंने दैनिक 'प्रताप' के सम्पादकीय विभाग में नौकरी कर ली। इसी समय ये श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में आये और कांग्रेसी विचारधारा से प्रभावित हुये। सन् १९२६-२७ तक कानपुर के एँग्लो-वर्नाक्यूलर म्यु० स्कूल में प्रधानाध्यापक पद पर कार्य करते रहे। सोच-विचार कर इन्होंने शिक्षण कार्य में ही रहने का निश्चय किया और हरिद्वार नगर-पालिका द्वारा चलाये जा रहे मिडिल स्कूल के प्रधानाध्यापक पद को सन् १९२७ में सुशोभित किया। सन् १९३८ में इनके भागीरथ प्रयत्नों से इस संस्था को हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त हुई।

श्री निगम सिद्धान्तवादी और सुदृढ़ चरित्र के व्यक्ति थे। खुशामद करना और अपने सिद्धान्तों से पीछे हटना इनके स्वभाव में न था, इसलिये अनेक बार अधिकारियों का इन्हें कोप-भाजन बनना पड़ा। सेवाकाल में विकास और उन्नति की सीढ़ियों पर इन्हें कई बार आरोह और अवरोह करना पड़ा, परन्तु इनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशासनात्मक योग्यता के कारण प्रधानाचार्य का पद इनके आगे-पीछे घूमता रहा।

इस संस्था में सेवा करते हुये सन् १९३२ में आगरा विश्वविद्यालय से शिक्षक - परीक्षार्थी के रूप में बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी विश्वविद्यालय से सन् १९३५ में इन्होंने हिन्दी में एम०ए० परीक्षा, वि० विद्यालय में पाँचवा स्थान प्राप्त करते हुये, उत्तीर्ण की।

इनका विवाह बाल्यकाल में ही हो गया था। धर्मपत्नी का नाम श्रीमती राजदुलारी था। कुछ कालोपरान्त पत्नी का देहान्त हो गया और सामाजिक दबाब के कारण प्रथम पत्नी की सहोदरा सुश्री राम कुमारी के साथ विवाह बन्धन में बँध जाना पड़ा।

दुर्भाग्यवश श्रीमती रामकुमारी को भी महा-काल, हैजे के बहाने से, सन् १९३८ में उठा ले गया। छोटे बच्चों के पालन-पोषण का भार इनकी माता जी को ही उठाना पड़ा, सन् १९५१ में माता जी भी स्वर्गवासिनी हो गई।

सन् १९५७ मे आखिरकार श्री निगम ने उस संस्था की सेवा से पूर्णावकाश प्राप्त कर लिया, जिसकी उन्नति उनके जीवन की सबसे बड़ी साध थी। श्री निगम कठोर परिश्रमी, अपने नियमों पर अडिग रहने वाले, कठोर अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। वह अध्यापकों की योग्यता का सम्मान करते हुये उनसे कार्य लेना जानते थे।

जिस सयम इन्होंने नगर पालिका द्वारा सचालित इस संस्था का दायित्व ग्रहण किया उस समय इने-गिने कमरे और ५०-६० विद्यार्थी थे। इनकी लगन और ईमानदारी के कारण १९५७ ई० में एक हजार से ऊपर विद्यार्थी थे। कला तथा विज्ञान के लगभग सभी विषयों के शिक्षण का प्रबन्ध था। परीक्षा परिणामों के आधार पर यह कालिज न केवल जनपद में वरन् प्रदेश की प्रमुख संस्थाओं में उच्च स्थान प्राप्त कर गया था। खेल-कूद तथा साँस्कृतिक गतिविधियों में इसका शीर्ष स्थान था।

सेवा मुक्त होकर श्री निगम कानपुर चले गये थे। इनको मधुमेह हो गया था, रक्तचाप भी बढ़ गया था। २२ अप्रैल, सन्, ७१ को इनके दाहिने अंग पर पक्षाघात् हो गया। श्रेष्ट डाक्टरों की सभी युक्तियां, सम्बन्धियों की सभी प्रार्थनायें निष्फल रहीं और ७ जौलाई १९७१ का अभागा दिन सदा के लिये इन्हें अपने साथ ले गया।

श्री निगम के पुत्र, श्री रमेश चन्द्र निगम को जो कानपुर में ही योग्य प्रवक्ता है, प्रदेशीय सरकार ने पुरस्कृत कर सम्मानित किया है। श्री रमेशचन्द्र निगम की बहिन, श्रीमती सरोजिनी भी कानपुर में किसी कालिज में प्रवक्ता पद पर कार्य कर रही है। जब तक भल्ला कालिज है, श्री निगम का नाम नहीं भुलाया जा सकेगा।

जेलर ने एक कैदी को रिहा करते हुये कहा— "भाई, क्षमा करना, गलती से तुम्हें चार दिन ज्यादा रोक लिया था।"

"कोई बात नहीं।" कैदी ने कहा— "पर अगली बार हिसाब चुका दीजियेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय रामदत्त उप्रेती जी

स्वर्गीय रामदत्त उप्रेती जी

पी०बी०म्यु० इन्टर कालिज को उन्नति की अवस्था तक पहुंचाने में स्व० उप्रेती जी का भी सहयोग था। वे समाज की उस पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि थे, जो अधिकार की चिन्ता किये बिना कर्त्तव्य पर अडिग रहना अपना धर्म समझते हैं। कूर्माचल प्रदेश स्थित पिठौरागढ़ में सितम्बर सन् १८९९ ई० में इनका जन्म हुआ। इनके पूज्य पिता जी, पं० शिवदत्त जी उप्रेती, संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान्, धर्मप्रेमी तथा सरल व्यक्ति थे। ये काशी के यशस्वी धर्मशास्त्र तथा विद्वान् महामहोपध्याय पं० नित्यानन्द के सहपाठी थे। हरिद्वार ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालिज के भू० पूर्व प्रधानाचार्य तथा यशस्वी वैद्यराज स्वर्गीय हरिदत्त जोशी के पं० शिवदत्त जी सत्कृत के पर्वतीय प्रदेशस्थ गुरु थे।

स्व० रामदत्त जी ने सन् १९२४ तक ऋषिकुल विद्यापीठ (हरिद्वार) में शिक्षण कार्य किया, पं० मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित यह संस्था उस समय अपने चरम उत्कर्ष पर थी।

१९३५ ई० में ही पी०बी०म्यु० इन्टर कालिज में संस्कृत अध्यापक के रूप में इनकी नियुक्ति हुई। तदुपरान्त संस्कृत-प्रवक्ता-पद पर पदोन्नति हुई। इन्होंने मृत्युपर्यन्त भल्ला कालिज में ही शिक्षण कार्य किया। सन् १९५९ में २० मई के निठुर दिन ने पंडित जी के भौतिक शरीर को हम से छीन लिया। 'सादा जीवन और उच्चविचार' सिद्धान्त के ये अनुगामी थे। सुदृढ़ चरित्र, मधुर वाणी तथा अनुशासन प्रियता इनके विशेष गुण थे। अपने लिये कठोर, दूसरों के लिये मोम से मधुर। अपने साथियों से स्नेह तथा छात्रों से सदा आदर प्राप्त किया। श्री मद्भागवत, बाल्मीकि रामायण तथा अन्य धर्मग्रन्थों का पारायण उनका दैनिक कर्म था। उनके परिवार में उनकी विधवा पत्नी तथा तीन पुत्र हैं। एक पुत्र, श्री हेमचन्द्र उप्रेती तो इसी कालिज में हिन्दी-प्रवक्ता के पद पर सुशोभित है। दूसरे पुत्र श्री धर्मेन्द्र प्रसाद जी सरकारी विभाग में सम्प्रेक्षक हैं। तीसरे पुत्र श्री लक्ष्मण स्वरूप जी नैपाल में अंग्रेजी के अध्यापक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय श्री जगनन्दन शास्त्री

स्वर्गीय श्री जगनन्दन शास्त्री

श्री शास्त्री जी का जन्म १५ अक्तूबर सन् १६२० को हुआ। बालक जगनन्दन की हथेली में विधना ने जैसे दुर्भाग्य की रेखायें आरम्भ से ही चित्रित कर दी थीं। जब ये केवल दो वर्ष के थे ममतामयी माँ की छत्र छाया सदा के लिये उठ गई। इनके पिता श्री मुकुन्दीलाल ने माता के दुलार की पूर्ति करने के लिये बालक जगनन्दन को प्यार से लाद दिया, किन्तु नियति से इस बालक का यह सुख भी सहन न हुआ और पाँच वर्ष की आयु में वे सदा के लिये छोड़ कर चले गये। रह गया अबोध बालक ससार-सागर की थपेड़ खाने के लिये। इनके लालन-पालन का भार इनकी बुआ जी. श्रीमती भगवती देवी ने उठा लिया।

शास्त्री जी की प्रारम्भिक शिक्षा लंढौरा में हुई। गुरुकुल महाविद्यालय में संस्कृत का अध्ययन किया। खुर्जा में भी इनकी शिक्षा हुई। पंजाब विश्वविद्यालय तथा राजकीय संस्कृत कालिज, बनारस से शास्त्री परीक्षाये प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की। पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक, कलकत्ता से काव्यतीर्थ, प्रयाग से साहित्यरत्न तथा उत्तर प्रदेश की हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त की। आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए० किया।

आरम्भ में गुरुकुल महाविद्यालय और आर्य-इन्टर कालिज, मायापुर में अध्यापन कार्य किया। इस कालिज में ६ जौलाई सन् १६५१ में सस्कृत अध्यापन पद पर इनकी नियुक्ति हुई। प्रथम जौलाई १६५७ को इन्हें ग्रेज्यूएट ग्रेड दिया गया। योग्यता और अनुभव के आधार पर इन्हें प्रवक्ता के पद पर आसीन किया जाने वाला था कि कराल काल आया-और उन्हें सदा के लिये हमसे छीन कर ले गया।

७ जौलाई १६६१ को जिस दिन कालिज खुला, उसी दिन कालिज के सभी अध्यापकों तथा छात्र-छात्राओं पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा-असह्य समाचार प्राप्त कर कि शास्त्री जी हमें छोड़ चले हैं। शोक में समस्त पंचपुरी डूब गई।

श्री शास्त्री जी एक प्रकांड विद्वान् और सफल अध्यापक थे। ये एक प्रभावशाली वक्ता तथा सुयोग्य लेखक भी थे। सरलता, मिलनसारी, निर्भीकता, सौजन्यता इनके विशेष गुण थे। शिक्षक संघ के मन्त्री के रूप में इनका कार्य सदैव याद किया जाता रहगा।

शोक और विरह के प्रचण्ड आघात को हृदय में समेटे श्रीमती शास्त्री जी ने पति की जीवित-स्मृति बालक राकेश के लिये जीवन के संघर्षों का स्वागत करते हुये शैक्षणिक योग्यतायों में वृद्धि करके आनन्दमयी सेवासदन इंटर कालिज (हरिद्वार) में अध्यापन कार्य आरम्भ किया। बालक राकेश आज एक सुयोग्य तरुण है और बी० ए० का छात्र है। माँ, बेटा दोनों दीर्घायु होकर परिवार और समाज का नाम उज्ज्वल करेंगे, ऐसी आशा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रघुवीर सिंह जी विश्नोई

श्री रघुवीर सिंह जी विश्नोई

श्री रघुवीर सिंह विश्नोई ऐसे सुरभित कुसुम की नाई थे, जो खिले, महके और कुसमय चली बयार के झोंकों से निज गन्ध को बिना बखेरे ही झर जाते हैं। श्री विश्नोई का जीवन स्वनिर्मित तथा स्वावलम्बी था। कालिज को उनकी बहुत आवश्यकता थी, किन्तु खेद है कि वे हमें छोड़ कर जल्दी ही प्रभु के प्यारे हो गये।

बिजनौर में जन्मे श्री विश्नोई बाल्य काल में ही अपने माता-पिता के साथ कनखल आ गये थे। दुर्भाग्यवश पांच वर्ष की अबोध अवस्था में ही ममतामयी माँ का स्नेहांचल इन पर से हट गया। दुर्भाग्य ने साथ न छोड़ा और आगे चलकर पिता श्री अमर सिंह जी के नेत्रों की ज्योति विधाता ने छीन ली। कठोर परिश्रम और लगन द्वारा श्री विश्नोई ने, अपने ही साधनों के आधार पर, आरम्भ से लेकर इन्टर तक की परीक्षा भल्ला कालिज में प्राप्त की।

सर्व प्रथम इन्होंने नौकरी यहीं के राशनिंग विभाग में की थी। तत्पश्चात् म्यु०भल्ला कालिज में ही इन्हें अध्यापन कार्य प्राप्त हो गया। इन्होंने ८-७-१९४९ में यहां सेवाकार्य आरम्भ किया। सेवाकाल में ही इन्होंने व्यक्तिगत रूप में बी०ए० किया। शशि प्रभा, यथा नाम तथा गुणवन्ती कन्या से १४ जौलाई १९५९ को इनका विवाह सम्पन्न हुआ। शशि मेरी भी संगीत विषय की छात्रा थीं, उसके सर्वांगीण गुण मुझ पर प्रकटित थे।

श्री विश्नोई अपने स्वस्थ, सुगठित शरीर और विनोदी स्वभाव के कारण सर्वप्रिय थे। कालिज में खेल-कूद के वे निर्देशक थे, और इनके निर्देशन में खेल-कूद में कालिज का मस्तक बहुत ऊँचा हुआ। यहां की विभिन्न टीमें दूर-दूर तक विजयी होकर आती रहीं। अंग्रेजी विषय लेकर वे एम०ए० की तयारी कर रहे थे।

२ अक्तूबर '६६–गांधी जन्मदिवस पर वे दोपहर तक वाली–वॉल मैच खेलते-खिलाते रहे। दोपहर बाद ही हम सब स्तब्ध और अवाक् रह गये कि श्री विश्नोई, हृदय गति-अवरुद्ध होने से, अब संसार में नहीं रहे, इस दुखद घटना पर हमें विश्वास ही नहीं हुआ था।

अपने पति की दो जीवित स्मृतियों को जीवन-सम्बल मान कर श्रीमती विश्नोई ने हिन्दी में एम०ए० करके, जीवनयापना के लिये नौकरी कर ली और कनखल स्थित जूनियर हाई स्कूल की मुख्य अध्यापिका है। अब चि० ललित कुमार (८ वर्ष) और दिनेश कुमार (६ वर्ष) पर ही उनकी अब आशायें केन्द्रित हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि श्रीमती विश्नोई के सभी सपने फलें, फूलें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री लक्ष्मी नारायण जी शर्मा

श्री लक्ष्मी नारायण जी शर्मा

त्याग, आत्मसमर्पण तथा मूकसेवा के प्रतीक स्वरूप श्री लक्ष्मी नारानण जी को सदा याद करता रहूँगा। उनका जीवन 'बलिदानी' जीवन रहा।

हरिद्वार में ही उनका जन्म १ अप्रैल १९२४ ई० को एक धार्मिक तथा संस्कृतनिष्ठ-ब्राह्मण कुल में हुआ। इनके पिता श्री भीमसेन शर्मा 'पंडिताई' करते थे। श्री लक्ष्मीनारायण के अग्रज भी यहीं रह कर धार्मिक अनुष्ठानों में लगे रहते थे। यहीं ज्वालापुर स्थित 'शारदा-आश्रम' में इनका विवाह हुआ। इनकी प्राथमिक शिक्षा हरिद्वार के 'पाजीवाल संस्कृत विद्यालय' में हुई। पंजाब से हिन्दी तथा संस्कृत में 'शास्त्री' परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९५४ में इलाहबाद बोर्ड से प्राइवेट रूप में हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की।

यहाँ से शर्मा जी अजमेर चले गये और वहाँ विरजानन्द कालिज में हिन्दी अध्यापक के रूप में कार्य किया। अजमेर से शर्मा जी हरिद्वार लौट आये और भल्ला कालिज में हिन्दी अध्यापक के पद पर नियुक्ति हो गई। इनकी शिक्षण पद्धति बहुत सुन्दर थी। अपने विद्यार्थियों से इन्हें अत्यन्त स्नेह था, श्री शर्मा जी का हृदय-कलश निश्छल प्रेम से लबालब भरा रहता था। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक व्यक्ति पर शर्मा जी 'स्नेह-सुधा' बरसाते रहते थे। सन् १९५५ में श्री शर्मा जी ने सपत्नीक श्री बद्रीनारायण की यात्रा की। वहाँ से लौटने पर श्रीमती शर्मा अस्वस्थ हो गई। ५, ६ मास इनकी बीमारी चलती रही। श्री शर्मा जी ने इलाज और सेवा में अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। सब प्रयत्न विफल हुये और सहसा एक दिन श्रीमती सरोजबाला शर्मा का भौतिक शरीर पंच महाभूतों में मिल गया। श्री शर्मा इस विछोह से बिखर गये और उद्विग्नतापूर्ण जीवन चलाते रहे। मन की शाँति के लिये, तपस्या के रूप में, शीत की ठिठुरती रातों में, लगातार तीन, चार महीने तक गंगा माँ की धारा-मध्य आकंठ खड़े रह कर न जाने क्या अलख जगाते रहते·········। क्या था—·····—काया की पोरी पोरी में शीत-पीर व्याप गई। और प्रियतमा-मिलन की सरस आशा पर प्राणों की डोर अर्पित कर दी——···सन् १९६५ की ५ अप्रैल को···—और हम सब उनके साथी, मन में एक अकथनीय पीड़ा लिये, उनके पार्थिव शरीर को चिता की वेदी पर समर्पित कर आये थे।

शर्मा जी हमारे स्मृतिपटल पर अमिट हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय श्री गोविन्द सिंह जी रावत

स्व० श्री गोविन्द सिंह जी रावत

जो चीज वेग गति से उठती है, उसका अवसान भी उसी गति से हो जाता है–नियति का कुछ ऐसा नियम है। स्वर्गीय रावत वेग गति से सुगठित होकर उभरे, बढ़े और छिप गये।

श्री रावत १४ जनवरी १९३३ ई० को कोटद्वार के निकट (जिला गढ़वाल) नौ गांव में रावत परिवार में जन्मे। इनके पिता जी का नाम श्री रघुवीर सिंह रावत था। बालक गोविन्द सिंह को छोड़ कर माता स्वर्ग चली गई। गोविन्द सिंह के पूज्य ताऊ जी ने आर्य समाज के नेता होने के कारण, इन्हें गुरुकुल काँगड़ी के ब्रह्मचर्याश्रम में दीक्षित होने के लिये प्रविष्ट करा दिया। यहीं हाई स्कूल तक इनकी शिक्षा हुई।

शारीरिक सौष्ठव तथा खेलों में कुशलता के कारण गुरुकुल में ही इन्हें व्यायाम शिक्षक पद प्राप्त होगया। हाकी के खेल में इन्होंने प्रान्तीय स्तर तक ख्याति अर्जित की। इन्होंने स्काउटिंग तथा बालचर सेवा में प्रशिक्षण प्राप्त किया। सुगठित तथा फुर्नीले शरीर के कारण इन्होंने व्यायाम तथा विभिन्न प्रकार के खेल–कूदों के प्रदर्शन में दक्षता प्राप्त करके यश अर्जित किया। गुरुकुल के वार्षिक उत्सवों पर होने वाले शारीरिक प्रदर्शनों में श्री रावत अग्रणी रहते थे।

गुरुकुल कांगड़ी से ये कनखल स्थित श्री मिथिलेश सनातन धर्म स्कूल में व्यायाम–शिक्षक के पद पर आ गये। यहाँ इन्होंने स्काउटिंग आदि के आयोजन में विशेष कार्य किया। यहाँ की प्रबन्धक समिति ने प्रसन्न होकर रामपुर स्थित राज्यकीय शारीरिक प्रशिक्षण विद्यालय में सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिये इन्हें भेज दिया। प्रशिक्षण समाप्ति पर कुछ समय श्री सनातन–धर्म हा० से० स्कूल में रहने के उपरान्त इन्हें पन्नालाल भल्ला इन्टर कालिज में खेल–कूद तथा व्यायाम शिक्षक के रूप में नियुक्त कर दिया गया।

अपने सेवा काल में इन्होंने यहाँ खेल कूदों का वातावरण बनाकर अनुशासन की स्थापना में विशेष योगदान दिया। स्काउटिंग की स्थापना की तथा यहाँ के विद्यार्थियों को अनेक बालचर–शिविरों में भेजकर अच्छे कार्य के आधार पर संस्था के गौरव को ऊँचा उठाया। रात–दिन कार्य में जुटे रहना इनका स्वभाव था। अधिक परिश्रम, व्यायाम करने तथा समुचित पौष्टिक आहार के अभाव में इनके सुगठित शरीर में क्षय रोग का घुन लग गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके तएरे भाई श्री धर्मपाल जी ने, जो उस समय गुरुकुल फार्मेसी के जनरल मैनेजर थे, श्री रावत के इलाज में पूर्ण योगदान दिया। इलाज के लिये इन्हें भवाली-सेनीटोरियम में भी ले जाया गया, किन्तु रोग का कोप बढ़ता ही गया। इनके अनुज-श्री महिपाल सिंह रावत ने भी, जो टेहरी के निकट चम्बा में कृषि अधिकारी हैं, इनके रोग-शमन में पूर्ण योगदान दिया।

हम सब प्रतीक्षा किया करते कि कब श्री रावत स्वस्थ हों और हम लोगों के बीच अपनी उसी धवल मुस्कुराहट के साथ कार्य संलग्न हों, किन्तु २० दिसम्बर सन् १९६६ को महाकाल ने उनके शरीर को अपने असीम उदर में लील किया।

श्री रावत बहुत ही आत्माभिमानी व्यक्ति थे, और हम इस बात को सदा ही गौरव के साथ याद करते रहेंगे कि उनकी रुग्णावस्था में उनके इलाज के लिये हम लोगों ने संयुक्त रूप में जो धन इकट्ठा करके उन्हें भेजना चाहते थे, उसे लेना उन्होंने अस्वीकार कर दिया था।

सत्य क्या है ?

कु० किरण चौहान कक्षा ९

सत्यका जो सरल अर्थ साधारणतः प्रचलित है, वह इस प्रकार से समझा जा सकता है :-

मोहन ने मिठाई चुरा कर खा ली व पूछने पर कह दिया कि "मैंने मिठाई खायी है।"

इसी तरह अपनी भूल स्वीकार कर लेना भी 'सत्य' बोलना कहा जाता है। संस्कृत के एक नीति-श्लोक में कहा गया है कि "सत्य बोलो, प्रिय बोलो, अप्रिय सत्य न बोलो।"

यदि किसी चार को ए चोर ! कह कर सम्बोधित किया जाय तो यह सत्य होते हुये भी अप्रियं सत्य होने के कारण अवांछनीय है। विद्वान लोगों ने सत्य की परीक्षा की है। जो सोचा जाय वही करना सत्य है।

बापू ने सत्य पर दृढ़ रहने का उपदेश दिया है। इसके लिये उन्होंने प्रहलाद का उदाहरण दिया है। प्रहलाद ने सत्य के लिए अपने पिता का विरोध किया। उसके पिता और राज्य कर्मचारियों ने भयंकर पीड़ाएं प्रहलाद को पहुंचाई। परन्तु प्रहलाद अपने निश्चय पर अडिग रहा।

बापू ने सत्य के लिए आग्रह करने को 'सत्याग्रह' का नाम दिया।

उन्होंने कहा कि सत्य के लिए कभी-कभी 'ईंट का जवाब ईंट' से या घूंसे का जवाब घूंसे से देने की पद्धति नहीं अपनानी चाहिये। जैसा कि-प्रहलाद ने किया। अंतिम क्षण तक सत्य के लिए लड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री लक्ष्मी नारायण महेन्द्र

श्री लक्ष्मी नारायण महेन्द्र

काल कितना निर्भय और कठोर होता है, यह हमें अनुभव २१ सितम्बर सन् ६१ को हुआ, जब हमें हतप्रभ करने वाला शोक समाचार मिला कि महेन्द्र जी नहीं रहे। ऐसा हुआ है, विश्वास नहीं हुआ। प्रातःकाल ही हम हक्के-बक्के से कनखल भागे गये। हम सोचते हैं कि ऐसे सुन्दर, हँसमुख, हृष्ठ-पुष्ट और विनोदी, मस्त साथी को हमसे छीन कर प्रभु तुझे क्या मिला? कल तो ये स्वस्थ थे और लक्सर के निकट अपनी कृषि-भूमि को देखने गये थे, रात्रि १० बजे तक ठीक थे। अचानक तबियत बिगड़ी और नाटक का पटाक्षेप...। जीवन की क्षणभंगुरता पर विचार प्रवाह दौड़ा रहा है।

कनखल में ही एक धनी खत्री परिवार में आपका जन्म २ अक्तूबर सन् १९३५ को हुआ। पिता जी का नाम श्री जगदीश प्रशाद जी था। जो अब इस संसार में नहीं है। माता तरुण बेटे के छीने जाने का असह्य दुख-भार लिये, अपने प्यारे इकलोते बेटे की तीन जीवित निशानियों के पालन-पोषण में सहयोगी बनने की दृष्टि से जीवित हैं। वृद्धा माँ की चार पुत्रियाँ हैं, जो सभी विवाहित हैं। श्री महेन्द्र जी की इन्टरमीडियेट तक की शिक्षा भल्ला कालिज में हुई। बी. एस. सी. तथा एम.एस.सी. परीक्षायें इन्होंने देहरादून के डी.ए.वी. कालिज से उत्तीर्ण कीं।

शिक्षा प्राप्त करने पर इनकी नियुक्ति डिमान्सट्रेटर के रूप में भल्ला कालिज में ही ८-७-१९५८ में हुई।

इनका विवाह जनवरी १९६० में मेरठ से हुआ। श्री महेन्द्र जी के जीवन का गुरुतम रहस्य अन्तरंग होने के नाते, मुझ पर प्रकटित था, जिसके कारण वे चिंतित रहतेथे।

श्री महेन्द्र जी अल्हड़ और अत्यन्त उदार स्वभाव के थे। मित्रों की सेवा के लिये उनकी जेब सदा खुली रहती थी :

परिवार में उनकी शोकाकुल माता, विधवा पत्नी तथा तीन किशोर हैं। तीनों बच्चे सदा स्वस्थ रहें, दीर्घजीवी हों। इतनी उन्नति करें परिवार का सब दुख और अभाव सिमिटकर शून्य हो जायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय श्री कालूराम जी

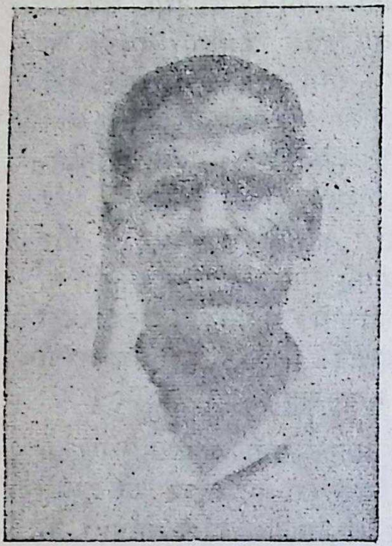

श्री कालूराम जी

वास्तविक रूप में यदि किसी को अध्यापक अथवा 'गुरुजी' कहा जा सकता है तो वे श्री कालूराम जी थे। छात्रों के वे आराध्यदेव थे। निर्धन छात्रों की वे फीस दे देते थे। उनके विद्यार्थियों को यदि पुस्तक अथवा कापी की आवश्यकता है तो श्री कालूराम जी का पर्स तुरन्त खुल जाता था। उनके चरणों का स्पर्श प्राप्त कर छात्र अपने को धन्य समझते थे।

कनखल की प्राचीन बस्ती में उनका जन्म हुआ था। पिता जी का नाम श्री हरद्वारी लाल था जो कि कनखल में श्री दीनानाथ के बाग में काम करते थे। अपने पिता की यह इकलौती और लाड़ली सन्तान थी।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कनखल के प्रायमरी स्कूल नं० १ में हुई। हाई स्कूल मुज्जफर नगर से किया। आरम्भ में अध्यापन कार्य धनौरी (जिला० सहारनपुर) के निकट कोटा मछेड़ी के स्कूल में किया। तत्पश्चात् हरिद्वार–ज्वालापुर मार्ग पर स्थित नार्मल स्कूल में अध्यापन कार्य किया। यहां से स्थान्तरण होकर और हेडमास्टर बनकर झबरेड़ा (सहारनपुर) चले गये।

कुछ दिनों सहारनपुर भी अध्यापन कार्य किया। फिर २१–७–४७ को भल्ला कालिज में नियुक्ति हुई। जब इन्होंने कोटा मछेड़ी में शिक्षण कार्य किया, उन्हीं दिनों इनका विवाह हुआ।

जुगुल किशोर नामक एक पुत्ररत्न की इनको प्राप्ति हुई। जुगुल किशोर को केवल ६ महीने का छोड़कर इसकी माता स्वर्गवासिनी हो गई। श्री कालूराम भावुक प्रकृति के व्यक्ति थे, जीवन संगिनी के विरह-शोक में प्रकाश की उपलब्धि हुई और ससार की सारहीनता इन पर प्रकटित हो गई। नियति को इतने से ही सन्तोष नहीं हुआ और जुगुल किशोर को १३ वर्ष का भी न होने दिया गया कि दुखी पिता के हाथों से छीन लिया।

वे एक 'सन्त' के समान जीवन व्यतीत करने लगे। उर्दू और फारसी के वे न केवल विद्वान् ही थे वरन् एक सफल शायर भी थे। संगीत और चित्रकला से उन्हें अत्यन्त लगाव था। वे एक धार्मिक व्यक्ति थे। हर समय प्रभु का ध्यान करते थे। और १३ अक्तूबर १९६८ ई० का वह अभागा दिन हम कभी न भुला सकेंगे। जिस दिन श्री कालूराम जी पार्थिव शरीर छोड़ कर प्रभु की गोद में चले गये। अपनी समस्त सम्पत्ति वे 'रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम' को दान कर गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय मुहम्मद उमर

श्री मुहम्मद उमर

श्री मुहम्मद उमर इस कालिज में केवल १७ वर्ष ही नौकरी कर सके. किन्तु थोड़े ही वर्षों में वे यहां के सभी अध्यापकों तथा छात्र-छात्राओं के श्रद्धेय बन गये थे। इस्लाम धर्म के अनुयायी होने पर भी इनमें धार्मिक कट्टरता नहीं थी।

यहीं कनखल में हनुमान गढ़ी के पास इनका कदीमी घर था। इनके पिता का नाम श्री गुलाममुयद्दीन उर्फ छोटे खां था। श्री मुहमम्द उमर का जन्म दिसम्बर सन् १९०४ में हुआ। इनके बड़े भाई अभी भी ज्वालापुर में रहते हैं। इनकी दोनों बहिनें अभी जीवित हैं। थोड़ी ही आयु में इनकी शादी सम्भल (जिला मुरादाबाद) में हो गई।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कनखल में ही हुई। दर्जी का काम कनखल में और फिर इम्पीरियल टेलरिंग कम्पनी लाहौर में सीखा। कार्मशियल टेलरिंग स्कूल, बम्बई से डिपलोमा प्राप्त किया। ट्रेनिंग के उपरान्त इन्होंने कनखल में ही. नाथू राम रस्तोगी के पास दूकान खोली। पाकिस्तान बनने के समय, १९४७ में इन्होने कनखल में दूकान बन्द करदी।

इन्हीं दिनों ये मुरादाबाद चले गये और नगर में कपड़े सीने की दूकान शुरू कर दी। परिस्थितियों ने फिर करवट बदली और मु० उमर साहिब फिर ज्वालापुर आ गये और लगभग १९५० ई० में तांगा अड्डे के पास टेलरिंग की दूकान खोली। इनका कटिंग इतना अच्छा और फिट होता था कि समूची पंचपुरी के वस्त्र-प्रेमी लोग इन्हीं से कपड़े सिलाना चाहते। शीघ्र ही इनका यश फैल गया और सन् १९५० में ही पी० बी० म्यु० इन्टर कालिज, में इनकी देख-रेख में, छात्राओं के लिये सिलाई कक्षा आरम्भ कर दी गई।

इनके निर्देशन में इन कक्षाओं ने बहुत उन्नति की। शिक्षा देने की इनकी पद्धति बहुत ही सरल थी। इनके व्यवहार में कुछ ऐसी विलक्षणता थी कि अपने निकट आने वालों को बरबस प्रभावित करते थे। इन्होंने परीक्षा फल सदा शत प्रतिशत दिया।

२८ जून १९६७ को इनका सेवाकाल समाप्त हो गया और इनके सेवा-मुक्त होने पर इनके सम्मान में जो पार्टी दी गई थी. इसमें प्रकटित विचारों से उनकी लोक प्रियता स्पष्ट हो गई थी।

सन् १९७१ का ११ जनवरी, मनहूस दिन आया और उन्हें सदा के लिये हमारे बीच से ओझल कर दिया। रुड़की के पास, प्रानकलियर शरीफ में इनका मजार है। शोकाकुल परिवार ज्वालापुर में ही रहता है।

इनके ज्येष्ठ पुत्र श्री मु० अख्तर ने दूकान का काम सँभाल लिया है। इनसे छोटे पुत्र श्री सफदर अली बी० एच० ई० एल० में परचेज विभाग में कार्य करते है। श्री जफर अली, अकबर अली और कैसर अली भी कारोबार में लगे हैं। अनवर अली और अतहर अली अभी शिक्षा पा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्यामस्वरूप वर्मा

श्री श्यायस्वरूप वर्मा

स्वर्गीय श्याम स्वरूप वर्मा का जन्म मई, सन् १८९८ में बदायूं में हुआ था। इनके पिता स्व० तुलसी राम जी डिप्टी कलक्टर थे। उत्तर प्रदेश के विभागीय प्रशिक्षण द्वारा सन् १९२५ में इन्होंने ट्रेनिंग प्राप्त की। हिन्दू हाई स्कूल, रायबरेली में सर्व प्रथम सन् १९२५-२६ में सहायक अध्यापक के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् रुड़की नगर पालिका में 'अटेनडेन्स आफिसर' के पद पर १९२६-२७ में कार्य किया। रुड़की से श्री वर्मा जी किसान हाई-स्कूल रायबरेली चले गये और सन् १९२७-२८ में सहायक अध्यापक के रूप में कार्य किया। सन् १९२९ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अन्तर्गत इन्टरमीडियेट परीक्षा उत्तीर्ण की।

अपुष्ट भाषा में हरिद्वार आमन्त्रण दे रहा था श्री वर्मा जी को और फलतः २ जनवरी, १९३० ई० में श्री वर्मा जी ने इस संस्था में पदार्पण किया। उस समय पी०बी० म्यु० इण्टर कालिज के स्थान पर नगर पालिका द्वारा मिडिल स्कूल के स्तर पर यह संस्था चल रही थी।

श्री वर्मा जी अंग्रेजी पढ़ाते थे। 'सादा जीवन, उच्च विचार' सिद्धान्त के अनुयायी श्री वर्मा जी कठोर परिश्रमी, कर्त्तव्यशील और छात्रों से स्नेह व्यवहार रखने वाले सर्वप्रिय अध्यापक थे। ये एक सिद्धान्तवादी और शांतिप्रिय व्यक्ति थे, झगड़े-टंटे से दूर भागते थे। आवश्यकता पड़ने पर वे छात्रों को सभी प्रकार की सहायता प्रदान करने को कटिबद्ध रहते थे। साथियों से स्नेह और छात्रों से सम्मान प्राप्त था।

सेवा में संलग्न, श्री वर्मा जी लगभग ५८ वर्ष की आयु में, सहसा हम सब को सदा के लिये छोड़ कर सन् १९५७ में चले गये। परिवार में अभी उनकी विधवा पत्नी तथा तीन पुत्र हैं। श्री विनोद स्वरूप जौहरी, जयपुर में टेलीफोन इन्जीनियर हैं। श्री नरेन्द्रस्वरुप जौहरी प्लानिंग विभाग लखनऊ में हैं। श्री योगेन्द्रस्वरूप जौहरी, सरकारी वायरलेस विभाग, दिल्ली में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक-श्रद्धाँजलियाँ

काल अथाह है, असीम है। क्रमश: सब जा रहे हैं, सब को जाना होगा——१९७१-७२ के कालाँश में जो असीम की थाह लेने चले गये, जिनके पार्थिव शरीर हमसे ओझल हो गये सदा के लिये। स्मृति की अमिट रेख छोड़ कर जो हम सब के लिये श्रद्धास्पद हैं, उनकी स्मृति में, भल्ला कालिज के अध्यापकों, कर्मचारियों तथा छात्र-छात्राओं की सामूहिक, समय-समय पर, होने वाली शोक-सभाओं में समर्पित श्रद्धांजलियाँ—……——……——जिससे एक बार फिर हम उन्हें स्मरण कर नत-मस्तक हो सकें——……………—।

संस्था से सम्बन्धित—

१. स्व० मुहम्मद उमर (सिलाई अध्यापक) ११-१-७१ को हमें सदा के लिये छोड़ गये।
२. „ रामेश्वर दयाल निगम (भू.पूर्व. प्रधानाचार्य) ७-७-७१ को असीम में विलीन हो गये।
३. कुमारी वीना, छात्रा. भल्ला कालिज, कक्षा ९ १०-८-७१ को चिरनिद्रा में लीन हो गई।
४. स्व. छोटूराम शर्मा जी (साथी श्री रतिराम के पिता) १४-११-७१ को स्वर्गलोक सिधार गये।
५. „ टीकाराम जी (साथी श्री दामोदर पंत के पिता) २४-११-७१ को गोलोक वासी हो गये।
६. „ ज्ञान प्रकाश बहुखंडी (कालिज का भू.पू. छात्र) १४-१२-७१ को छम्ब मोर्चे पर शहीद हुये।
७. „ ठा. रणधीरसिंह जी (साथी हरपालसिंह के पिता) १-२-७२ को अनन्त में अन्तर्ध्यान हो गये।
८ „ अमृता देवी (धर्मपत्नी साथी श्री रूपराम शर्मा) २२-२-७२ को परिवार को विलखता छोड़ गईं

राष्ट्रीय-स्तर पर सम्वन्धित विभूतियाँ—

१.	स्व. गुलाम मुहम्मद सादिक (मुख्य मन्त्री, काश्मीर)		स्व. २० दिसम्बर ७१
२.	„ डा. विक्रम अम्बालाल साराभाई (प्रसिद्ध वैज्ञानिक)	जन्म १२-४-१९१९	„ ३० दिसम्बर ७१
३.	„ आदित्य नाथ झा (उ. राज्यपाल, दिल्ली)		२८ जनवरी ७२
४.	„ महाराजा महेन्द्र (नेपाल नरेश)	जन्म ११-१-१९२०	„ ३१ जनवरी ७२
५.	„ श्रीमती मीना कुमारी (सिने-तारिका)	„ १९४२	„ ३१ मार्च ७२
६.	„ भारत रत्न पाँडुरंग वामन काणे (संस्कृत विद्वान)	„ १८८०	„ १८ अप्रैल ७२
७.	„ यामिनी राय (प्रसिद्ध चित्रकार)	„ १०-४-१८८८	„ २४ अप्रैल ७२

पाकिस्तानी खूनी सैनिकों द्वारा बाँगला देश के लाखों निर्दोष व्यक्तियों की हत्या तथा १० अप्रैल ७२ को ईरान में भीषण भूकम्प से लगभग १० हजार व्यक्तियों के अचानक मरने पर हार्दिक शोक-प्रकाशन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति के चरण-चिन्ह

संस्था रूपी वीणा के तारों में, कुशल वादक का, निर्देशन प्राप्त न होने से, या तो तार ढीले रहे या उनमें अधिक खिचाव आया रहा—बेसुरे रहे और 'बसन्त-बहार' राग स्वर में नहीं सधा। फिर भी, तार झनझनायें और कुछ धुनें निकलीं······बेसुरी और बेताली हीं सही······।

नवीन सत्र आरम्भ होने पर, नगर पालिका के नवनिर्वाचित अध्यक्ष महोदय श्री पारस कुमार जैन १५-७-७१ को कालिज में पधारे। अध्यापकों ने संस्था की दुरावस्था का चित्र अंकित किया, कारण प्रस्तुत किये। निदान भी बताया। श्री अध्यक्ष महोदय ने राग के अभाव में, रोग के निदान के लिये, कुशल वैद्यराज की भाँति, कुछ नुसखे बताये।

साहित्यक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ—

२९ जौलाई ७१ को प्रधानाचार्य श्री आवत की अध्यक्षता में 'तुलसी-जयन्ती' समारोह मनाया गया। छात्र-छात्राओं, तथा अध्यापकों द्वारा सम्बन्धित विषय पर भाषण हुये। प्रसाद बाँटा गया। भक्ति-संगीत की रस-धार बही।

इस अवसर पर हुई प्रतियोगिता के निम्न परिणाम घोषित किये गये:—

(क)	भाषण प्रतियोगिता:—	प्रथम स्थान:—	त्रिभुवन कुमार कक्षा १२ बी॰
		द्वितीय स्थान:—	अशोक कुमार ,, ,, ,,

विषय:— तुलसी का साहित्य में महत्व

(ख)	निबन्ध प्रतियोगिता:—	प्रथम स्थान:—	राकेश कुमार ,, ,, ,,
		द्वितीय स्थान:—	मदन मोहन जोशी ,, ,,
		तृतीय स्थान:—	निशान सिंह ,, ,,

विषय:— तुलसी की भक्ति भावना

१५ अगस्त--'स्वतन्त्रता दिवस' के अवसर पर प्रधानाचार्य—श्री आवत ने ध्वजारोहण किया। छात्र-छात्राओं ने भाषण दिये, प्रेरक गीत गाये। अध्यक्ष—श्री पारस कुमार जैन ने संस्था सम्बन्धी अनेक अभावों के निवारण के वचन दिये।

(क)	संगीत प्रतियोगिता:—	प्रथम स्थान:—	कु॰ निर्मलजीत कौर, विजय लक्ष्मी, सन्ध्या आदि कक्षा ८ ए
		द्वितीय स्थान:—	कु॰ निर्मला, कु॰ कमलेश, कक्षा ७ ए
		तृतीय स्थान:—	कु॰ शशी किरण, रेखा, मीना, पूनम आदि कक्षा ६ ए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) भाषण प्रतियोगिता: — विषय, 'स्वतन्त्रता प्राप्ति में विद्यार्थियों की भूमिका—

प्रथम स्थान—	त्रिभुवन कुमार	कक्षा १२ बी४
द्वितीय स्थान–	दिनेश कुमार	,, १२ ए
तृतीय स्थान—	अशोक कुमार	,, १२ बी२

(ग) निबन्ध प्रतियोगिता:— विषय, 'गुरु और शिष्य के पारस्परिक सम्बन्ध और राष्ट्र पर इसका प्रभाव

प्रथम स्थान—	किशनसिंह	कक्षा १२ बी४
द्वितीय स्थान–	राकेश अनेजा	,, १२ बी३
तृतीय स्थान—	अशोक कु० शर्मा	,, १२ बी२

नवीन भवन का शिलान्यास

२९ सितम्बर, सन् ७१ का दिन हम सब के लिये मंगलमय इस लिये तो था ही कि समस्त देश 'विजय दशमी' का त्योहार मना रहा था, हमारे लिये इसका महत्व इसलिये भी अधिक हो गया, क्यों कि इसी मंगलमय बेला में बम्बई के सेठ श्री मेघराज लाल चन्द जौकानी द्वारा दिये गये सवालाख से ऊपर के दान से बनने वाले नवीन शिक्षण भवन का शिलान्यास नगर पालिका के अध्यक्ष श्री पारस कुमार जैन, नगर पालिका के सदस्य, नगर पालिका के अधिकारियों, भल्ला कालिज के अध्यापकों तथा नगर के प्रबुद्ध नागरिकों की उपस्थिति में, धार्मिकरीति से सम्पन्न हुआ। अन्त में सेठ जी द्वारा मिठाई के डिब्बे बांटे गये।

गांधी जयन्ती

२ अक्तूबर ७१ को 'गांधी जयन्ती' के उपलक्ष में सांस्कृतिक कार्य-क्रम का आयोजन किया गया। कुछ वक्ताओं ने गांधी जी के उज्ज्वल जीवन पर प्रकाश डाला और गांधी जी के प्रिय भजन गाये गये। सामूहिक 'रामधुन' भी हुई।

पट—परिवर्तन

१० नवम्बर ७१ को प्रधानाचार्य, श्री गजराज सिंह रावत मुक्त हुये और छात्र-छात्राओं की सभा में विद्यार्थियों के प्रति अपने गहन हार्दिक स्नेह को प्रकट करते हुये, उन्हें शुभ-कामनायें प्रदान कीं।

बँगला देश—मुक्ति दिवस

१० जनवरी को अध्यापकों की सभा में बांगला देश की मुक्ति पर प्रसन्नता प्रकट की गई। भारत सरकार को बधाई देते हुये प्रधान मन्त्री इंदिरा गांधी की राजनैतिक सूझ-बूझ, तीनों सेनाओं तथा सेना अध्यक्षों के रण-कौशल पर साधुवाद दिया गया। याहिया खाँ, श्री निकसन तथा श्री चाऊएनलाई की नीतियों की निन्दा की गई। रूस, ब्रिटेन तथा फ्रान्स आदि देशों द्वारा दिये गये सहयोग के प्रति आभार प्रकट किया गया।

शेख मुजीब की मुक्ति

१७ जनवरी ७२ को अध्यापकों की सभा में शेखमुजीबुर्रहमान की मुक्ति पर प्रसन्नता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट करते हुये शेख जी के दीर्घ जीवन की कामना की गई। बांगला देश के अभ्युदय के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई।

सुभाष-जयन्ती

२३ जनवरी ७२ को 'सुभाष जयन्ती' के अवसर पर भाषण और शौर्यपूर्ण संगीत का कार्य-क्रम हुआ।

गणतंत्रदिवस

२६ जनवरी ७२ को, 'गणतन्त्र दिवस' के उपलक्ष में, श्री दामोदर पन्त की अध्यक्षता में भाषण, कवितापाठ तथा संगीत का मिला-जुला कार्य क्रम प्रस्तुत किया गया।

कीर्तन—भजन

छात्र-छात्राओं के कल्याणार्थ कालिज पुस्तकालय में १६-२-७२ की रात्रि को स्टेशन मास्टर, श्री कृष्णदत्त नागर ने अपने भक्तों की मण्डली सहित हरिभजन के साथ हरिकीर्तन भी किया। आरती के उपरान्त प्रसाद वितरण हुआ।

खेल-कूद तथा प्रतियोगितायें

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी क्रीड़ा-अधीक्षक श्री रामचन्द्र सिंह के संरक्षण में संस्था के होनहार युवक खिलाड़ियों ने जिला, मण्डल व प्रदेशीय स्तर पर हुई प्रतियोगिताओं में भाग लेकर संस्था के नाम को उज्ज्वल किया।

सर्व प्रथम, इस वर्ष अगस्त १९७१ को हमारे कालिज की फुटबाल-टीम के दो खिलाड़ी, केदार सिंह नेगी (कक्षा ११ ब) तथा विनोद कुमार भट्ट (कक्षा १२) जिले की टीम में चुन लिये गये। हाल में हुई बास्केट बाल प्रतियोगिता में किशनसिंह (कक्षा १२) को जिला टीम में चुन लिया गया। कबड्डी प्रतियोगिता में विदेश कुमार को जिले की टीम में चुन लिया गया।

बैडमिन्टन प्रतियोगिता में जिले की टीम के लिये महेश कुमार शर्मा (कक्षा १२) को चुना गया। टेबिल-टेनिस टीम के दो खिलाड़ी, निरुपम चतुर्वेदी (कक्षा ११ ब) तथा धीरेन दत्ता (कक्षा १०) सहारनपुर जिले के सर्वोच्च खिलाड़ी घोषित हुये और इन विद्यार्थियों ने जिले की तरफ से मेरठ-मण्डल में भाग लिया। निरुपम चतुर्वेदी, वहाँ भी सर्वोच्च खिलाड़ी के रूप में चुने गये। निरुपम ने मेरठ-मण्डल की ओर से प्रदेशीय प्रतियोगिता में भाग लिया।

यहां भी इनको सर्वोच्च खिलाड़ी घोषित किया गया। अक्तूबर १९७१ में गुजरात में हुई टेबिल टेनिस प्रतियोगिया में उत्तर-प्रदेश की ओर से भाग लिया।

इस वर्ष तैराकी में ओंकार शर्मा (कक्षा ११) ने जिला सहारनपुर तथा मेरठ-मण्डल की तैराकी-प्रतियोगिता में, कानपुर में, भाग लिया। निरुपम चतुर्वेदी (कक्षा ११) को गतवर्ष से ही टेबिल टेनिस के सर्वोच्च खिलाड़ी के रूप में 'उत्तर प्रदेश क्रीड़ा संघ' की ओर से २०० रु० की छात्र वृत्ति मिलती है। हाकी की टीम के तीन खिलाड़ी-अशोक कुमार शर्मा, किशोर कपूर तथा धीरेन दत्ता-जिला सहारनपुर की टीम में चुने गये और मेरठ-मण्डल में भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० किशोरी दास वाजपेयी

बदलते युग में, सब कुछ बदल गया, जीवन का दृष्टिकोण जीवन का मूल्य...। जीवन में धन, सुख-सुविधा की उपलब्धि, प्रचार, नाम, यश.. चाहे आत्मगौरव और चरित्र जायें भाड़ में..., किन्तु पं० किशोरीदास वाजपेयी एक दम भिन्न...। इस प्रकार के महानुभावों के अपने जीवन-सिद्धान्त और नैतिक मूल्य होते हैं। प्रतिपादित मूल्यों के लिये जीना ही उनका लक्ष्य होता है, ये लोग समाज को देते है, समाज से लेते कम है। समाज इनका ऋणी होता हैं। भिन्न प्रकार के लोग समाज के ऋणी होते हैं।

साहित्य सर्जक, उद्‌भट विद्वान्, गंभीर समालोचक, अद्वितीय 'वैयाकरण, आधुनिकता' से अनभिज्ञ, आत्मगौरव और अपनी टेक पर मर मिटने वाले, ७७ वर्षीय पं० किशोरीदास वाजपेयी सन् १९२८ से १९४२ तक इसी संस्था में, बीच - बीच में, अध्यापन-कार्य करते रहे हैं, कम ही लोगों को यह मालूम होगा। ऋषि तुल्य साहित्यकार के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालने की दृष्टि से नहीं वरन् पी० बी० म्यु० इंटर कालिज से इनका पुराना सम्बन्ध प्रकट करते हुये स्वयं गौरवान्वित्त होने की दृष्टि से यह लिखा जा रहा है।

जन्म-सन् १८९५। जन्म स्थान, तांत्या टोपे तथा झांसी की रानी-लक्ष्मीबाई के जन्म स्थान–बिठूर के निकट, रामनगर। पूज्यपिता–श्री सती दीन वाजपेयी, एक कर्मठ विद्वान तथा आन-बान के मनीषी...। सन् १८१५-१६ में वृन्दाबन में रहकर ज्ञानार्जन। 'दशधा भक्ति' विषयक प्रथम लेख 'वैष्णव सर्वस्व' में प्रकाशित। सन् १९१९ में 'शास्त्री' परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की।

मूर्धन्य विद्वानों द्वारा मान्य, ब्रजभाषा का व्याकरण, हिन्दी शब्दानुशासन, रस और अलंकार आदि अमर पुस्तकों के प्रणेता, राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत, राजनैनिक गतिविधियों में अनेक बार जेल जाने वाले, साहित्य के क्षेत्र में पन्डा–प्रवृति तथा सामाजिक क्षेत्र में कुरीतियों के विरुद्ध विद्रोह का झन्डा खड़ा कर जीवन को जोखिम में डालने वाले, आत्म गौरव और आत्म मर्यादा की रक्षा में यातनाओं को स्वीकार करने वाले, अपनी आन-बान पर अडिग रहने वाले पं० किशोरीदास वाजपेयी का जीवन अनेक प्रकार की गतिविधियों से परिपूर्ण है, आवेग औरगति से गुम्फित, जीवन-संघर्ष की एक अनुपम पहेली है। सीमित स्थान में इस पर प्रकाश डालना कठिन है। अपने गौरव–कह लें जिद, के कारण वाग्देवी तथा लक्ष्मी जी में सदा अनबन रही। यदि इन्हें 'जीवन की आधुनिक कला' का कुछ बोध होता तो पुस्तक-लेखन से भारी बैंक-बैलेन्स होता, पुस्तकें बी० ए०, एम० ए० के पाठ्यक्रम में लगी होतीं, पद्मभूषण से अलंकृत हो जाते, रहने को भव्य-भवन होता...। आवश्यकता है कि हिन्दी के 'पाणिनि' को समझा जाये। सभ्य समाज का लक्षण है कि वह अपने साहित्यकार, कवि एवम् कलाकार के प्रति कृतज्ञ–भाव रखते हुये उसे सम्मानित करे।

भल्ला कालिज का, श्री वाजपेयी जी से !चिर-परिचत, सम्बन्ध है। 'भागीरथी' के माध्यम से, उनके 'पांडित्य, के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हुआ उनके दीर्घ जीवन की कामना करता है। मां वीणापाणि तथा लक्ष्मी जी, दोनों ही श्री वाजपेयी जी को वर दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सुरेन्द्र चन्द्र रस्तौगी
न्यायाधीश, हरिद्वार

हरिद्वार को श्री रस्तौगी जैसे सरल, अहंकार रहित, राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक चेतना से ओत-प्रोत दंडाधिकारी प्राप्त हुये हैं, यह दैवयोग ही है। इनका जन्म जिला रायबरेली स्थित सोलन स्थान में १ जनवरी १९३८ ई में हुआ। श्री नवल किशोर रस्तौगी जैसे योग्य पिता प्राप्त हुये। प्रारम्भिक शिक्षा तो राय बरेली में ही हुई। गवर्नमेन्ट कालिज, इलाहाबाद से इन्टर मीडियेट किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राच्य इतिहास विषय लेकर सन् १९५९ में एम०ए० किया। सन् १९६१ में पी०सी०एस० में सफलता प्राप्त की।

१ जनवरी १९७१ में हरिद्वार आने के पूर्व बदायूँ, उत्तराखण्ड तथा गढ़वाल में दंडाधिकारी एवम् न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति हुई। जैन डिगरी कालिज, बड़ौत के प्रधानाचार्य तथा गणित सम्बन्धी अनेक प्रसिद्ध पुस्तकों के रचियता श्री फकीर चन्द जी के दामाद होने का सौभाग्य श्री सुरेन्द्र जी को २८ फरवरी, १९६५ के शुभ दिवस को प्राप्त हुआ।

नगर में विभिन्न सामाजिक, राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के मूल प्रेरक श्री स्तौगी ने पाक-भारत युद्ध के समय यहाँ राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत रखने तथा बांगला देश सहायता कोष के लिये डेढ़ लाख से ऊपर की राशि भेजने में जिस मनोयोग से कार्य किया वह सचमुच ही न केवल प्रशंसनीय है, अनुकरणीय भी है।

श्री ऋषि कुमार गुप्ता
एम०ए०, एल०एल०बी,
(अधिशासी अधिकारी)

१६ जौलाई, सन् १९२९ में, जि० बिजनौर स्थित ग्राम बढ़ापुर में गुप्ता जी का जन्म हुआ। बी० ए० तक की शिक्षा श्याम सुन्दर मेमोरियल कालिज, चन्दोसी में सफलता पूर्वक चली। लखनऊ विश्वविद्यालय से अर्थ शास्त्र में एम०ए० किया और यहीं से ससम्मान एल०एल० बी० की डिगरी प्राप्त की।

अपने विद्यार्थी जीवन में श्री गुप्ता अत्यन्त मेधावी तथा परिश्रमशील छात्र रहे। शिक्षा समाप्ति पर, सेवा का प्रथम अवसर धामपुर (बिजनौर) नगर पालिका में प्राप्त हुआ। कुछ काल तक ऋषिकेश नगर पालिका में रहने का अवर प्राप्त हुआ।

हरिद्वार नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी के रूप में जिस तत्परता से श्री गुप्ता जी कार्य संचालन कर रहे हैं, उसकी प्रशंसा कौन नहीं करेगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिद्वार नगर पालिका समिति के सम्मानित अध्यक्ष

एवम्

माननीय सदस्य गणों की सूची

(कालिज की प्रबन्ध कारिणी समिति)

१.	श्री पारस कुमार जैन	अध्यक्ष	कनखल
२.	श्री मनोहर लाल मल्होत्रा	सदस्य	खड़खड़ी
३.	श्री महन्त राम टहल दास	,,	,,
४.	श्री राम नारायण शर्मा	,,	मोती बाजार, हरिद्वार
५.	श्री हरिराम शर्मा	,,	अपर रोड़, हरिद्वार
६.	श्री राममूर्ति, 'वीर'	,,	रामलीला मैदान, हरिद्वार
७.	श्री शंकर लाल गोस्वामी	,,	न्यू ललता रौ पुल हरिद्वार
८.	श्री राम लाल	,,	टीबड़ी हरिद्वार
९.	श्री हरिराम कुमार	,,	निर्मला छावनी हरिद्वार
१०.	श्री जगदीश प्रसाद	,,	कनखल
११.	श्री शिव चैतन्य पुरी	,,	कृष्णा आश्रम, कनखल
१२.	श्री मोहन लाल प्रभाकर	,,	कनखल
१३.	श्री शिव चरण विद्यालंकार	,,	कनखल
१४.	श्री मुकुन्द लाल राठौर	,,	ज्वालापुर
१५.	श्री बलराम शर्मा	,,	ज्वालापुर
१६.	श्री चाँद खां	,,	ज्वालापुर
१७.	श्री सोम दत्त श्रोतिय	,,	ज्वालापुर
१८.	श्री कालूराम	,,	ज्वालापुर
१९.	श्री मौ० इस्माइल	,,	ज्वालापुर
२०.	श्री अब्दुल्ला	,,	ज्वालापुर
२१.	श्री ओम प्रकाश अरोड़ा	,,	ज्वालापुर
२२.	श्री राम लाल अरोड़ा	,,	ज्वालापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय
श्री शिव प्रसाद झा

सन् १९२७ की २८ अगस्त को ज्वालापुर (हरिद्वार) निवासी पं० गंगाशरण झा के घर में जिस शिशु ने जन्म लिया, उसका नाम शिव प्रसाद रखा गया।

बालक शिव प्रसाद की हाई स्कूल तक की शिक्षा तो स्थानीय भल्ला कालिज में ही हुई। (उस समय इस कालिज में केवल हाई स्कूल तक की शिक्षा दी जाती थी) डी० ए० वी० कालिज, देहरादून से इंटर मीडियेट किया। सन् १९४६ में बी० ए० किया। १९४८ ई० में बकालत पास की। सन् १९४९ में एम० ए०, किया। समूची उच्च स्तरीय शिक्षा इलाहबाद विश्वविद्यालय में हुई। 'साहित्यरत्न' परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

हरिद्वार नगर पालिका के भू० पूर्व अध्यक्ष श्री सरदार राम रक्खा की सुयोग्य कन्या को श्री झा की जीवन संगिनी बनने का सौभाग्य सन् १९४८ में प्राप्त हुआ।

आरम्भ में श्री शिव प्रसाद जी ने इलाहबाद के हम नामी यशस्वी वकील श्री शिवनाथ काटजू के संरक्षण में वकालत आरम्भ की। हरिद्वार नगर पालिका में श्री झा ११ जौलाई, सन् १९५० को अधिशासी अधिकारी के पद पर आसीन हुये।

'कोलम्वो' योजना के अन्तर्गत श्री झा सन् १९६२ में कनाडा की कार्लेटन यूनिवर्सिटी में शिक्षण प्राप्त करने गये और राजनीति शास्त्र एवम् जन-प्रशासन विषयक डेढ़ वर्ष के पाठ्यक्रम में सफलता का प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

सेवाओं के प्रान्तीयकरण होने से सितम्बर १९६६ में श्री झा गाजियाबाद नगर पालिका में चले गये।

अधिक कार्यभार से इनका स्वास्थ्य चरमरा उठा और अन्ततः सन् १९७० की २४ जून का वह अभागा दिन आया और उसने एक व्यस्त, प्रगतिशील तथा योग्य व्यक्तित्व को 'महाकाल' की वेदी पर अर्पित कर दिया। श्री झा एक अध्ययनशील और निर्माण प्रिय व्यक्ति थे। ४७ वर्ष के छोटे जीवन में उन्होंने बहुत कुछ किया। नगर पालिका हरिद्वार तथा भल्ला कालिज को उनकी जो देन है, वे कभी भी भुलाई न जा सकेंगी। श्री झा की सेवाओं के प्रति 'भागीरथी' परिवार उनके शोकाकुल परिवार के साथ समवेदना प्रकट करता हुआ उनके प्रति श्रद्धांजलि के शत शत सुमन अर्पित करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, इलाहाबाद की विभिन्न वर्षों की परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्राप्त छात्र-छात्राओं की तालिका। जिन परीक्षार्थियों ने, परिश्रम द्वारा, अपने व्यक्तित्व को उन्नत किया, साथ ही अपनी संस्था की गरिमा में वृद्धि की, बधाई के साथ प्रशंसा के भी पात्र हैं। इनका जीवन सदा उन्नतशील रहे।

हाई स्कूल

वर्ष	अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी	विशेष योग्यता
१९६९	२७२४८	अशोक कुमार	विज्ञान
	२७३३२	विनीत कुमार	गणित
	२७३४४	शैलेन्द्र कुमार रोहेला	—
	२७३६४	सुरेश चन्द तोमर	ग. वि.
	२७३६६	संजीव कुमार गुप्ता	गणित
	२७३७६	कु० मीना चतुर्वेदी	ग., अंग्रेजी
१९७०	१०८६४०	कु० सरोज जोशी	—
१९७१	११६२४३	अजय कुमार	ग., वि., अं., कला
	११६२४८	निरुपम चतुवदी	—
	११६३२२	राजेन्द्रनाथ कौशिक	—
	११६३३५	शैलेन्द्र प्रताप सिंह	—
	११६३८०	पुरषोत्तम दास मेहता	—

इन्टरमीडियेट

वर्ष	अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी	विशेष योग्यता
१९६९		चन्द्र मोहन सिंह विष्ट	—
		अविनाश मेहता	भौ०वि०, रसायन विज्ञान
		कु० रश्मि गुप्ता	,, ,, ,,
	१४५९५६	सत्यपाल	गणित
	१४५९६५	कु० परमजीत कौर	रसा० बि०
१९७०	२२४२४१	गोपाल किशोर बँसल	—
१९७१	४९२२०	अशोक कुमार	—
	४९२६३	प्रेम कुमार	—
	४९३१६	संजीव कुमार गुप्ता	रसा०वि०
	४९३२६	सुरेश चन्द्र तोमर	भौ०रसा०, विज्ञान
	४९३४८	कु० मीना चतुर्वेदी	,, ,, ,,
	४९३५७	कु० शशि बाली	,, ,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे पूर्ण-सेवा-निवृत्त बन्धुगण

१.	श्री शिवभवान दीक्षित,	एम०ए०, बी०टी०सी०
२.	श्री जय करण दास	मैट्रिक, सी०टी०
३.	श्री दयाशंकर शर्मा	एड० परीक्षा, सी०टी०
४.	श्री रूपराम शर्मा	बी०ए०, सी०टी०
५.	श्री राम बिहारी लाल जौहरी (प्रधानाचार्य)	एम०ए०; एल०टी
६.	श्री प्यारे लाल मधुवन	इन्टर, आई०जीडी०
७.	श्री बलजीत सिंह	प्रधान लिपिक
८.	श्री कृष्णलाल गोविल	एम०ए०, बी०टी०
९.	श्री राजा राम वर्मा	इन्टर, बी०टी०सी०
१०.	श्री गजराज सिंह श्रावत (प्रधानाचार्य)	एम०ए०, एल०टी०

उपरोक्त सभी 'सेवामुक्त' बन्धुओं का इस शिक्षण संस्था के निर्माण, इसके विकास और इसकी उन्नति में अथक-अविराम योगदान रहा है। इन सभी की ओर, इनके दीर्घ अनुभव से लाभान्वित होने के लिये यह संस्था सदा निहारेगी। सबके सुस्वास्थ्य, दीर्घ जीवन और आध्यात्मिक लाभ के लिये 'भागीरथी' की ओर से अत्यन्त मंगल-कामनायें अर्पित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२६ जनवरी ७२ को युवक कांग्रेस द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगिता में दल विजयविहार विजेता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

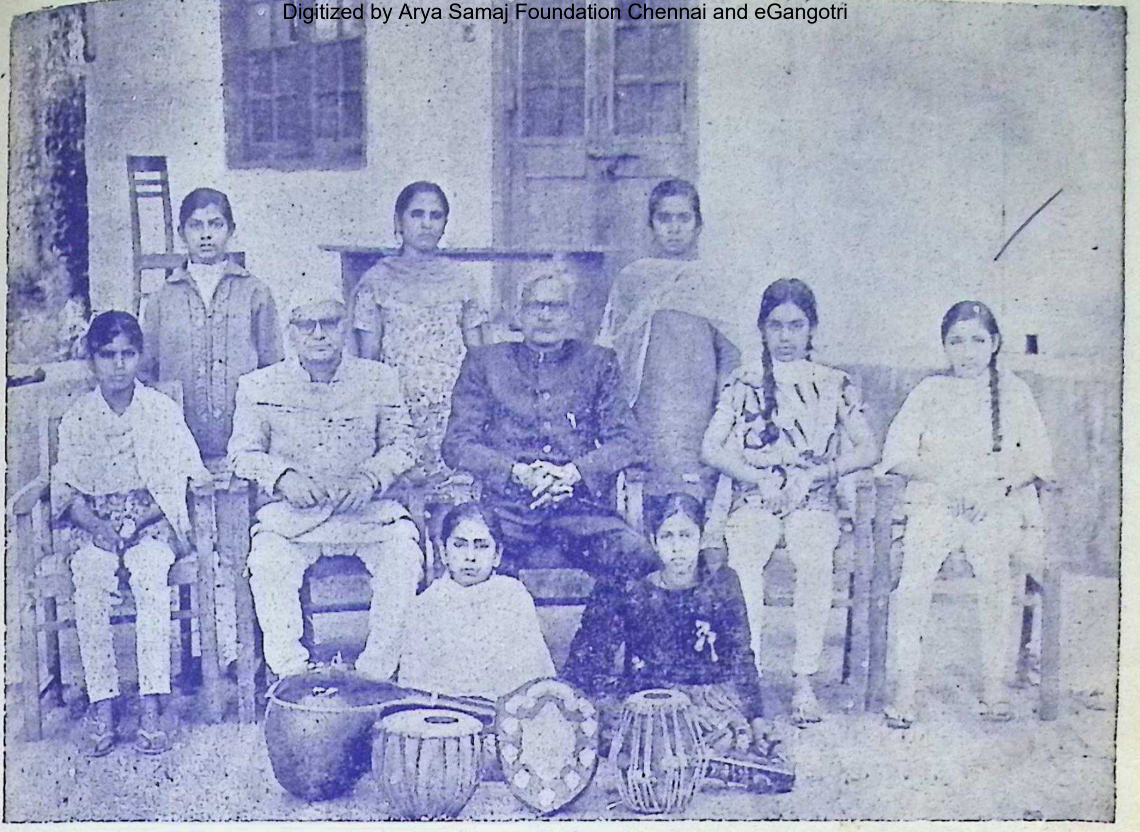

प्रथम पंक्तिः (दायें से बांयें) कु० मिथिलेश, कक्षा १० ए., श्री 'शून्य', (संगीत शिक्षक), श्री सोहनलाल गुप्ता (प्रधानाचार्य) कु० कुमुद सिंघल, कक्षा १० ए., कु० गायत्री तोमर कक्षा १० ए.

दूसरी पंक्तिः— कु० शिमिलेश कक्षा ८ ए., कु० परमजीत कोर, कक्षा ८ ए., कु० विजय लक्ष्मी, कक्षा ८ ए.

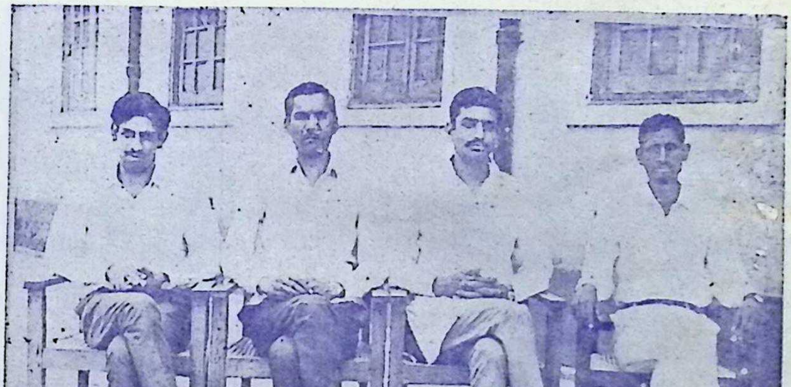

कार्यालय–लिपिक–मण्डल, १९७१–७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बायें से दायें—श्री सत्यपाल अरोड़ा, श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोर कपूर, कक्षा १२ बी
सचिव, छात्र कल्याण समिति

सोमप्रकाश नैथानी, कक्षा ११ सी
उपसचिव, छात्र कल्याण समिति

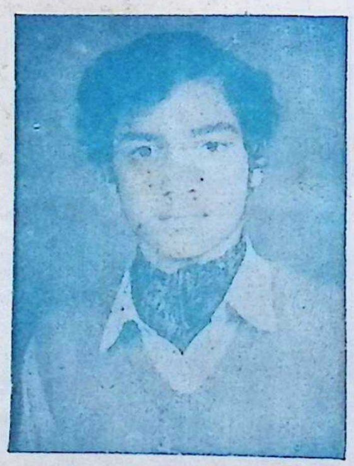

निरुपम चतुर्वेदी, कक्षा १० बी
यू० पी० चाम्पियन, टेबिल टेनिस

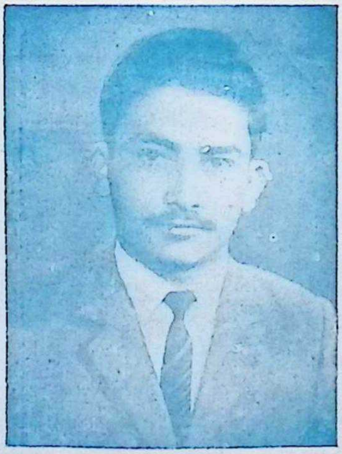

धीरेन दत्ता, कक्षा १०
जिला चैम्पियन, टेबिल टेनिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री जयकरण दास

सेवा, सरलता, सौम्यता की प्रतिमूर्ति, श्री जयकरण दास का जन्म, जिला अमृतसर के जमाल कलां ग्राम में ६ जौलाई, सन् १६०० को एक कुलीन पंजाबी परिवार में हुआ।

शिक्षा की समाप्ति पर, राजस्थान के डूंगर पुर राज्य स्थित पि·डे हाई स्कूल में, अक्टूबर, १६१६ में अध्यापक के रुप में प्रथम नियुक्ति ७ वर्ष तक सफल अध्यापन कार्य करके, सन् १६२६ में, गवर्नमेन्ट ट्रेनिंग कालिज, अजमेर से सी०टी० किया। २६ जौलाई, १६२६ को, म्युनिसिपल स्कूल (वर्तमान-भल्ला कालिज) में नियुक्ति; ६ कमरों का एक छोटा सा स्कूल, तत्र प्रधानाचार्य श्री रामेश्वर दयाल निगम। वर्तमान ज्वालापुर इंटर कालिज, पहिले म्युनिसिपैलिटी द्वारा संचालित मिडिल स्कूल। आरम्भ में नगर पालिका ने श्री जयकरण दास को इसके संचालन का भार सौंपा। ज्वालापुर इंटर कालिज के वर्तमान् प्रिंसिपल- श्री अर्जुनदेव श्री दास के सहयोगी थे। इस संस्था का संचालन-भार नगर पलिका ने 'गुरुकुल कांगड़ी' को सौंप दिया, तो श्री जयकरण दास फिर अपनी पुरानी सस्था में आ गये। वरीयता तथा अनुभव के आधार पर, ६ जौलाई, सन् १६५० तक, सफल हेडमास्टर के रुप में कार्य किया।

शिक्षक के जन्म जात गुण—

विद्यार्थियों से आदर, साथियों से स्नेह प्राप्त। मिलनसारी, परदुख कातरता, विनम्रता, परिश्रम आदि गुणों से विभूषित। ७२ वर्ष के श्री जयकरण दास, निरोग अवस्था में कभी यहां कभी दिल्ली में—पूर्ण उन्मुक्तता से जीवन-डगर पर चल रहे हैं।

अकथनीय दौड़-धूप करने पर भी श्री दीक्षित से उनका चित्र प्राप्त न हो सका। —सम्पादक

श्री शिव भगवान दीक्षित

जन्म तिथि—४ दिसम्बर, १६०१। जन्म स्थान—गोला गोकरन नाथ, जिला खीरी। प्रारम्भिक शिक्षा-गोला करन नाथ। परिवार, विपन्न-साधन विहीन। धनाभाव के कारण शिक्षा प्राप्ति में बाधायें। पिता की छत्र-छाया बचपन में उठ गई। उर्दू और फारसी की परीक्षायें पास कीं।

प्रथम अध्यापन कार्य-प्रायमरी स्कूल, लखीमपुर खीरी। सन् १६२६ में इलाहबाद गये। अग्रवाल विद्यालय में उर्दू अध्यापक बने। सन् १६२७ में देहरादून। डी०ए०वी० कालिज में हाई स्कूल कक्षा तक उर्दू पढ़ाने के लिये नियुक्ति। यहीं उर्दू की सर्वोच्च परीक्षा 'कामिल' पास की। सन् १६३० में म्यु० मिडिल स्कूल, हरिद्वार में प्रवेश। दिन में पढ़ाना, रात को स्वयं पढ़ना। हाई स्कूल, इन्टरमीडियेट तथा बी० ए० प्राइवेट रूप में उत्तीर्ण। सन् १६३७ में फारसी में एम०ए० तथा १६४४ में उर्दू में एम०ए० किया। संस्था में उर्दू-फारसी विषय समाप्त। सन् १६५० में, प्राइवेट रूप में, एम०ए० किया भूगोल विषय लेकर। भल्ला कालिज में भूगोल-प्रवक्ता के रूप में नियुक्ति। वाइस प्रिंसिपल के पद पर कार्य किया। सन् १६६४ में सेवा-मुक्त।

कर्मठता, अनुशासन प्रियता, सरलता और अध्ययन शीलता के धनी। उचित बात पर अड़ जाना स्वभाव। धन-संकलन में कुबेर-प्रवृत्ति, किन्तु इसके उपभोग और सुख-सुविधाओं से विमुख वंचित। हस्तरेखा विज्ञान तथा ज्योतिष शास्त्र में पारंगत श्री दीक्षित खान-पान में आत्म नियंत्रित। अध्यापकों की समस्याओं में दिलचस्पी रखने वाले शिक्षक संघ के नगर संचालक। लगभग ७१ वर्ष के श्री दीक्षित देवपुरा स्थित व्यवसाय में व्यस्त रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री दयाशंकर शर्मा तथा श्री रूप राम शर्मा ने लगभग साथ-साथ कालिज में प्रवेश किया। दोनों के निवास स्थान, एक ही मोहल्ले में, साथ-साथ हैं। पूर्णाविकाश-काल भी लगभग एक दूसरे के बाद आया और यह उचित समझा गया कि दोनों के पृथक चित्र देने के स्थान पर दोनों एक ही चित्र में रहें। —सम्पादक

श्रीदयाशंकर शर्मा * श्रीरूपराम शर्मा

श्री दयाशंकर शर्मा

जन्म तिथि : ४ अप्रैल, सन् १६०४। जन्म स्थान—भरतपुर की डींग रियासत में। पूज्य पिताजी का नाम—पं० गोविन्द राम शर्मा। पिता तथा पितामह का जन्म स्थान, बिजनौर स्थित ताजपुर स्टेट। पितामह राज्य के राज्य गुरु। पिताजी, अध्यापक थे। श्री दयाशंकर के भ्राता हरिशंकर एक यशस्वी वैद्यराज है।

प्रारम्भिक शिक्षा- डींग राज्य। इलाहबाद में चाचाजी के पास रहकर, डी०ए०वी० स्कूल में अध्ययन किया। तत्पश्चात् बनारस की 'एडमीशन परीक्षा' पास करके, गवर्मेन्ट नार्मल स्कूल, अजमेर से सी० टी०। इन्हीं दिनों विवाह-सूत्र में आबद्ध।

सर्व प्रथम, अजमेर के डी०ए०वी० स्कूल में शिक्षण कार्य किया, सन् १६२५ से सन् १६३० तक। सन् १६३१ में हरिद्वार आकर म्यु. स्कूल में (वर्तमान् भल्ला कालिज) अध्यापन कार्य आरम्भ। श्री जयकरण दास के पूर्णाविकाश पर श्री शर्मा जी ने हेडमास्टर पद सुशोभित किया। श्री शर्मा जी ने सन् १६६८ में पूर्णाविकाश प्राप्त किया। प्रबन्धकुशलता के साथ इनमें अनुशासन प्रियता भी है। ईमानदारी और कठोर परिश्रम-जीवन मन्त्र। स्नेह, उदारता और क्षमा से हृदय भरपूर —...। ये 'वेदान्तियों' को दांत वाला बना देते हैं, अर्थ-कुशल 'डेनटिस्ट' हैं। भरा-पूरा परिवार। सन्तान आज्ञाकारी, सुशिक्षित। नियति से सुख न देखा गया। युवा पुत्र डा. दिनेश को भरी-पूरी जवानी में छीन लिया। श्री शर्मा जी की वेदना के हम भागीदार हैं। हृदय में वेदना सँजोये श्री शर्मा जी, निर्मल-छावनी स्थित निवास स्थान में, रुग्ण धर्मपत्नी को स्वस्थ बनाने में सेवारत हैं।

श्री रूपराम शर्मा

श्री रूपराम शर्मा के सेवामुक्त होने पर, सम्मान में आयोजित 'विदा-गोष्टी' में प्रस्तुत अपनी कविता में कहा था 'पिन से लेकर गोंददानी माँगने, परीक्षा विषयक अंकों की जानकारी प्राप्त करने से लेकर शिक्षा सम्बन्धी किसी जानकारी को प्राप्त करने के लिये अब हम कहां जायेंगे ?

ऐसे बहु-ज्ञान कोष, कठोर परिश्रमी, उपयोगी और यंत्रवत् कार्य करने वाले श्री शर्मा जी का जन्म ग्राम लोहई, जिला मथुरा में, १५ जौलाई, सन् १६०७ को हुआ। पूज्य पिता भी कुशल अध्यापक- श्री परमानन्द शर्मा। सेवा तथा त्याग के भाव वंशपरम्परा के अनुसार प्राप्त हुये। वर्नाक्यूलर मिडिल मांठ (जि० मथुरा) से। ८ वीं कक्षा तक की शिक्षा इलाहबाद से। इंटर मीडियेट-परीक्षा उत्तीर्ण की, महाराजा कालिज जयपुर से। आगरा ट्रेनिंग कालिज से, सन् १६३१ में सी० टी० किया।

इस संस्था में सेवा कार्य सन् १६३१ में, आरम्भ। कठोर परिश्रम के शोणित से इन्होंने इस संस्था को सींच कर पल्लवित-कुसुमित किया। सन् १६६६ में पूर्णाविकाश प्राप्त किया। संस्था को इनका अभाव सदा सालता रहेगा-सन्तान-एक पुत्र रत्न, तीन पुत्रियां-सभी विवाहित। पुत्र-चिं० अवधेश, इसी संस्था का होनहार छात्र-जो अब डाइरेक्टोरेट आफ सुगर एंन्ड वनस्पति में अधिकारी है। पुत्र का विवाह हुआ, एक नव-प्रतिमा, पुत्रवधू घर में आई और श्रीमती शर्मा, बहू का मुंह देखकर, सदा के लिये छुट्टी पर चली गईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राम बिहारीलाल जौहरी

प्रधानाचार्य

श्री राम बिहारी लाल जौहरी

स्वर्गीय प्रधानाचार्य श्री निगम के सेवाकाल की समाप्ति पर, सेवा-सूची में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त होने से, श्री जौहरी को भल्ला कालिज के प्रधानाचार्य पद को सुशोभित करने का अवसर मिला। जन्म-२ दिसम्बर, सन् १९०३। जन्म स्थान फरीदपुर, जिला बरेली। पिता मुन्शी ढाकन लाल जी, एक सम्मानित और सम्भ्रान्त व्यक्ति। श्री जौहरी का प्रारम्भिक जीवन और प्राथमिक शिक्षा फरीदपुर में ही। ये बचपन से ही मेधावी, परिश्रमी, कार्यकुशल और धुन के पक्के। नटखट स्वभाव, फलत: बहुधा बड़ों से प्रतारण पाते। एस० एल० सी० परीक्षा एडवर्ड मेमोरियल हाई स्कूल बरेली मे। इन्टरमीडियेट और बी० ए० परीक्षायें बरेली कालिज, बरेली से—ससम्मान। सन् १९२८-२९ में एल०टी० ट्रेनिंग कालिज, इलाहाबाद से। इतिहास विषय लेकर एम० ए० प्राइवेट रूप में। विवाह-बन्धन, सन् १९२४ में।

सन् १९२९ से ३५ तक बी० एम० एस० एस० कालिज, शाहजहाँ पुर में अध्यापन कार्य। २१ अगस्त, सन् १९३५ में भल्ला कालिज में नियुक्ति: सन् ४५ में प्रवक्तापद, सन् ४७ में वाइस प्रिंसिपल। सन् १९५७ में, श्री निगम के पूर्णावकाश पर, प्रधानाचार्य पद पर नियुक्ति।

२१ अगस्त, सन् १९६५ में पूर्ण सेवा मुक्त। समाज, संस्था एवम् व्यक्तियों के रूप को घड़ने तथा काँट-छाँट करने की क्षमता वाले श्री जौहरी की अपनी विशिष्ट कार्य-पद्धति रही। कार्य करने, चलने-फिरने में एक गति, एक दबदबा एक वेग, एक रुतबा। कार्य लेने में कठोर, निजी व्यवहार में मृदुल……—……। कसरत, बागवानी, शिकार, भ्रमण आदि के शौकीन। पुस्तकालय का स्वरूप सँवारा, 'जौहरी वाली-बाल टूर्नामेन्ट' शुरू कराया, खेल-कूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को गति दी। अपने भरे-पूरे परिवार को उन्नत कर श्री जौहरी निर्मला छावनी स्थित निवास में, लगभग पूर्व आवेग-गति के साथ जीवन-उपवन में विचरण कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री प्यारे लाल मधुबन

श्री प्यारे लाल मधुबन

जन्म तिथि– ११ मार्च, सन् १९०६।

जन्म स्थान– ग्राम, कौलकी कलाँ।

जिला— सहारनपुर।

प्रारम्भिक शिक्षा–भलसुवा ईसापुर। हाई–स्कूल पंजाब से। मुरादाबाद रह कर ड्राइंग की आई० जी० डी० परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रथम सेवा कार्य भी मुरादाबाद में।

सन् १९२९ में हरिद्वार आये। कला अध्यापक के रूप में इसी संस्था में नियुक्ति। कला के साथ खेलों से लगाव। इस कालिज में क्रीड़ा निर्देशक भी रहे। इनके निर्देशन में खेलों में संस्था का नाम चमका। सेरो–शायरी और मंच–अभिनय में भी रुचि थी। ११-३-७१ को सेवामुक्त हो गये।

श्री मधुबन मस्त और फक्कड़ प्रकार के व्यक्ति रह। विवाहित, किन्तु सन्तान विहीन श्री मधुबन की रिक्तता और शून्यता की पूर्ति 'फक्कड़वाद' से। पैनी तार्किक बुद्धि से सम्पन्न। इन्हें वकील होना चाहिये था। खुले दिल इतने, कि इधर वेतन मिला, उधर साफ और श्रीमती जी हैं कि—————परेशान··················।

सेवामुक्त होकर अपने ही ग्राम में कृषि कार्य में लगे हैं।

आधुनिक एशिया की वास्तविकता के प्रति अमरीका को अधिक यथार्थवादी होना चाहिये। जिस उथल-पुथल ने दक्षिण एशिया को ग्रस रखा है, वह तत्वतः जान फास्टर डलेस के समय की महाशक्तियों की विरासत है। हमने शक्ति-सन्तुलन की राजनीति में कभी विश्वास नहीं किया। वह काफी 'आउट आफ डेट' हो चुकी है।, किन्तु उसी ढंग की राजनीति ने हमें युद्ध में धकेला, यद्यपि युद्ध हमारे राष्ट्रीय हितों के अनुकूल नहीं था। हम दूसरे राष्ट्रों को पाकिस्तान का वैसा उपयोग नहीं करने देंगे, जैसा कि अब तक उन्होंने किया है।

—इंदिरा गांधी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री बलजीत सिंह, मुख्य लिपिक

श्री बलजीत सिंह

जन्म स्थान—ग्राम, भलसुवा ईसापुर

जिला— सहारनपुर

जन्म तिथि—३ अगस्त, सन् १९०५

पूज्य पिता जी—श्री निहाल सिंह जी।

प्रारम्भिक शिक्षा, गाँव में ही। मुज्जफर नगर से हाई स्कूल, सन् १९२६ में। सहारनपुर जिले के कोटा स्थान के डॉकखाने में एक वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात् लगभग दो वर्ष तक 'इम्पीरियल टोबैको कम्पनी, सहारनपुर के कार्यालय में कार्य किया। सफल कार्य से सभी अधिकारी प्रसन्न रहते………।

२५ अगस्त, सन् १९३० को नगर पालिका हरिद्वार द्वारा संचालित स्कूल के कार्यालय का भार इन पर आया।

किसी संस्था की उन्नति में जहाँ प्रधानाचार्य, अध्यापक और अध्यापन का स्थान है, वहीं सुगठित, सुव्यवस्थित कार्यालय का भी स्थान है। एक समय था जब यह कालिज सहारनपुर जिले में ही नहीं, समूचे प्रान्त में यश अर्जित कर रहा था, संस्था के कार्य संचालन की कुशलता का श्रेय 'नींव के पत्थर' की भाँति अदृश्य है। कठोर परिश्रमी, विनयी, मधुर-भाषी और सयमी श्री बलजीत सिंह शिक्षा जगत के नियमादि की जानकारी और अनुभव के चलते-फिरते 'ज्ञान कोष' रहे। सन्तान-विहीन होने से 'ममता' का केन्द्र, स्थल भल्ला कालिज ही रहा। ३ अगस्त, सन् १९६७ को पूर्णावकाश प्राप्त कर ये कनखल स्थित अपने निवास में मुक्त स्वरूप, जीवन यापन कर रहे हैं। आवश्यकता पड़ने पर, कालिज अब भी इनके अनुभव से लाभाविन्त होने में हिचकिचाता नहीं है।

कला से जीवन का उत्कर्ष है। कला यदि जीवन को सन्मार्ग पर न ला सकी, तो वह कला ही क्या? —महात्मा गांधी

संगीत को यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये तो ज्ञान होता है कि यह एक स्वर्गीय शक्ति है। निखिल ब्रह्मांड में इससे जीवन संचारित होता है। हृदय में पर लग जाते हैं, विचारों में शक्ति आती है, दुःख दूर हो कर प्रसन्नता होती है। —अफलातून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री कृष्ण लाल गोविल

श्री कृष्णलाल गोविल

जन्म तिथि–१२ जून, सन् १६०८। जन्म स्थान, अलीगढ़। पूज्य पिता, श्री बुद्धिलाल जी, रिटायर्ड डिवीजन सुपरिटेन्डेन्ट आफ एग्रीकलचर (इलाहबाद) एक उन्नतिशील, दृढ़ चरित्र के सौम्य महानुभाव!

इन्टरमीडियेट, खुरजा से। डी० ए० वी० कालिज, कानपुर से बी० ए०। बी० टी० ट्रेनिंग, बनारस हिन्दू वि० विद्यालय से। सेवाकाल में, प्रायवेट रूप से, एम० ए० किया। श्री गोविल अर्थशास्त्र तथा राज्यनीति शास्त्र के विद्वान हैं। इन्हें कालिज प्रशासन यन्त्र को, किसी न किसी रूप में, संचालित करने का अवसर मिला। किसी पचड़े में न पड़ते हुये, इन्हें अपने काम से ही काम रहा 'लेना एक न देना दो' वाली कहावत पर चलने का यत्न किया। पक्षपात रहित, मृदुभाषी और शाँत स्वभाव के श्री गोविल संग्रह-प्रिय महानुभाव हैं।

१६ जौलाई, सन् १६३४ को इन्होंने इस संस्था में पदार्पण किया। लगभग ३६ वर्ष तक इस संस्था में सफलता पूर्वक अध्यापन कार्य करके ११ जून, सन् १६७० में ये पूर्णावकाश पर चले गये। श्री गोविल के अग्रज–श्री एम०एल० गोविल एवम् श्री बी० एम० लाल, क्रमशः मुजफ्फरनगर में प्लान्ट प्रोडक्शन अधिकारी तथा आलम बाग लखनऊ रेलवे वर्कशाप के जनरल मैनेजर हैं।

श्री गोविल भरे-पूरे परिवार—पाँच पुत्र, एक पुत्री के पिता हैं। सभी उच्च-शिक्षा प्राप्त कर, कार्य संलग्न हैं।

संगीत का प्रभाव आत्मा पर होता है। इससे आत्मा में उच्चता और पवित्रता आती है। रागों से मानव हृदय में सात्विक विचार उत्पन्न होते हैं और सत्कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त होती हैं। जिसके मनोभाव चंचल हैं, उसको संगीत से संतोष मिल सकता है और वेदनाओं का ताप नहीं रहता। संगीत हमें एक नूतन जीवन प्रदान करता है। संगीत हीन व्यक्ति की तुलना एक नेत्र हीन मनुष्य से कर सकते हैं। संगीत वास्तव में आत्मा की भाषा है, किन्तु वह अनुवाद करना पसन्द नहीं करती।

—मैक्समूलर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राजाराम वर्मा

श्री राजाराम वर्मा

जन्म तिथि, २८ अक्तूबर, सन् १६०८। जन्म स्थान, ग्राम, सांडी जिला हरदोई। पूज्य पिता–श्री लालमणि वर्मा। प्रारम्भिक शिक्षा, ग्राम सांडी। दुर्भाग्य कि ६ वर्ष की अबोध आयु में पिता जी स्वर्गवासी हो गये। सन् १६३० में गवर्नमेन्ट हाईस्कूल हरदोई से हाईस्कूल। विवाह हो गया, गृहस्थी का भार आ जाने से, डिवीजनल सुपरिटेन्डेन्ट, रेलवे-कार्यालय, मुरादाबाद में सेवा-कार्य आरम्भ। कुछ कालोपरान्त, घर वापिस, ट्यूशन करके जीवन यापन आरम्भ। रेलवे विभाग में पूर्व परिचय के कारण, सन् १६३२ के हरिद्वार–अर्द्ध कुम्भ मेले में अस्थाई टिकिट कलक्टर का कार्य मिल गया।

सन् १६३४ में फैजाबाद से बी०टी०सी०। भारतीय जन–आन्दोलन-वर्ष, १६४२ में देहरादून के 'फारेस्ट-स्कूल' में अध्यापन कार्य। अनुशासन प्रियता आदि गुणों के कारण, प्रेमनगर, (देहरादून) स्थित 'इंडियन मिलिटरी अकादमी में अंग्रेज अधिकारियों को रोमन तथा उर्दू पढ़ाने का कार्य मिल गया। सन् १६४७ तक यहीं रहे।

१२ अगस्त, १६४७ को भल्ला कलिज, हरिद्वार में नियुक्ति। २३ वर्ष की अथक साधना के उपरान्त, २७ अक्तूबर, सन् १६७० में श्री वर्मा जी सेवा–मुक्त हो गये।

इनकी 'विदा-गोष्टी' के अवसर पर सभी वक्ताओं ने, इनके गुणों की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की। 'चाचा' के नाम से प्रसिद्ध श्री वर्मा जी यहीं हरिद्वार में जीवन की विषमताओं से साहसिक टक्कर ले रहे हैं।

संगीत मुझमें जीवन रस संचरित कर देता है। मेरे विचारों को एकाग्र कर देता है। मेरे अन्तर में साहस भर जाता है। थके हुए शरीर को संगीत बल देकर न केवल भविष्य के लिए उत्साहित कर देता है वरन् वर्तमान में भी हृदय को पवित्र विचारों से अलोकित करता है। जिस समय मुझे संगीत अच्छा लगता है उस समय मेरा अन्तर सत्यता और पवित्रता से ओत-प्रोत रहता है। —बिशप होर्जे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गजराज सिंह श्रावत

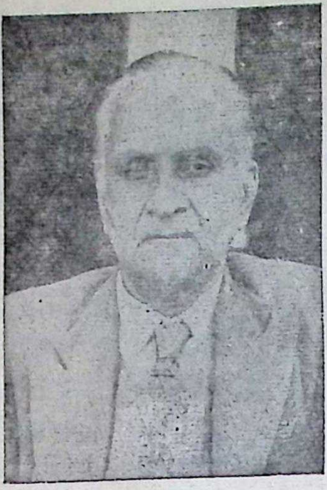

श्री गजराज सिंह श्रावत

जिला मेरठ के जंगेठी ग्राम में एक सम्भ्रान्त और शिक्षित क्षत्रिय परिवार में ११ नवम्बर सन् १९१२ को जिस शिशु ने चौ० न्यादर सिंह जी के घर में पदार्पण किया, नामकरण के समय उसे नाम दिया गया गजराज——गजराज सिंह। कुल मिला कर श्री न्यादर सिंह जी के चार पुत्र हुये, जिसमें तीसरे श्री श्रावत हैं। इनके बड़े भाई– श्री रघुराज सिंह जी (स्वर्गीय) आई०ए०एस०, मध्य प्रदेश सरकार के 'रेवेन्यू बोर्ड' के अध्यक्ष थे।

श्री श्रावत ने हाई स्कूल गवर्नमेन्ट कालिज, मेरठ से तथा अर्थशास्त्र में एम०ए० की डिगरी मेरठ कालिज से सन् १९३६ में प्राप्त की। गवर्नमेन्ट ट्रेनिंग कालिज, इलाहाबाद से एल०टी।

शिक्षण क्षेत्र में प्रथम चरण राजकुमार कालिज, रायपुर (म० प्रदेश) में रखा। तत्पश्चात् अमर सिंह कालिज, लखावटी में अर्थशास्त्र के प्रवक्ता के रूप में प्रवेश किया।

मुरादाबाद जिले में कांठ के डी०एस०एम० कालिज में लगभग ८ वर्ष तक प्रधानाचार्य पद पर कार्य किया। सन् १९४८ से श्री श्रावत ने सरकारी सेवा में पदार्पण किया।

भल्ला कालिज की दशा में सुधार लाने के लिये स्थानीय प्रशासन ने इस संस्था के प्रधानाचार्य पद हेतु शिक्षा विभाग से प्रार्थना की और तदनुकूल बुलन्दशहर के गवर्नमेन्ट कालिज से श्री श्रावत को यहां भेजा गया। श्री श्रावत ने इस संस्था के प्रधानाचार्य पद को फरवरी, सन् १९७० में सुशोभित किया।

१ दिसम्बर सन् १९७१ में श्री श्रावत का सेवाकाल पूर्ण हो गया, किन्तु नवीन प्रबन्ध होने तक, कुछ समय के लिये आप ही इस कठोर पद पर कार्य करते रहे।

अनेक बार शैक्षणिक योग्यता, व्यवहार की सरलता और सदाशयता जीवन की वज्र व्यवहारिक भूमि पर कुछ भी नहीं उगा पाती। श्री श्रावत छात्रों के प्रति स्नेहपूर्ण, तथा उदारता का व्यवहार करने के पक्षपाती थे। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मानसिक सन्तुलन न खोना, मित्रों और साथियों से शिष्ट व्यवहार करना, किसी पर भी सुगमता से विश्वास कर लेना आदि गुणों से सम्पन्न श्री श्रावत प्रभावशाली व्यक्तित्व रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन्नालाल भल्ला म्युनिसिपल इण्टर कालिज हरिद्वार, (विज्ञान-परिषद् १९७१-७२)

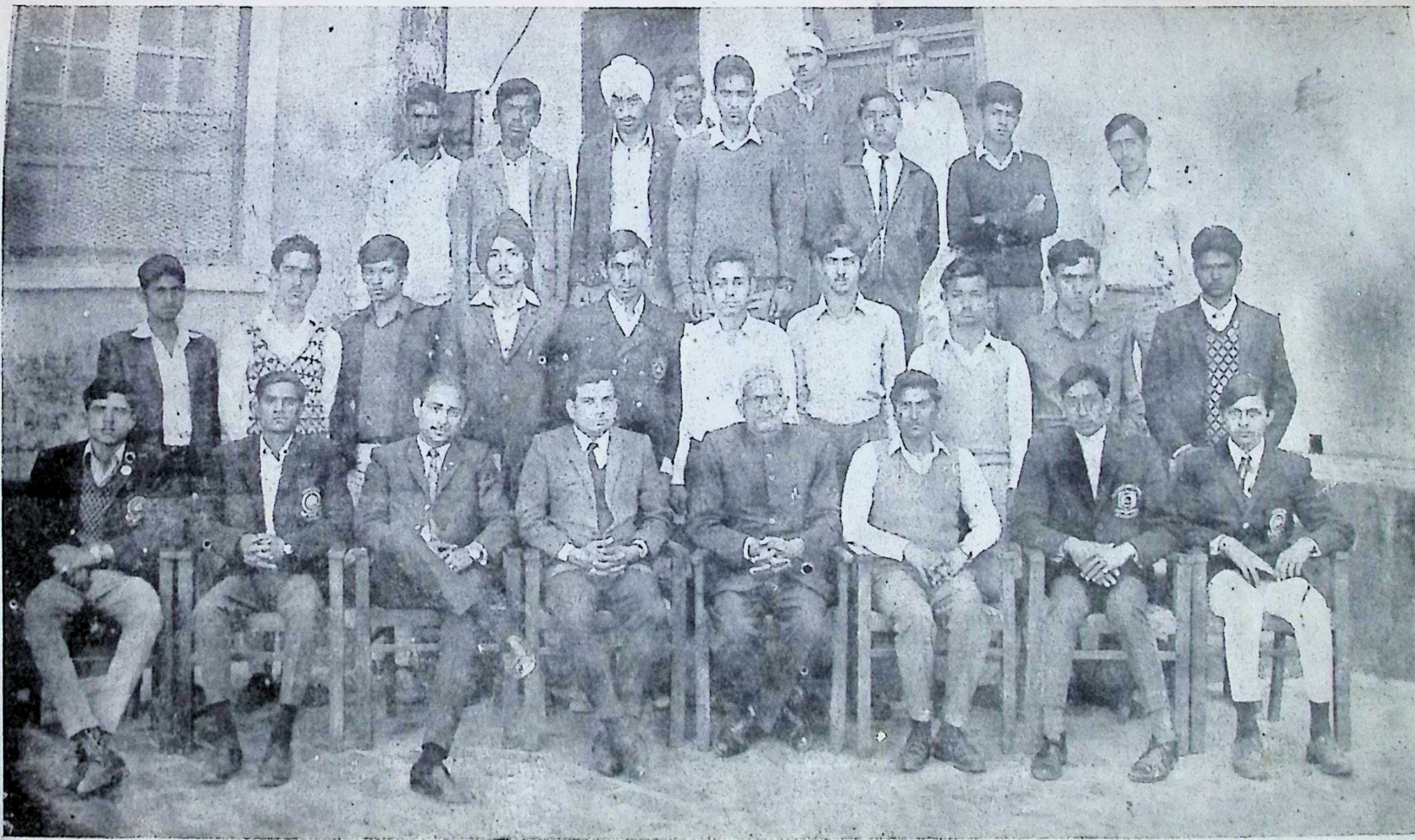

कुर्सियों पर बैठे हुये— (बाँये से दायें) (१) वासुदेव मिश्रा (सचिव) (२) राजेन्द्र प्रसाद शर्मा (संयोजक) (३) श्री विजय कुमार शाह (प्रवक्ता रसा० शास्त्र) (४) श्री राजकुमार पालीवाल (प्रवक्ता भौतिक वि०) (५) श्री सोहनलाल गुप्ता (प्रधानाचार्य) (६) श्री ओम प्रकाश गुप्ता (-अध्यक्ष-प्रवक्ता बायलौजी) (७) चन्द्रप्रकाश शर्मा (संयोजक) (८) अनुराग गुप्ता (सचिव)

द्वितीय पंक्तिः खड़े हुये— (दायें से बायें) (१) राकेशकुमार त्रिपाठी (सदस्य) (२) सुभाष भाटिया (सदस्य) (३) विजयकुमार भाटिया (सदस्य) (४) नरेन्द्रपाल सिंह कोहली (सदस्य) (५) अनिल कुमार बाली (सदस्य) (६) कैलाश पांडे (कक्षा प्रति०) (७) प्रताप राय (क०प्रति) (८) हरिहर शंकर ११वी$_2$ (९) राकेशकुमार तनेजा (कक्षा प्रति) (१०) अशोककुमार कौशिक (सदस्य)

तृतीय पंक्ति – (बायें से दायें) (१) भगतसिंह रावत (२) अशोककुमार जतथा कक्षा ११वी$_2$ (३) किशनसिंह (सदस्य) (४) प्रदीपकुमार डोगरा (सदस्य) (५) विजय कुमार गोयल (सदस्य) (६) पुष्कर राजकपूर (सदस्य) (७) विश्वमोहन (सदस्य)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पन्नालाल भल्ला म्युनिसिपल इण्टर कालिज हरिद्वार, अध्यापक मण्डल (१९७१–७२)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक मंडल, पी० बी० म्यु० इन्टर कालिज, हरिद्वार

१९७१-७२

नाम अध्यापक	योग्यता
श्री सोहन लाल गुप्ता (प्रधानाचार्य)	एम.एस.सी., एम.ए., एल.एल.बी, एल.टी.
,, दामोदर पन्त	एम.ए.एल.टी., प्रवक्ता (अंग्रेजी)
,, रवि प्रकाश कुर्ल	एम.ए., एल.टी. प्रवक्ता (अंग्रेजी)
,, यज्ञदत्त शर्मा	एम.ए., शास्त्री, सा. रत्न, प्रवक्ता (हिन्दी)
,, महेश प्रशाद शर्मा	एम.ए., एल.टी., प्रवक्ता (अंग्रेजी)
,, श्रीविलास डबराल	एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (संस्कृत) प्रवक्ता (हिन्दी)
,, शिव प्रसाद अग्रवाल	एम.काम., प्रवक्ता (वाणिज्य)
,, श्रोम प्रकाश गुप्ता	एम.एस.सी. प्रवक्ता (जीव विज्ञान)
,, बृजनन्दन शर्मा	एम.ए. (इतिहास राजनीति) एल.टी. प्रवक्ता (इति.)
,, कान्ता राम वर्मा	एम.ए. (इति. राज.) एल.टी. प्रवक्ता (ना.शास्त्र)
,, हरपाल सिंह पँवार	एम.ए.,सी.टी. प्रवक्ता (अंग्रेजी)
,, भुवन चन्द जोशी	एम.ए., बी.एस.सी., प्रवक्ता (अंग्रेजी)
,, धर्म पाल सिंह चौहान	एम.ए., बी.टी., प्रवक्ता (भूगोल)
,, हेमचन्द्र उप्रेती	एम.ए.,बी.टी., प्रवक्ता (हिन्दी)
,, जगवीर सरन सिंघल	एम.ए., प्रवक्ता (चित्रकला)
,, विजय कुमार शाह	एम.एस.सी., प्रवक्ता (रसा. शास्त्र)
,, राज कुमार पालीवाल	एम.एस.सी., प्रवक्ता (भौ. शास्त्र)
,, सुरेश चन्द श्रीवास्तव	एम.एस.सी., प्रवक्ता (गणित)
,, राधेश्याम शास्त्री	एम.ए., आचार्य, प्रवक्ता (संस्कृत)
,, सुरेश चन्द्र गोयल	एम.काम., बी.टी., प्रवक्ता (अर्थशास्त्र)
,, राजाराम वर्मा	एम.ए, आचार्य, सा. रत्न, प्रवक्ता (संस्कृत)
,, भूराज सिंह 'शून्य'	बी.ए., संगीत विशारद, स. अध्यापक
,, श्री कान्त भारद्वाज	बी.एस.सी, बी.टी., ,, ,,
,, देवकी प्रसाद तोमर	बी.एस.सी.बी.टी, ,, ,,
,, बाबूलाल धीमान्	एम.ए.,बी.टी. ,, ,,
,, बालकृष्ण गुप्ता	एम.ए., एल.टी., ,, ,,
,, मक्खन सिंह	बी.एस.सी., बी.टी.आई.जी.डी., स. अध्यापक
,, राम प्रसाद	बी.ए., बी.टी. स. अध्यापक
,, ज्योति प्रसाद	बी.ए., सी.टी. ,, ,,
,, विनोद कुमार राजपूत	बी.एस.सी.,बी.टी ,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम अध्यापक	योग्यता
श्री गुलाब सिंह वर्मा	इन्टर, आई.जी.डी. (ग्रन्थ शिल्प अध्यापक)
,, बाबूराम शर्मा	बी. ए., बी. टी. सहायक अध्यापक
,, मेवाराम शर्मा	एम.ए., बी.टी., ,, ,,
,, हरिसिंह चौहान	बी. ए., बी. एड. ,, ,, [पुस्तकालयाध्यक्ष]
,, सीताराम भारद्वाज	बी.ए.,आई.जी.डी., आर.डी.एस. (कला शिक्षक)
,, राजकुमार मित्तल	एम.ए.,बी.टी., स. अध्यापक
,, गुरुदेव भारद्वाज	बी.एस.सी., डिमान्स्ट्रेटर (रसा. शास्त्र)
,, बनारसी दास	बी. ए., बी. टी. स. अध्यापक
,, धर्मानन्द पोखरियाल	बी.एस.सी. ,, ,,
,, रामचन्द्रसिंह	बी. ए., बी.टी., ,, ,, (क्रीड़ा अध्यक्ष)
,, देवेन्द्र सिंह सिरोही	बी.एस.सी., डिमान्सट्रेटर (रसा.शास्त्र)
,, सोमनाथ पाठक	बी.एस.सी., स० अध्यापक
,, सुभाष चन्द्र शर्मा	बी.एस.सी., डिमान्सट्रेटर (जीव विज्ञान)
,, जगतारन प्रसाद साराभाई	एम.ए., बी.टी. स० अध्यापक
,, कृष्ण कुमार मिश्रा	एम.ए., बी.टी., ,, ,,
,, जियालाल शर्मा	एम.ए., बी.टी. ,, ,,
,, विष्णु स्वरूप त्रिपाठी	एम.एच., बी.टी.सी. सा० रत्न
,, राम कृष्ण शर्मा	बी.ए., बी.टी. स० अध्यापक
,, उमेश चन्द्र जोशी	बी.ए., बी.टी. ,, ,,
,, लक्ष्मी चन्द्र शर्मा	इन्टर जे.टी.सी ,, ,,
,, श्रीमती चाँदरानी	सिलाई अध्यापिका
,, महेन्द्र सिंह सिन्धु	बी.ए., बी.टी., स० अध्यापक
,, तेजराम शुक्ला	इन्टर, सी. टी. ,, ,,
,, रहतूराम शर्मा	इन्टर, एच. टी.सी., ,, ,,
,, रतिराम शर्मा	बी ए., आई.जी.डी., आर डी.एस.
,, सुरेन्द्रसिंह बेनीवाल	बी.एस.सी., स० अध्यापक
,, चन्द्रहास भारद्वाज	इन्टर, आई.जी.डी., कला शिक्षक
,, श्रीमती सन्तोष कुमारी	स० अध्यापिका
,, श्रीधन प्रकाश	इन्टर, बी.टी.सी, स० अध्यापक
,, विश्वनाथ	बी.एस.सी., ,, ,,
,, सिया राम	इन्टर, बी.टी. ,, ,,
,, लहना सिंह	कृषि स्नातक, कृषि ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यालय लिपिक मण्डल १९७१-७२

१. श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा (प्रमुख लिपिक)

२. श्री घनश्याम भारद्वाज (प्रथम लिपिक)

३. श्री चन्द्रभान सिंह (द्वितीय लिपिक)

४. श्री सत्यपाल अरोड़ा (तृतीय लिपिक)

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी मण्डल १९७१-७२

१.	श्री गबल सिंह	सेवक	८.	श्री बहादुर सिंह	सेवक
२.	,, ब्रतरूमल	,,	९.	,, रामेश्वर प्रसाद	,,
३.	,, मानसिंह	,,	१०.	,, हर फूल	(माली)
४.	,, सुखवीर सिंह	,,	११.	,, जयराम	
५.	,, आत्माराम	,,	१२.	,, आत्माराम	(सफाई कर्मचारी)
६.	,, रामलाल	,,	१३.	,, कालूराम	,, ,,
७.	,, देशराज	,,	१४.	,, घनानन्द	(साईकिल रक्षक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोनार बँगला देश

(त्रिभुवन कुमार गर्ग, १२ बी,)

किसी देश का इतिहास बदल जाये, कोई बड़ी घटना इसका कारण होती है, किन्तु किसी स्थान का भूगोल बदल जाये, इसका आधार तो सचमुच बहुत ही बड़ी घटना होनी चाहिये ।

स्वतंत्र बांगला देश का इतिहास और भूगोल दोनों का नव निर्माण हुआ है ।

इस देश में लोग पिछले २५ वर्षों से गुलामी में पिस रहे थे । वे जानते थे कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये महान बलिदान देने होंगे । स्वतंत्र बांगला देश का अर्थ है लाखों लोगों के बलिदान और करोंड़ों लोगों के कष्ट सहन···। ५५ हजार, १२७ वर्ग मील क्षेत्रफल और लगभग साढ़े सात करोड़ जनसंख्या । आबादी के हिसाब से इसका नम्बर ससार में आठवां है । उन्नतिशील देशों में यह देश चाहे सबसे पीछे हो, किन्तु स्वतंत्रता के लिये दिये गये बलिदानों में यह देश सब का सिरमौर है । देखा जाये तो आरम्भ से ही इस भूभाग में कुछ उथल-पुथल होती रही है । यहीं अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्ति का बिगुल बजा । राष्ट्रीय-आन्दोलन को दुर्बल करने के लिये अंग्रेजों ने ही १९०८ में शेष बंगाल से तोड़कर इसे पूर्व बंगाल का नाम देना चाहा । फिर सन् १९४७ में, धर्म के नाम पर इसका गठ बन्धन पाकिस्तान के साथ कर दिया गया । ६ दिसम्बर १९७१ को भारत द्वारा स्वतन्त्रत बांगला देश को मान्यता प्रदान कर दिये जाने के उपरान्त, श्री मुहम्द अली जिन्ना द्वारा प्रचारित और गोरों द्वारा समर्थित, द्विराष्ट्र का सिद्धान्त दफना दिया गया ।

यह देश चार भागों और १७ जिलों में बँटा हुआ है । देश के तटवर्ती इलाके प्रत्येक वर्ष समुद्र के कोप का भाजन बनते हैं । यहीं गंगा का विशाल डेल्टा है जहां के निवासियों की भाषा बँगला है । यहां के निवासियों में निज भाषा प्रेम ईर्ष्या की वस्तु है । अंग्रेजों के जमाने में जब अंग्रेजी बोलना शान की बात थी तो बँगला देश के प्रभाव शाली व्यक्ति अंग्रेज अफसरों के सामने आपस में बँगला बोल कर गौरव का अनुभव करते थे ।

भारत की तरह यहां की भी लगभग ८० फी सदी जनता किसान है । कुल भूमि के ६४ प्रतिशत हिस्से पर धान और जूट की लहलहाती खेती होती है । १ करोड़ टन के लगभग चावल पैदा होता है । गन्ना, लगभग साढ़े सात करोड़ टन । चाय, २६ हजार टन प्रति वर्ष । विश्व में कुल जूट उत्पादन का ८० प्रतिशत इसी देश में होता है । ढाका से ३० हजार पौंड पान, प्रतिदिन पश्चिमी पाकिस्तान भेजे जाया करते थे । यहाँ मछलियां पकड़ना भी एक अच्छा उद्योग है ।

इस देश में कृषि विकास की सम्भावनाओं का विकास पश्चिमी पाकिस्तान के प्रशासकों ने नहीं किया । उपलब्ध आंकड़ों के हिसाब से यहां २२ कपड़ा मिलें, ९ चीनी मिलें, १८ माचिस की फैक्टरियां, ७ कांच के सामान के कारखानें, एक सिमेन्ट फैक्टरी, १ शिपयार्ड और एक डाकयार्ड था ।

संयुक्त पाकिस्तान के कुल ७,७२२ करोड़ रुपये के राष्ट्रीय उत्पादन में बांगला देश का हिस्सा ४,३९५ करोड़ रुपये था और पाकिस्तान के कुल निर्यात का ७० प्रतिशत बांगला देश से होता था ।

तीन प्रमुख समुद्री बन्दरगाह हैं—चट्टग्राम, चालना और खुलना । देश के भीतरी भाग में यातायात मुख्यतया मेघना, ब्रह्मपुत्र आदि नदियों से होता है । राजधानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढाका की जनसंख्या लगभग १० लाख है। अन्य प्रमुख नगर हैं—मैमनसिंह, जैसोर, सिलहट, दिनाजपुर, रंगपुर, कोमिल्ला और चट्टग्राम। ढाका विश्वविद्यालय यहां का सबसे बड़ा शिक्षाकेन्द्र था, किन्तु पाकिस्तानी शासकों ने यहां की इमारतों, अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को अत्याचार का निशाना बनाया। बांगला देश में तीन मेडीकल कालिज हैं। पच्चीस वर्ष के कुशासन में पाकिस्तानी शासकों ने इस देश में केवल ३,२०० किलोमीटर नई सड़कें बनवाईं।

यहां के हरे-भरे खेतों, जंगलों, पहाड़ों और नदियों के मनमोहक प्रदेश को 'सोनार बांगला' कहा जाता है। जब स्वर्गीय बंकिम चन्द्र चटर्जी ने 'सुजलाम्, सुफलाम्, शस्य-श्यामलाम्' गाया था, तो उनकी दृष्टि में इस देश की यही मनोरम छवि छाई होगी।

संगीत ईश्वर की ओर से हमें एक ऐसा वरदान है जिसके द्वारा संसार के समस्त विभिन्न भाषी मनुष्य एक ही समय एकत्रित होकर संगीत की एक व्यापक भाषा में प्रार्थना कर सकते हैं।
—हेलवी

नृत्य-वृत्ति प्राणीमात्र की सुलभवृत्ति है। रणभूमि में, आनन्द में, मिलन और रोदन में प्राणी अपने अंगों द्वारा भाव विशेष उत्पन्न करता है।
—ऋग्वेद

यदि संगीत-कला से हम विमुख हैं तो हम न केवल शारीरिक जीवन को वरन् आध्यात्मिक जीवन को भी महानता और श्रेष्ठता की ओर ले जाने में बाधक होते हैं।
—हैवेलाक एलिस

मानव जीवन की उन्नति, सभ्यता, सदाचार, आध्यात्मिक उन्नति और नृत्यकला एक ही साथ गिरते तथा उठते हैं।
—कवीन्द्र रवीन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्टरमीडियेट, अनुक्रमांक सूची, १९७१–७२

रोल नम्बर	नाम	रोल नम्बर	नाम
५३६१३	अमर सिंह	५३६४२	सुधीर कुमार राजपूत
१४	अर्जुन सिंह	४३	सुबोध कुमार शर्मा
१५	अशोक कुमार शर्मा	४४	कु० उर्मिला अग्रवाल
१६	कैलाश चन्द्र	४५	,, गंगा देवी भारती
१७	गोपाल दत्त जोशी	४६	,, प्रेमा जोशी
१८	चन्द्र मोहन शर्मा	४७	,, रानी अग्रवाल
१९	जय प्रकाश	४८	,, शकुन्तला शर्मा
२०	जीवन लाल साहू	४९	,, सुधा रानी
२१	नरेश कुमार बजाज	५०	,, सुधा गुप्ता
२२	ब्रज किशोर शर्मा	५१	,, सरोज जोशी
२३	भूपेन्द्र सिंह	५२	,, सोमवती देवी शर्मा
२४	भूरा सिंह	५३	अखिल कुमार घोष
२५	मनमोहन सूरी	५४	अखिल मित्तल
२६	महेन्द्र पाल धीवान	५५	अनिल कान्त कौशिक
२७	माम चन्द्र शर्मा	५६	अनिल कुमार शर्मा
२८	यशपाल व्यास	५७	अनिल कुमार शर्मा
२९	योगेन्द्र पाल शर्मा	५८	अमर जीत सिंह
३०	रमेश कुमार शर्मा	५९	अमर नाथ जोतवानी
३१	रमेश चन्द्र	६०	अनुराग गुप्ता
३२	रवीन्द्र कुमार दत्त	६१	अरुप कुमार चटर्जी
३३	रवीन्द्र पाल सिंह चौहान	६२	अशोक कुमार
३४	राजीव सिंह	६३	अशोक कुमार पारिख
३५	विदेश कुमार	६४	अशोक कुमार पाराशर
३६	विनोद कुमार	६५	अशोक कुमार पालीवाल
३७	विनोद कुमार गुखाला	६६	अशोक कुमार शर्मा
३८	विनोद कुमार भट्ट	६७	अशोक कुमार सहगल
३९	विरेन्द्र कुमार	६८	अशोक कुमार सिंघल
४०	श्री कण्ठ वड़ोला	६९	अशोक वर्धन बड़ौनी
४१	सन्तोष कुमार शर्मा	७०	आर० गोपाल कृष्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोल नम्बर	नाम	रोल नम्बर	नाम
५१६७१	ओम प्रकाश	५३७०६	प्रमथेश भट्टाचार्य
७२	ओम प्रकाश कपरुवान	७०७	प्रवीन कुमार मित्तल
७३	ओमप्रकाश बड़थ्वाल	७०८	परमजीत सिंह
७४	उमा शंकर पांडेय	७०९	पुठकर राज कपूर
७५	उमा शंकर शर्मा	१०	पुष्प कुमार
७६	उमेश चन्द्र अग्रवाल	११	पूरन चन्द
७७	किशन सिंह	१२	बलबीर सिंह
७८	कुंवर सिंह	१३	बिजेन्द्र प्रताप सिंह बेनीवाल
७९	कुल भूषण रावत	१४	विजेन्द्र सिंह चौहान
८०	कृष्ण कुमार	१५	भगवान प्रसाद
८१	कृष्ण कुमार शर्मा	१६	भगवान सिंह
८२	केदार नाथ कटियार	१७	भारतेन्दु हांडा
८३	केवल कृष्ण	१८	भुवन चन्द जोशी
८४	कैलाश कुमार पांडेय	१९	मधू सूदन शर्मा
८५	कैलाश चन्द्र उप्रेती	२०	मनोहर लाल शर्मा
८६	खड़क बहादुर	२१	महीधर कुकरेती
८७	गंगा सिंह पटवल गुसांई	२२	महेश कुमार
८८	गजेन्द्र कुमार कौशिक	२३	महेश कुमार शर्मा
८९	घनश्याम किशोर शर्मा	२४	मानवेन्द्र दत्त बहुगुण
९०	चन्द्र प्रकाश अग्रवाल	२५	मुकेश कुमार शर्मा
९१	चन्द्र प्रकाश शर्मा	२६	यशपाल सिंह
९२	चमन प्रकाश	२७	योगेन्द्र पाल सिंह
९३	चेतन देव वर्मा	२८	रघुवीर सिंह सैनी
९४	चेतन स्वरूप जोशी	२९	रमाकान्त श्रीवास्तव
९५	जयन्त सिंह	३०	रमेश चन्द खन्ना
९६	दलजीत सिंह	३१	रविन्द्र कुमार वर्मा
९७	नरवदेश्वर गुप्ता	३२	रविन्द्र प्रताप सिंह कुशवाहा
९८	नरेन्द्र पाल सिंह कोहली	३३	राकेश कुमार
९९	निशान सिंह	३४	राकेश कुमार अनेजा
५३७००	प्रताप राय	३५	राकेश कुमार त्रिपाठी
७०१	प्रदीप कुमार डोगरा	३६	राजेन्द्र कुमार
७०२	प्रदीप कुमार दूबे	३७	राजेन्द्र दत्त
७०३	प्रदीप कुमार वार्ष्णेय	३८	राजेन्द्र प्रसाद
७०४	प्रदीप कुमार शर्मा	३९	राजेश कुमार जैन
७०५	प्रदीप कुमार शर्मा	४०	राम बहादुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोल नम्बर	नाम	रोल नम्बर	नाम
५३७४१	राहुल कुमार श्रावत	५३७७६	सत्य प्रकाश कश्यप राजपूत
४२	रूप किशोर मिश्रा	७७	सत्य प्रकाश (परि० जा०)
४३	ललित मोहन कुकरेती	७८	सतीश कुमार ग्रान्नद
४४	ललित कुमार	७९	सतीश चन्द ध्यानी
४५	लाल किशोर	८०	सतीश कुमार शर्मा
४६	लोक राज पन्त	८१	सतीश चन्द शर्मा
४७	वासुदेव मिश्र	८२	सुंधाशु द्विवेदी
४८	विक्रम सिंह रावत	८३	सुनील कुमार पाण्डे
४९	विजय कुमार ग्रग्रवाल	८४	सुभाष चन्द भाटिया
५०	विजय कुमार जैन	८५	सुभाष चन्द रीमावास
५१	विजय कुमार जैतली	८६	सरेन्द्र कुमार शर्मा
५२	विजय कुमार भल्ला	८७	सुमन कुमार शर्मा
५३	विजय कुमार भाटिया	८८	सुरेश कुमार ग्ररोड़ा
५४	विजय कुमार शर्मा	८९	सुरेश कुमार दीवान
५५	विजय कुमार सहगल	९०	सुशील कुमार
५६	विजय पाल सिंह	९१	सुशील कुमार चौहान
५७	विजेन्द्र सिंह यादव (पिछ०जा०)	९२	सुशील कुमार त्यागी
५८	विनय मोहन चन्दोला	९३	सूर्यनाथ (परि०जा०)
५९	विनोद कुमार	९४	सोमदत्त मिश्र
६०	विनोद कुमार कालड़ा	९५	सोहन लाल कड़वाल
६१	विनोद कुमार गुप्ता	९६	सुरेन्द्र कुमार शर्मा
६२	विनोद कुमार गुप्ता	९७	हरिश चन्द्र पाठक
६३	विनोद कुमार पारिख	९८	हेमेन्द्र सिंह सिरोही
६४	विनोद कुमार शर्मा	९९	त्रिभुवन कुमार गर्ग
६५	वीरेन्द्र कुमार चौहान	५३८००	त्रिलोचन सिंह
६६	वेद प्रकाश वर्मा	८०१	कु० ग्रनिता
६७	श्याम सुन्दर	८०२	,, ग्राभा वर्मा
६८	श्याम सुन्दर लाल चदवानी	८०३	,, ईना मल्होत्रा
६९	शम्भू नारायण सिंह	८०४	,, कमल सती सूरी
७०	शशि कुमार शर्मा	८०५	,, कृष्णा ग्राचार्य
७१	शिव कुमार शर्मा	८०६	,, कृष्णा सरकार
७२	शिव प्रसाद वशिष्ठ	८०७	,, कचनलता
७३	शिव शंकर	८०८	,, गगन
७४	श्री कृष्ण शर्मा	८०९	,, तारा पन्त
७५	सत्यदेव सिंह नेगी	१०	,, तेज प्रभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोल नम्बर	नाम
५३८११	कु० दीपा पन्त
१२	,, प्रमिला शर्मा
१३	,, बीना पाण्डेय
१४	,, बीना भारद्वाज
१५	,, बीना रानी
१६	,, मधु बाला गर्ग
१७	,, मंजु मेहता
१८	,, मीरा पाण्डे
२९	,, रीता अग्रवाल
२०	,, विजय लक्ष्मी व्यास
२१	,, बैजन्ती माला
२२	,, शकुन्तला वर्मा
२३	,, शशि बाला
२४	,, स्वर्ण कान्ता शर्मा
२५	,, सन्तोष कुमारी
२६	,, सरिता गौतम
२७	,, सरिता सूद
२८	,, सावित्री शर्मा
२९	,, सुदेश बाला
३०	,, सुरेन्द्र कौर
३१	,, सुलोचना कुमारी अरोड़ा
३२	,, दीपा पन्त
३३	अजय कुमार ओहरी
३४	अरविन्द कुमार गोयल
३५	अशोक कुमार
३६	अशोक कुमार अग्रवाल
३७	अशोक कुमार केशवानी
३८	अशोक कुमार कोहली
३९	आनन्द मोहन डबराल
४०	कमल कान्त शर्मा
५३८४१	किशोर कुमार कपूर
४२	गोपाल दास
४३	चन्द्र मोहन मेहता
४४	जितेन्द्र कुमार मेहता
४५	तुलसीदास मतानी
४६	नागेन्द्र ओबराय
४७	प्रदीप नागर
४८	बाल किशन बंसल
४९	बालकृष्ण
५०	विजेन्द्र पालसिंह
५१	बन्शी धर
५२	मदन लाल
५३	मदन सिंह ठाकुर
५४	महेश कुमार कबड़ाल
५५	महेश चन्द
५६	रविन्द्र कुमार
५७	राकेश कुमार गर्ग
५८	राज कुमार
५९	राधे श्याम जैसिंह
६०	राम नरेश शर्मा
६१	विरेन्द्र कुमार
६२	विश्व मोहन शर्मा
६३	विष्णु दत्त भारद्वाज
६४	श्याम लाल अरोड़ा
६५	श्री मोहन शर्मा
६६	सतीश कुमार गुप्ता
६७	सुनील कुमार
६८	सुरेन्द्र नाथ शर्मा
६९	सुशील कुमार गुप्ता
७०	सूरज प्रकाश आनन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाई स्कूल अनुक्रमांक सूची, १९७१-७२

अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी
१२५८१४	अनिल कुमार
१५	अशोक कुमार शर्मा
१६	ईश्वर दयाल
१७	ओम प्रकाश
१८	कृष्ण कुमार दुग्गल
१९	दाताराम
२०	दिवाकर प्रसाद
२१	देवदत्त आर्य
२२	प्रकाश चन्द्र डंडरियाल
२३	प्रदीप कुमार जोशी
२४	भोला सिंह रावत
२५	विक्रम चन्द्र छाछर
२६	विनोद कुमार वर्मा
२७	विश्वबन्धु शर्मा
२८	शरद कुमार शर्मा
२९	श्रवण कुमार गुप्ता
३०	शिव कुमार ध्यानी
३१	सतीश कुमार शर्मा
३२	मोहन लाल साहू
३३	हरीश्चन्द्र जोशी
३४	हरीश कुमार अरोड़ा
३५	कु० ऊषा राजपूत
३६	,, कल्पना डबराल
३७	,, कुमद सिंघल
३८	,, गायत्री तोमर
३९	,, बासन्ती देवी
४०	,, रमा रानी शर्मा
४१	,, रूमा रानी
४२	,, कुमारी सुनीता
४३	,, सुमन शर्मा

अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी
१२९४०६	अजय कपूर
४०७	अनिल कुमार
४०८	अनिल कुमार अग्रवाल
४०९	अनिल कुमार गर्ग
१०	अनिल कुमार गुप्ता
११	अनूप कुमार वर्मा
१२	अरविन्द कुमार
१३	अरुण कुमार
१४	अरुण कुमार अहलूवालिया
१५	अरुण कुमार शर्मा
१६	अविनाश चन्द्र भल्ला
१७	अशोक कुमार
१८	अशोक कुमार गर्ग
१९	अशोक कुमार चक्रपाणी
२०	अशोक कुमार चतुर्वेदी
२१	अशोक कुमार राजपूत
२२	इन्द्र जीत
२३	इन्द्र जीत सिंह
२४	उदय किशोर
२५	उदय सिंह राणा
२६	उमानाथ मिश्रा
२७	उमेश चन्द्र
२८	ओम दत्त शर्मा
२९	ओम प्रकाश अरोड़ा
३०	कमलेश कुमार
३१	कुश कुमार गुप्ता
३२	कृष्ण कुमार ओबेराय
३३	कृष्ण कुमार शुक्ला
३४	गंगा प्रसाद बड़ोला
३५	गंगा शरण शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी	अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी
१२६४३६	गुरुदीप सिंह कोहली	१२६४७१	राकेश कुमार गुप्ता
३७	घनश्याम	७२	राकेश कुमार जैन
३८	चन्द्र किशोर	७३	राज कुमार कश्यप
३९	जितेन्द्र कुमार विद्याकुल	७४	राजेन्द्र प्रसाद
४०	जितेन्द्र कुमार शर्मा	७५	राजेश कुमार सिन्हा
४१	तेजसिंह तड़ियाल	७६	राधेश्याम
४२	दिनेश कुमार बहुगुण	७७	रामचन्द्र गुप्ता
४३	दिलीप कुमार सिंह	७८	रामेश्वर प्रसाद
४४	दीपक कुमार कपूर	७९	ललित कुमार शर्मा
४५	देवीदत्त नागर	८०	लालूराम
४६	दौलत सिंह	८१	विजय कुमार आहूजा
४७	धर्मवीर सिंह रवि	८२	विजय कुमार शर्मा
४८	धीरेन दत्ता	८३	विजय कुमार हंस
४९	धीरेन्द्र सिंह नेगी	८४	विजय नारायण त्यागी
५०	नरेश कुमार गिरी	८५	विनय कुमार चौहान
५१	नरेश कुमार लाहौरी	८६	विनीत कुमार शर्मा
५२	नरेश चन्द्र शर्मा	८७	विनोद कुमार खन्ना
५३	नवीन कुमार	८८	विनोद कुमार जोशी
५४	नीरज कुमारी सिंघल	८९	विनोद कुमार शर्मा
५५	नन्द कुमार	९०	विनोद कुमार शर्मा
५६	पवन कुमार	९१	विनोद सागर कौशिक
५७	पवन कुमार वर्मा	९२	विनोद कुमार तिवारी
५८	प्रदीप कुमार मल्होत्रा	९३	वीरेन्द्र कुमार पंवार
५९	प्रदीप पालीवाल	९४	वेद प्रकाश
६०	प्रीतम सिंह धीमान्	९५	श्याम सुन्दर
६१	प्रमचन्द पान्डे	९६	श्याम सुन्दर अग्रवाल
६२	बाबू राम	९७	श्याम सुन्दर चौहान
६३	भगवान सिंह नेगी	९८	श्याम कुमार शुक्ला
६४	मदन मोहन अरोड़ा	९९	शूरवीर सिंह घजल
६५	महेन्द्र कुमार अरोड़ा	५००	सत्य प्रकाश शर्मा
६६	मुकेश कुमार	५०१	सतीश कुमार
६७	मूल चन्द	५०२	सुधीर कुमार कद
६८	योगेन्द्र कुमार गौड़	५०३	सुनील कुमार केहरा
६९	रमेश चन्द्र मैठाणी	५०४	सुनील कुमार अग्रवाल
७०	रवि प्रकाश गुप्ता	५०५	सुनील कुमार गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113420

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमांक	नाम परीक्षार्थी
१२६५०६	सुनील कुमार शर्मा
५०७	सुधीर कुमार पन्त
५०८	सुभाष चन्द्र अग्रवाल
५०६	सुरेन्द्र कुमार
१०	सुरेन्द्र कुमार शर्मा
११	सुरेश कुमार अग्रवाल
१२	सुरेश कुमार बंसल
१३	सुरेश दत्त
१४	सूरज प्रकाश अग्रवाल
१५	सजय कुमार खन्ना
१६	हरजिन्दर सिंह सोखी
१७	हरजीत कुमार
१८	हरमोहन सिंह तनेजा
१६	हरीग्रोम गुप्ता
२०	हरिश्चन्द्र जोशी
२१	हरिश्चन्द्र बन्सल
२२	हरिशंकर
२३	हरिश्चन्द्र भागवानी
२४	हरेन्द्र कुमार तिवारी
२५	हिरदेश कुमार
२६	हेमन्त कुमार पन्त
२७	कु० रश्मि अग्रवाल
२८	कु० स्नेह गुप्ता
२६	अजय कुमार वर्मा
३०	अनिल कुमार
३१	अनिल कुमार खुराना
३२	अनिल कुमार छाबड़ा
३३	अवधेश कुमार दीक्षित
३४	अशोक कुमार
३५	अशोक कुमार गुप्ता
३६	अशोक कुमार शर्मा
३७	अशोक कुमार शर्मा
३८	अशोक कुमार सहगल
३६	अशोक कुमार सिंह
४०	आनन्द सिंह

अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी
१२६५४१	कन्हैया लाल अग्रवाल
४२	कमल कुमार रावल
४३	कश्मीरी लाल
४४	किशोर कुमार गुप्ता
४५	कैलाश चन्द्र अग्रवाल
४६	गम्भीर सिंह
४७	गोपाल सिंघल
४८	गौरी शंकर
४६	घन श्याम
५०	चन्द्र शेखर मित्तल
५१	देवेन्द्र कुमार
५२	देवेन्द्र सिंह चौहान
५३	नन्द किशोर
५४	नरेन्द्र कुमार अग्रवाल
५५	नरेश कुमार
५६	नरेश कुमार गुगनानी
५७	नरेश कुमार दीवान
५८	नवीन कुमार सिंघल
५६	निरंकार थरेजा
६०	निर्दोष कुमार तोमर
६१	प्रदीप कुमार त्यागी
६२	प्रमोद कुमार जैन
६३	प्रवीन कुमार
६४	प्रवीन कुमार अग्रवाल
६५	पुरुषोतम कुमार गुप्ता
६६	प्रेमचन्द
६७	विशन स्वरूप शर्मा
६८	बृज मोहन जिंदल
६६	भगवत प्रसाद शर्मा
७०	मदन गोपाल भाटिया
७१	मदन मोहन
७२	रमेश कुमार
७३	राम नरेश शर्मा
७४	लक्ष्मी नारायण मेहता
७५	लाल बिहारी अग्रवाल
७६	विनोद कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी
१२६५७७	विनोद कुमार बडथवाल
७८	विनोद कुमार शर्मा
७९	विजय कान्त गौतम
८०	वीरेन्द्र कुमार यादव
८१	शशिकान्त शर्मा
८२	शिव कुमार अरोड़ा
८३	शिव कुमार गुलाटी
८४	शिव कुमारी नगरानी
८५	शिवनन्दन कुमार
८६	शिव कुमार शर्मा
८७	श्याम कुमार गुप्ता
८८	सत्य प्रकाश शर्मा
८९	सत्येन्द्रपाल सिंह
९०	सचीन्द्र कुमार
९१	सुनील कुमार भसीन
९२	सुभाष चन्द्र अग्रवाल
९३	सुभाष चन्द्र शर्मा
९४	सुमन कुमार मल्होत्रा
९५	सुरेश कुमार

अनुक्रमांक	नाम परीक्षार्थी
१२६५९६	सुशील कुमार गुप्ता
९७	हेमन्त कुमार
९८	त्रिलोचन सिंह
९९	दयाराम
१२६६००	वीरेन्द्र सिंह रघुवंशी
६०१	बृजपाल सिंह
६०२	मनमोहन लाल चोपड़ा
६०३	शशीकान्त रोहला
६०४	शिव ओम गुप्ता
६०५	सुरेन्द्र सिंह
६०६	कु० अनारकली
६०७	„ अमर जीतकौर
६०८	„ उर्मिला कुमारी
६०९	„ ऊषा रानी
१०	„ प्रेमलता शर्मा
११	„ मिथिलेश
१२	„ शशिबाला
१३	„ शशिबाला विष्ट
१४	अनिल कुमार

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार 113410

धर्म साधना जीवन के अमृत-स्रोत के उद्भव का कारण है, और कला-साधना जीवन के इसी उत्कर्ष की प्रधान सहायक। —कलाविद

धर्म तथा कला से सत्य शोधन होता है। प्रभाव की दृष्टि से कला धर्म से एक पग आगे है। किन्तु धर्म में जो गम्भीरता है, वह कला में नहीं और जो व्यापकता कला में है वह धर्म में नहीं। —अज्ञात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष की साँस्कृतिक एकता

कृष्णकुमार साहनी, कक्षा ११ बी२

भारत एक विशाल उपमहाद्वीप है, इस कारण प्राकृतिक रूप से इसमें विविधता है। उत्तर में हिमालय के उच्च शिखर, दक्षिण में हिमगिरि के शिखरों से होड़ लेने वाली सागर की उत्तल तरंगें, मध्य में नदियों के विशाल उपजाऊ क्षेत्र और घने बन। एक ओर आसाम के सदाबहार बन दूसरी ओर पश्चिम में राजस्थान के शुष्क मरुस्थल हैं। प्राकृतिक रूप की भांति रीति-रिवाज रहन-सहन और भाषायी दृष्टि से भी यह देश विभिन्नता से परिपूर्ण है।

भाषा एवं प्रकृति के समान ही इस देश के लोगों का भोजन, इनकी वेशभूषा भी अलग-अलग हैं। पश्चिम के लोग गेहूँ और मोटे अनाज अधिक खाते हैं। पूर्व व दक्षिण के लोग चावल पर अधिक निर्भर हैं। उत्तर के लोग दोनों का समान उपयोग करते हैं। एक ओर लम्बे कुर्ते व सलवार वाले लोग हैं तो दूसरी ओर धोती व कुर्ते का पहनावा प्रचलित है।

जाति वर्ण व धर्म की दृष्टि से भी भारत में अनेकता दिखाई देती है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी आदि विभिन्न जातियां तथा फिर इनकी उपजातियां हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इस प्रकार विभिन्न वर्ण हैं। यहां तक कि उपासना के मार्ग भी भिन्न-भिन्न हैं। कोई आस्तिक है कोई नास्तिक, कोई वैष्णव है तो कोई शैव तथा कोई शाक्त हैं। इस प्रकार बाह्य दृष्टि से यह देश अलग-२ सा प्रतीत होता है। किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से सब एक ही है

जिस प्रकार एक विशाल सागर में अनन्त प्र जीव निवास करते हैं किन्तु सब ही के लिये जल का महत्व है। इसी प्रकार इस देश वाले एकता के सूत्र प्रकार बंधे हुये हैं जैसे कि बिखरे हुए मोती, एक पिरोने पर, एक माला बन जाते हैं। इसका कारण कि इस देश में धार्मिक मतभेदों के होते हुये भी तथा हठ की भावना नहीं है। सब लोग अपनी-अपनी दाओं का पालन करते हैं। सबने अपने धर्मानुसार अ नियमों का निर्माण कर रखा है। उनका पालन सभी अपना धर्म समझते हैं। इनके अलावा कुछ क्षेत्र हैं जो इस देश को सांस्कृतिक रूप से एक व बड़े महत्वपूर्ण हैं।

उत्तर भारत के निवासी दक्षिण के तीर्थों की करने जाते हैं और दक्षिणवासी उत्तर के तीर्थों की धामों का निर्माण इसी भावना को लेकर किया ग इनमें भारत के उस महातपस्वी जिसकी दृष्टि में के सब धर्मों का कोलाहल एक परिवार के शिशु कोलाहल था उस आदि-जगद्गुरू शङ्कराचार्य का महत्वपूर्ण स्थान है जिसने अपनी ३२ वर्ष की अल्पायु समस्त भारत का पैदल भ्रमण करके भारत के घर- एकता का संचार कर सबको एक सूत्र में बांधा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा कालिज— इसका भव्य स्वरूप

ीज किसे अच्छी नहीं लगती ? और यह कालिज तो प्रान्तभर में कीर्ति है।

नगर पालिका नगर में उच्च शिक्षा ो तीन संस्थायें चलाती है। पी० बी० कालिज, श्री आनन्दमयी सेवासदन ा और म्युनिसिपल हायर से० स्कूल, श्री आनन्दमयी सेवा-सदन तो महिला

ालाल भला म्यु० इन्टर कालिज का ३७ में म्यु० माध्यमिक विद्यालय के था उत्तरोत्तर उन्नति करते हुये सन् नियर हाई स्कूल, सन् १९३४ में हाई ९४५ में इन्टर मीडियेट कालिज के हुंचा। सन १९४५ में ही दानवीर पन्नालाल जी भल्ला द्वारा ८६,००० रु. हायता से कालिज के नवीन भवन का । नगर पालिका ने श्री भल्ला जी के प्रकट करते हुये विद्यालय का नाम भल्ला म्यु० इन्टर कालिज' रखा। पुराने और नवीन भवनों के अतिरिक्त ज्ञान प्रयोगशाला और एन०सी०सी० हैं। २ अक्तूबर १९७१ को, वर्तमान पारस कुमार जी जैन की प्रेरणा पर ठ, दानवीर श्री मेघराज लाल चन्द जी ल्ला कालिज के प्रांगण में ही लगभग की एक नवीन शिक्षा शाला तथा एक विशाल साइकिल स्टैन्ड का निर्माण करा रहे हैं। विद्यालय में अभी ५० कक्षायें हैं, जिनमें १३२६ छात्र, छात्राओं की शिक्षा चलती है। यहाँ के अध्यापक-परिवार में ६२ सदस्य हैं। विद्यालय में एक बृहद् पुस्तकालय है, जहाँ लगभग १४,९३७ पुस्तकें संग्रहीत है। विद्यालय में साहित्यक तथा वैज्ञानिक वर्ग के अतिरिक्त एक विस्तृत कृषि-फार्म भी है। विद्यालय की विभिन्न टीमें न केवल जन-पद या मण्डल में ही, वरन् प्रान्तीय स्तर तक ख्याति अर्जित कर चुकी हैं। छात्र, छात्रायें न केवल वाद-विवाद-प्रतियोगिताओं में ही वरन् संगीत भी संस्था का नाम उज्ज्वल किया है। एन०सी०सी० ने अपने कार्य से सदा ही संस्था का नाम उज्ज्वल किया है। यदि संस्था के महत्त्व को आंक कर, इसे समुचित छत्र-छाया एवम् मार्ग-दर्शन प्राप्त हो तो हरिद्वार जैसे तीर्थ स्थल की महिमा में चार चांद लग जायें।

इस संस्था के प्रांगण को डा० राजेन्द्र प्रसाद पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० गोविन्द बल्लभ पन्त, श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री के० एम० मुन्शी, डा० सम्पूर्णानन्द, श्री यशवंत राव चह्वाण, श्री जगजीवनराम, श्रीमती सुचेता कृपलानी, श्री गोपाल रेड्डी, चौ० चरण सिंह, श्रीमती इंदिरा-गांधी आदि राज्य नेताओं तथा विनोबा भावे जैसे सन्तों के स्वागत का सुअवसर उपलब्ध हो चुका है। अपने संयुक्त प्रयत्नों से इसके गौरव को अधि-काधिक समुज्ज्वल करें, ऐसा संकल्प लें।

संस्था के प्रधानाचार्यों की शृंखला

ेश्वर दयाल निगम	(१९३०-३३)	६. श्री राम बिहारी लाल जौहरी	(१९५७-६५)
ारी लाल अथइय्या	(१९३४-३७)	७. श्री सोहन लाल गुप्ता	(१९६५-६६)
्वर दयाल निगम	(१९३८-४४)	८. श्री दामोदर पंत	(नव.६६-फरवरी ७०)
ोहन मुकर्जी	(१९४५-४७)	९. श्री गजराज सिंह श्रावत (फर. ७० दिस. ७०)	
्वर दयाल निगम	(१९४८-५७)	१०. श्री सोहनलाल गुप्ता	(दिसम्बर ७१—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्धगीत

उत्तिष्ठत संनह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह
सर्पा इतर जना रक्षांस्यमित्राननु धावत ॥
अथर्व १०-१०-१

—उठो, कमर कस लो, राष्ट्रध्वज उठाकर आगे बढ़ो। जो साँप जैसे नृशंस और राक्षसी वृत्ति वाले शत्रु हैं, उन पर आक्रमण कर दो।

सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे रुजन् मृणन्
प्रमृणन् प्रेहि शत्रून्। उग्रं ते पाजो नन्वा
रुरुध्रे वशी वशं नयस एकज त्वम् ॥
ऋक् १०-८४-३

—उठो वीरो! गर्वीले शत्रु का दर्प चूर्ण कर दो। उसकी रक्षा-पंक्ति को मसलते-कुचलते हुए आगे बढ़ जाओ। तुम्हारे प्रचंड वेग को शत्रु सर्वथा नहीं रोक सकेगा। तुम अकेले ही उसे जीत लोगे।

मुद्रक—अग्रवाल प्रिंटिंग प्रेस (फोन नं० ३७) ज्वालापुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar